स्थापित-1906

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

दिसम्बर 2024, पृष्ठः 52, मूल्यः 6:00 रुपये

हमने विगत तीन वर्षों में जो किया... और आगे हम क्या-क्या करेंगे!

हमारा ऐजेंडा

- स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा से जुड़े पूज्य साधु-साध्वी जी म. की सुखद संयम यात्रा में वैय्यावच्च के अन्तर्गत एक विशाल फंड का संग्रह करके उसके इंटरेस्ट से स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वाध्याय, संयम सहायक उपकरण, सहायक सेवकों का मानदेय नियमित, निरंतर देते रहना, आस्था भक्ति से सहयोग करना।
- अभावग्रस्त साधर्मी भाई-बहनों को जीवन यापन हेतु निरंतर सहायता देना, युवकों को रोजगार से जोड़ने में सहायता करना। सरकार द्वारा प्रदत्त योजनाओं के लाभ और समाजसेवी दानदाताओं के सहयोग से समाज के लोगों की सहायता करना।
- आचार्य भगवन् के अनुपम मार्गदर्शन में ध्यानयोग का घर-घर प्रचार करना, शिविर लगवाने में सहायता करना। स्वाध्याय की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना, विद्वान स्वाध्यायी भाई बहनों को सहायता देना।
- भगवान महावीर जन्म कल्याणक, निर्वाण एवं लोकाशाह जयंती एवं अन्य पर्व समारोह को अखिल भारतीय स्तर पर मनाने की योजना बनाना।
- तप-तपस्वी साधकों का यथोचित सम्मान कर समाज में तप-साधना की प्रतिष्ठा करना। विद्वानों को सम्मान, प्रोत्साहन एवं सहायता।
- एक लाख तक आजीवन सदस्य संख्या बढ़ाकर हर क्षेत्र के प्रतिभावान युवाओं, समाजसेवी सदस्यों को जैन कॉन्फ्रेंस से जोड़ना।
- जैन समाज के योग्य बच्चों के वैवाहिक रिश्तों की पड़ताल कर संयोग प्रकोष्ठ के माध्यम से सामूहिक विवाह आयोजनों को प्रोत्साहित करना।

आपका साथ, आपका सहयोग, आपका स्नेह सदैव बना रहें।

Advt.

जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का मासिक मुखपत्र

श्रमण संघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः ।
स्थानकवासीजैनानां कॉन्फ्रेंसनामा विश्रुता, समाजोत्थान कार्येषु संस्थेयमस्तितत्परा ।।

वर्ष - 68 | अंक - 12 | दिसम्बर - 2024 | मूल्य एक प्रति 6 रुपये

सम्पादक
अतुल जैन, दिल्ली

सम्पादक मण्डल

संजय बाफना जैन, अहमदनगर
83298 28560

एन. गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई
93826 36363

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
जैन भवन
12, शहीद भगतसिंह मार्ग,
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001
011-23363729, 23365420
+91 90197 31906
E-mail : aissjc1906@gmail.com
Website : www.jainconference.org

CANARA BANK
AC. NO. : 0270101137342
IFS CODE : CNRB0000270
BRANCH : GOLE MARKET

अध्यक्षीय	- श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष	09-10
राष्ट्रीय चुनाव समिति 2025-27 की सूची एवं चुनाव संबंधित सूचना		11-12
संकल्प से सिद्धि	- आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.	13
बिईओ उद्देसओ : द्वितीय...	- युवाचार्य पू. श्री मधुकरमुनिजी म.सा.	14
जैन श्रमण संघ	- उपाध्याय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.	15-16
आचार्य श्री एकलिंगदासजी	- स्थानकवासी जैन शासन की दिव्य विभूति	17-19
तत्त्वार्थ सूत्र	- प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.	20-21
लेन-देन में सुचिता	- पूज्य डॉ. श्री सुरेन्द्रमुनिजी म.सा.	22-23
शुद्धाचार एवं शालीनता...	- पू. श्री प्रबुद्धमुनिजी म.सा.	24
साधक को भी भीड़...	- पू. डॉ. श्री समकितमुनिजी म.सा.	25
कहना नहीं सहना सीखों	- पू. साध्वी युगल निधि-कृपाजी म.सा.	26-27
अनेकांत दर्शनप्रिय...	- श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर	29
सुपात्र दान से ही...	- श्री सुधीर जैन, अहमदनगर	30
जैन होने का अर्थ...	- डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर	31
सामाजिक एकता समाज...	- श्री हुकमचंद जैन 'मेघ', दिल्ली	32
युवा शक्ति ही रचेगी...	- श्री गौतमचंद दुग्गड़ जैन, चेन्नई	33
जैन कॉन्फ्रेंस में एकता प्रयासों की सफलता पर वरिष्ठ समाजसेवियों की अनुमोदनाएं...		34-37
सामाजिक जवाबदेही है स्मरण कराना		38-47
अल्पसंख्यक योजना द्वारा किये गये कार्यों की रिपोर्ट		47
समाचार प्रकाश		48-50
शोक समाचार		50

अस्वीकरण : समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।

श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युगप्रधान, ध्यानयोगी,
आचार्य सम्राट् परम पूज्य

श्री शिवमुनिजी म. सा.

आगमज्ञाता प्रज्ञामहर्षि युवाचार्य परम पूज्य

श्री महेन्द्रऋषिजी म. सा.

:: उपाध्याय मण्डल ::

परम श्रद्धेय डॉ. श्री विशालमुनिजी म. सा. 'वाचनाचार्य'
परम श्रद्धेय श्री रमेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री जितेन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रवीणऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय डॉ. श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम'

:: प्रवर्तक मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री कुन्दनऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री प्रकाशमुनिजी म. सा. 'निर्भय'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राजेन्द्रमुनिजी म. सा
परम श्रद्धेय श्री सुकनमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विजयमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म. सा.

:: मंत्री मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री शिरीषमुनिजी म. सा. (प्रमुख मंत्री)
परम श्रद्धेय श्री कमलमुनिजी म. सा. 'कमलेश',
(संघ-नीति एवं जनसम्पर्क)

:: सलाहकार मण्डल ::

परम श्रद्धेय श्री सुरेशमुनिजी म. सा. 'शास्त्री'
परम श्रद्धेय श्री तारकऋषिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री रमणीकमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री दिनेशमुनिजी म. सा.
परम श्रद्धेय श्री विनयमुनिजी म. सा. 'भीम'
परम श्रद्धेय डॉ. श्री राममुनिजी म. सा. 'निर्भय'

:: प्रवर्तिनी मण्डल ::

परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री चंदनाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सुधाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री सुप्रभाजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती श्री सरिताजी म. सा.
परम श्रद्धेया महासती डॉ. श्री प्रतिभाकंवरजी म. सा.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली विश्वस्त मण्डल

01.	श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पूना - चेयरमैन	98505 00015	07.	श्री संजीव जैन, लुधियाना	98140 25325
02.	श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई	98410 30035	08.	श्री कंवरलाल सूरिया जैन, भीलवाड़ा	94141 13056
03.	श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई	98841 67400	09.	श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर	92264 72284
04.	श्री प्रकाश बुरड़ जैन, बैंगलोर	98456 71449	10.	श्री सुनील बाफना जैन, घोड़नदी	98505 67010
05.	श्री अतुल जैन, नई दिल्ली	98110 75336	11.	श्री अशोक मेहता जैन, सूरत	98251 19082
06.	श्री जसवंत जैन, नई दिल्ली	98104 35108	12.	श्री जयंतिलाल कूकड़ा जैन, सूरत	98251 35744

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली
सम्माननीय पदाधिकारीगण - कार्यकाल वर्ष : 2021-24

राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन, चेन्नई 98410 30035

राष्ट्रीय चेयरमैन

श्री सुभाष ओसवाल जैन, दिल्ली 98100 45440

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री पारसमल मोदी जैन, मुंबई 98200 60530

राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष

श्री अशोककुमार मेहता जैन, सूरत 98251 19082

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष

श्री जे. डी. जैन, गाज़ियाबाद 98100 06462
श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन, पाली 98290 25729
श्री अविनाश चोरड़िया जैन, नई दिल्ली 93138 13899
पद्मश्री श्री नेमनाथ जैन, इंदौर 98930 32777
श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नाशिक 94239 62818

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

श्री प्रकाश धारीवाल जैन, घोड़नदी, पुणे 98222 42795
श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली 98111 97000
श्री रमेश भंडारी जैन, इंदौर 93021 03817
श्री अशोक बाबूसेठ बोरा जैन, अहमदनगर 92264 72284
श्री सुरेशचंद छल्लाणी जैन, बैंगलोर 93412 32573

राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष

श्री दिनेशकुमार भलगट जैन, चेन्नई 98402 64888

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

श्री पन्नालाल कोठारी जैन, बैंगलोर 98440 11908
श्री एम. गौतमचंद गुगलिया जैन, सिकंदराबाद 92463 61008
श्री सुरेशकुमार लुनावत जैन, चेन्नई 98842 21003
श्री सज्जनराज मेहता जैन, चेन्नई 94440 66089
श्री संजीव जैन, लुधियाना 98140 25325
श्री संदीप कुमार जैन, सिरसा, हरियाणा 92157 37705
श्री मनमोहन जैन, मुजफ्फरनगर 98370 67082
श्री प्रशांत जैन, नई दिल्ली 98101 21450
श्री विपिन आनंदप्रकाश जैन, दिल्ली 99113 00888
श्री डिपिन जैन, इंदौर 78699 99222
श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली 98113 58110
श्री सुरेश कुमार जैन, दिल्ली 98112 39872
श्री गुमानसिंह पीपारा जैन, कोलकाता 98300 30774
श्री राजेन्द्र नथमल मुथा जैन, जालना 70206 36161
श्री शशिकुमार 'पिंटू' कर्नावट जैन, मालेगांव 98239 55515
श्री बालासाहेब धोका जैन, पुणे 98220 39728
श्री किशोर खाबिया जैन, मुंबई 98200 48618
श्री कांतिलाल बोथरा जैन, शिरूर-घोड़नदी 87882 35525
श्री रमेश कुमार पुनमिया जैन, पालघर 94030 09639
श्री शंभूलाल ललवाणी जैन, अहमदाबाद 99783 47800

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अतुल जैन, नई दिल्ली 98110 75336

राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

श्री पदमचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98841 67400

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष

श्री जसवन्त जैन, नई दिल्ली 98104 35108

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री रमनलाल लुंकड़ जैन, पुणे 98505 00015
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चन्द्रशेखर लुंकड़ जैन, पुणे 98903 01635

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेश मुथा जैन, बैंगलोर 93428 63447
राष्ट्रीय मंत्री : श्री ज्ञानचंद लोढ़ा जैन, बैंगलोर 98452 21302

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद कोठारी जैन, सूरत 70161 20162
राष्ट्रीय मंत्री : श्री चतरलाल लोढ़ा जैन, मुंबई 98201 11839

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री संजय बाफना जैन, अहमदनगर 83298 28560
राष्ट्रीय मंत्री : श्री किशोरकुमार दलाल जैन, बैंगलोर 94480 81348

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय चेयरमैन : श्री अशोक रांका जैन, बैंगलोर 99455 41200
राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री जे. रतनचंद सिंघवी जैन, बैंगलोर 93425 97955
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनोहरलाल लोढ़ा जैन, मावली सिंधु 98220 31788

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओस्तवाल जैन, ब्यावर 98280 54770
राष्ट्रीय मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़ जैन, ब्यावर 92149 63701

विहारधाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा जैन, कोल्हार भगवती 98606 67000
राष्ट्रीय मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले जैन, घोड़नदी (शिरूर) 98224 47166

राष्ट्रीय मंत्री

श्री कन्हैयालाल सुराणा जैन, बैंगलोर 93412 21774
श्री महेन्द्र कुमार मुणोत जैन, बैंगलोर 98450 73276
श्री संपतराज कोठारी जैन, सिकंदराबाद 92461 58452
श्री धर्मीचंद कांकरिया जैन, चेन्नई 98410 59884
श्री राजेन्द्रकुमार बोहरा जैन, चेन्नई 98406 00003
श्री मुकेश कुमार जैन 'सांड', मोहाली 93185 93599
श्री राकेश जैन 'लक्की', लुधियाना 98150 20661
श्री सुभाष जैन 'लिली', मुक्तसर 98146 99393
श्री रविंदर जैन, पानीपत 98960 92861
श्री पुष्कर जैन, मेरठ 94122 06374
श्री रमेश जैन 'शामड़ी', दिल्ली 93509 16150

राष्ट्रीय मंत्री :

श्री रामनिवास जैन, दिल्ली	98112 95715
श्री अंबालाल लोढ़ा जैन, नाथद्वारा	95295 40800
श्री सुधीर जैन, कोटा	94141 79700
श्री जिनेश्वर जैन, इंदौर	99818 50900
श्री वीरप्रकाश जैन, कोलकाता	93310 35450
श्री जीवनराज पुनमिया जैन, इचलकरंजी	92258 31765
श्री सुरेश गुंदेचा जैन, रत्नागिरी	98817 41101
श्री बंसीलाल सूर्या जैन, सूरत	93280 97429
श्री प्यारचन्द कोठारी जैन, सूरत	93745 35686

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री :

एडवोकेट श्री दिलीप खिंवसरा जैन, औरंगाबाद	94222 05434

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री गौतमचंद धारीवाल जैन, बैंगलोर	98451 49443
श्री रजनीश जैन 'राज', दिल्ली	98116 14567
श्री दीपक सूर्या जैन, भीलवाड़ा	98293 47007
श्री आनंद सुराणा जैन, जालना	94222 18747
श्री गणेश ओसवाल जैन, पुणे	99218 79613

राष्ट्रीय संगठन मंत्री :

श्री राजन जैन, लुधियाना	98140 77445
श्री दिनेश सुराणा जैन, दिल्ली	93100 54428
श्री मदनलाल जैन 'शामड़ी', दिल्ली	98737 76896
श्री कांतिलाल जैन, उदयपुर	93220 90220
श्री प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद	73877 86999

:: प्रांतीय अध्यक्ष ::

श्री पुखराज मेहता जैन (कर्नाटक - ज़ोन 1)	98446 77725
श्री सुरेन्द्र कुमार कटारिया जैन (तेलंगाना - ज़ोन 1)	98480 38094
श्री गौतमचंद कटारिया जैन (तमिलनाडु - ज़ोन 1)	96770 43212
श्री अरुण जैन (पंजाब - ज़ोन 2)	98155 66885
श्री विनय कुमार जैन (हरियाणा - ज़ोन 2)	83968 00000
श्री अमितराय जैन (उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड - ज़ोन 2)	98373 94448
श्री जितेन्द्र जैन (दिल्ली - ज़ोन 2)	98100 62967
श्री निर्मल पोखरना जैन (राजस्थान - ज़ोन 3)	94141 67544
श्री ललित कुमार छल्लाणी जैन (मध्य प्रदेश - ज़ोन 3)	98260 27927
डॉ. आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल - ज़ोन 3)	98302 49151
श्री मदनलाल कुंदनमल लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र-ज़ोन 4)	98223 76898
श्री सुनील बाफना जैन (मुंबई-पुणे - ज़ोन 5)	98505 67010
श्री जयंतिलाल कुकड़ा जैन (गुजरात - ज़ोन 5)	98251 35744

:: प्रांतीय महामंत्री ::

श्री सुरेंद्रकुमार आंचलिया जैन (कर्नाटक)	98861 86528
श्री राजेश भंडारी जैन (तेलंगाना)	79871 61614
श्री एम. राजेशकुमार रांका जैन (तमिलनाडु)	99949 16455
श्री पंकज जैन (पंजाब)	98150 00791
श्री अजय जैन (हरियाणा)	94161 22219
श्री भास्कर जैन (उत्तर प्रदेश)	98972 33877
श्री संजय जैन (दिल्ली)	99900 22221
श्री शांतिलाल मारु जैन (राजस्थान)	94141 48875
श्री संतोष धारीवाल जैन (मध्य प्रदेश)	98060 44110
श्री राजेश कुमार भुरट जैन (पश्चिम बंगाल)	93310 09391
श्री संतोष चोरड़िया जैन (महाराष्ट्र)	99225 44744
श्री नेमीचंद सोलंकी जैन (मुंबई-पुणे)	93710 89896
श्री आकाशकुमार मादरेचा जैन (गुजरात)	94287 45537

-: आवश्यक सूचना :-

श्री ऑल इंडिया श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के समस्त राष्ट्रीय पदाधिकारी, समस्त योजना अध्यक्ष एवं मंत्रीजी, राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री, समस्त प्रांतीय अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय महिला अध्यक्ष एवं महामंत्री, प्रांतीय युवा अध्यक्ष एवं महामंत्री आदि से नम्र निवेदन है कि जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ गतिविधियों के जो भी समाचार हों, वे आपके द्वारा अथवा आपके अधिकृत पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक महीने की 30 तारीख तक समस्त जानकारी के साथ संक्षिप्तः रूप से भिजवाने का श्रम करें, अधिकृत रूप से प्रेषित सामग्री को जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ प्रमुखता दी जायेगी।

– सम्पादक मण्डल : जैन प्रकाश

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क राशि

संस्थागत	रु. 750/-
व्यक्तिगत	रु. 1500/-
पति-पत्नी के लिए	रु. 2500/-
पति या पत्नी दोनों में से कोई भी एक आजीवन सदस्य है तो दूसरे को आजीवन सदस्य बनने के लिए	**रु. 1000/-**
जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता 12 वर्ष	रु. 1000/-

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - महिला शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक

सौ. पुष्पा कीमती जैन, हैदराबाद	99639 11219
सौ. रतनबाई मेहता जैन, बैंगलोर	93412 32857
सौ. नीलम ओसवाल जैन, दिल्ली	93112 45440
सौ. बेबीबेन डागलिया जैन, मुंबई	93203 39560

राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. पुष्पा राजेन्द्र गोखरु जैन, भीलवाड़ा	94141 84005

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा

सौ. विमल सुदर्शन बाफना जैन, पुणे	88050 80002

राष्ट्रीय उपाध्यक्षा

सौ. जतनबाई कांकरिया जैन, हैदराबाद	92901 19207
सौ. संतोष आच्छा जैन, बैंगलोर	97406 17633
सौ. संतोष बोहरा जैन, बैंगलोर	99005 36047
सौ. पुष्पा संचेती जैन, चेन्नई	84282 24444
सौ. बबीता रविन्द्र जैन, पानीपत	98960 92862
सौ. सुमित्रा जैन, दिल्ली	99715 65853
सौ. संतोष सुरेश जैन, दिल्ली	98687 04326
सौ. इंदु जैन, कोटा	94608 50363
सौ. लाडजी मेहता जैन, भीलवाड़ा	87641 22999
सौ. संतोष सिंघवी जैन, भीलवाड़ा	94138 60891
सौ. आशा साम्भर जैन, नीमच	94066 59600
सौ. अंतरदेवी बाघमार जैन, कलकत्ता	93317 15789
सौ. अनिता लोढ़ा जैन, औरंगाबाद	98816 88988
सौ. कल्पना धारीवाल जैन, नाशिक	82081 74668
सौ. लता पगारिया जैन, पुणे	90287 36831
सौ. सुरेखाजी कटारिया जैन, पुणे	94223 27041
सौ. स्वीटी चण्डालिया जैन, सूरत	94083 52726
सौ. प्रभावती मुथा जैन, पुणे	94220 79908
सौ. लाडजी सिंघवी जैन, मुंबई	90049 67285

राष्ट्रीय महामंत्री

सौ. आरती (प्रेमलता) बुरड़ जैन, बैंगलोर	99451 24476

राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा

सौ. सुषमा धाकड़ जैन, पालघर	99878 52656

राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्षा

सौ. मीना तातेड़ जैन, वलसाड़	81419 17775

राष्ट्रीय मंत्री

सौ. चन्द्रकला कोठारी जैन, हैदराबाद	97040 66066
सौ. प्रेमा बोहरा जैन, बैंगलोर	99001 38806
सौ. सपना सिंघवी जैन, बैंगलोर	99168 38735
सौ. पिंकी सुराणा जैन, चेन्नई	97907 44221
सौ. आरती सुराणा जैन, सिकन्द्राबाद	86883 60361
सौ. मोनिका जैन, लुधियाना	78886 65752
सौ. वीणा जैन, दिल्ली	78389 00380
सौ. मधु लोढा जैन, भीलवाड़ा	99284 59794
सौ. सुशीला लोढा जैन, ब्यावर	99500 21210
सौ. नैना नौलखा जैन, उदयपुर	94148 08250
सौ. पुष्पा बागरेचा जैन, कोटा	90790 88691
सौ. भारती चंगेड़िया जैन, इचलकरंजी	99223 59071
सौ. तृप्ति जैन, अहमदनगर	89999 18531
सौ. नन्दा कांकरिया जैन, औरंगाबाद	88888 91223
सौ. कंचन सिंघवी जैन, मुंबई	92243 31981
सौ. सुशीला लोढा जैन, मुंबई	99203 67337
सौ. मन्जू सिंघवी जैन, मुंबई	99307 55670
सौ. सूरज वीरवाल जैन, उदयपुर	94604 45044
सौ. अंजू सिरोया जैन, वापी	98241 40086

राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री

सौ. प्राची मुगदिया जैन, औरंगाबाद	82755 13888

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री

सौ. ज्योति गांधी जैन, अहमदनगर	96578 67583
सौ. शोभा जैन, इन्दौर	91793 49386
सौ. बसंती चोपड़ा जैन, बैंगलोर	97396 73194
सौ. वन्दना छाजेड़ जैन, भीलवाड़ा	98280 82728
सौ. शुभ आराधना हिंगड़ जैन, अहमदाबाद	99249 93749

राष्ट्रीय संगठन मंत्री

सौ. नगीना मण्डोत जैन, बैंगलोर	99002 81067
सौ. संगीता छल्लानी जैन, बैंगलोर	97311 06160
सौ. ममता वडाला जैन, मुंबई	98672 62323
सौ. सरोज ढेलावत जैन, निम्बाहेड़ा	94610 09650
सौ. मधु जैन, लुधियाना	84374 14111

जीवन प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. मन्जू तातेड़ जैन, मुंबई	77381 69999
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. पिंकी नाहर जैन, मुंबई	97571 95533

मानव सेवा योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. आजाद सांड जैन, चंडीगढ़	93564 52299
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. सुमित्रा बनवट जैन, सूरत	96019 59035

जीव दया योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता लोढा जैन, नाथद्वारा	75973 47706
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. बरखा कोठारी जैन, सूरत	99049 30907

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. दर्शना तलेसरा जैन, विरार	80803 74525
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. प्रतिभा डांगी जैन, नवी मुंबई	98198 17719

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. प्रेमलता राजावत जैन, मुंबई	99878 54838
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. मनीषा कागरेचा जैन, मुंबई	98920 11619

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. शिल्पा पामेचा जैन, उदयपुर	94146 82462
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. नयना सिसोदिया जैन, उदयपुर	91662 11412

विहार धाम योजना

राष्ट्रीय अध्यक्षा - सौ. ज्योति गांधी जैन, नारायणगाँव, पुणे	98811 23552
राष्ट्रीय मंत्री - सौ. लीला खरवड़ जैन, कलवा मुम्ब्रा, ठाणे	99696 02393

जैन प्रकाश मासिक पत्रिका में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु आग्रह

व्हाट्सएप्प नं. - 90197 31906 / 70197 31906 अथवा ई-मेल - aissjc1906@gmail.com

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस - युवा शाखा - कार्यकाल वर्ष 2021-24

राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री पद्‌म चन्द आच्छा जैन, बैंगलोर 99800 59421

निवर्तमान राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष :

श्री सागर सांखला जैन, पुणे 88880 90999

राष्ट्रीय वरिष्ठ युवा उपाध्यक्ष :

श्री कमलेश नाहर जैन, अहमदाबाद 93767 37111

राष्ट्रीय युवा उपाध्यक्ष :

श्री राकेश लुंकड़ जैन, बैंगलोर 99802 84908
श्री भरत कोठारी जैन, बैंगलोर 93796 77127
श्री विशाल बोरा जैन, सिकन्द्राबाद 95500 02225
श्री विमल खाबिया जैन, चेन्नई 99403 25649
श्री श्रेयांस जैन, लुधियाना 98557 99909
श्री अंश रविन्द्र जैन, पानीपत 98960 93861
श्री नितिन राय जैन, बड़ौत 99993 99382
श्री लोकेश धाकड़ जैन, उदयपुर 98280 50143
श्री विकास जैन, सूरत 93770 41606
श्री दिनेश हंसमुख बंबकी जैन, दापोली 94223 82620
श्री अंकित अनिल संचेती जैन, नासिक 83800 00208
श्री प्रितेश प्रदीप गादिया जैन, शिरूर 98229 82244
श्री वैभव तातेड़ जैन, इन्दौर 98264 81900
श्री सागर प्रकाश मुगदिया जैन, औरंगाबाद 90289 59000

राष्ट्रीय युवा मंत्री :

श्री मुकेश बाबेल जैन, बैंगलोर 98444 13227
श्री नवीन कावड़िया जैन, हैदराबाद 98851 85598
श्री आशीष रांका जैन, चेन्नई 98400 85846
श्री कुणाल जैन, लुधियाना 99140 14010
श्री सुमित जैन, करनाल 98124 75000
श्री पुनीत जैन, गाज़ियाबाद 95013 67207
श्री पानिल पोखरणा जैन, उदयपुर 97722 67444
श्री अश्विन गांग जैन, रतलाम 94245 29556
श्री कमलेश मादरेचा जैन, अहमदाबाद 98258 08580
श्री किशोर बाफना जैन, बैंगलोर 98865 02636
श्री लोकेश जैन, दिल्ली 98682 03098
श्री विपुल ढाबरिया जैन, इन्दौर 94250 64243
श्री केतन दुग्गड़ जैन, पुणे 98605 56838
श्री सुनील कुमार बम्ब जैन, बैंगलोर 98455 53001
श्री सुभाष डंक जैन, हुबली 99002 69151

राष्ट्रीय युवा प्रचार-प्रसार मंत्री :

श्री अजय धोका जैन, बैंगलोर 96118 28888
श्री नीलेश कांकरिया जैन, वाघोली 97672 94085
श्री विनय जैन, लुधियाना 95010 03864

राष्ट्रीय युवा संगठन मंत्री :

श्री राकेश बोहरा जैन, बैंगलोर 98443 27580
श्री मुकेश जैन, लुधियाना 98156 09170
श्री गौरव कोठारी जैन, वडगांवशेरी 90284 43181

राष्ट्रीय युवा महामंत्री :

श्री प्रमोद सिंघी जैन, बैंगलोर 98441 17766

राष्ट्रीय युवा कोषाध्यक्ष :

श्री मनोज सोलंकी जैन, बैंगलोर 98441 62930

राष्ट्रीय युवा सह-कोषाध्यक्ष :

श्री प्रवीण सिंघी जैन, बैंगलोर 98443 31009

राष्ट्रीय युवा कानूनी सलाहकार मंत्री :

श्री विशाल छल्लाणी जैन, बैंगलोर 98861 84743

ज्ञान प्रकाश योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - प्रवीण बोहरा जैन, सोजत सिटी 98295 00211
राष्ट्रीय मंत्री - श्री विवेक जैन, रोहतक 95412 12000

वैय्यावच्च योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विपुल जैन, दिल्ली 98117 40074
राष्ट्रीय मंत्री - श्री कपिल बडाला जैन, नाथद्वारा 94141 71246

अल्पसंख्यक योजना

राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री विशाल बोहरा जैन, बैंगलोर 89041 41411
राष्ट्रीय मंत्री - श्री अभिषेक डुंगरवाल जैन, बैंगलोर 89705 60900

प्रांतीय युवा अध्यक्ष :

श्री विकास कोठारी जैन, कर्नाटक 98458 50155
श्री पवन कटारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना 98491 59292
श्री आनंद बालेचा जैन, तमिलनाडु 98413 68579
श्री दीपांशु जैन, पंजाब 88470 11852
श्री प्रवेश जैन, हरियाणा 92116 00001
श्री सुविनित कुमार जैन, उत्तर प्रदेश 87917 03503
श्री दिनेश जैन, दिल्ली 99996 58350
श्री निर्मल सिंघवी जैन, राजस्थान 94141 63710
श्री संदीप गोखरु जैन, मध्य प्रदेश 94250 63976
श्री रोशन चोरड़िया जैन, महाराष्ट्र 94031 51617
श्री बाबूलाल बडोला जैन, मुंबई-पुणे 79776 61263
श्री मंजीत कोठारी जैन, गुजरात 93745 44138

प्रांतीय युवा महामंत्री :

श्री मनोज बोहरा जैन, कर्नाटक 98444 68490
श्री श्रेणिक राज डफारिया जैन, आन्ध्र-तेलंगाना 98490 95411
श्री मनीष रांका जैन, तमिलनाडु 98402 74685
श्री अभय जैन, पंजाब 99156 01005
श्री अतिमुक्त जैन, हरियाणा 94660 51369
श्री विकास जैन, उत्तर प्रदेश 93193 13717
श्री विनीत जैन, दिल्ली 98993 64620
श्री मनीष दाणी जैन, राजस्थान 94148 31484
श्री प्रदीप छल्लाणी जैन, मध्य प्रदेश 98260 87909
श्री पवन कटारिया जैन, महाराष्ट्र 92267 58479
श्री मनोज मेहता जैन, मुंबई-पुणे 93211 11837
श्री आशीष पोखरणा जैन, सूरत 93745 44139

अध्यक्षीय उद्गार

जो हुआ संघ हित में हुआ ! सभी को हार्दिक बधाई !

E-mail : rjachallani@gmail.com

– **आनंदमल जवरीलाल छल्लाणी जैन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष – जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

आदरणीय पाठकगण, सादर जय जिनेन्द्र !

जैन धर्म मैत्री और समन्वय का धर्म है। जैन कॉन्फ्रेंस भी इसी मंगल भाव के आधार पर बनी हुई अखिल भारतीय संस्था है। हम यदि हमारे इतिहास पर दृष्टि डाले तो भारतवर्ष का जन तंत्र यथार्थ में जिन तंत्र है। हमारा लोकतंत्र जिस भाव भाषा पर आधारित है उसकी आधार स्थली है वैशाली, वो वैशाली जो वीतराग प्रभु महावीर की जन्म स्थली है। सिद्धार्थ शासन का आदर्श है जहां से शासन नहीं, सेवा का जयघोष हुआ, जहां से संगठन, संवाद और सरोकार के सूत्र पले-बढ़े और विश्व पटल पर अपनी सर्वोदयी भावना से मान्य हुए।

हमारा सौभाग्य है कि हम इस युग में है, जहाँ युग प्रधान आचार्य, ध्यान योगी परम पूज्य गुरुदेव डॉ. श्री शिवमुनि जी म.सा. का दिव्य द्रष्टा चिन्तन उपलब्ध है। आपके चिंतन का सार यही है कि **ध्यान करो ! ध्यान दो ! और जो करो वो ध्यान से करो !** जब आपश्रीजी ने हमें कृपापूर्वक हमें दायित्व सौंपा तो ध्यान में आया कि हमें जैन कॉन्फ्रेंस, श्रमण संघ और स्थानकवासी धर्म परम्परा के गौरव की अभिवृद्धि कर सकल जिन शासन की सेवा करनी है ! कैसे करनी है यह सोच आकार लेने लगी। इसका आधार भी यही था कि हम विवाद नहीं समन्वय चाहते थे। जैन कॉन्फ्रेंस किसी भी व्यक्ति विशेष की संस्था नहीं है। यह आज की तारीख में 77 हजार के पार सदस्यों का परिवार है जो स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा और श्रमण संघ के गौरव को अक्षुण्ण रखने का कार्य अहर्निश करती रहेगी।

हमारे विगत् तीन वर्षों के कार्यकाल में हमने बारंबार यही आग्रह रखा है कि जो भी हो वह समन्वय के हित में हो, संगठन के हित में हो और हम एकता का बल एकता की शक्ति को आत्मसात करके आगे बढ़ें, एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे।

मुझे आज स्मरण में आ रहा है कि जब भावी अध्यक्ष श्री अतुल जैन ने अपना पहला चुनाव अभियान उस पवित्र भूमि से प्रारंभ किया जो श्रमण संघ की जन्म स्थली है। मैं सादड़ी संघ को धन्यवाद देना चाहता हूँ, जिन्होंने इस पहल को किया और दोनों ही पक्षों के शीर्ष लोगों को साथ बैठाकर एकता और समन्वय का संदेश दिया। इस कार्य को करने में अनेक समाजसेवियों के साथ पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नेमीचंद चोपड़ा, पूर्व राष्ट्रीय पदाधिकारी भी सम्मिलित रहे। अंततः वही मैत्री भाव, वही आग्रह मानते हुए पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् अविनाश जी चोरड़िया जैन ने भी वस्तु स्थिति को समझा और आज हमें यह सुखद दिन देखने में आया। जो युवा बन्धु एक पक्ष के आग्रह पर अध्यक्ष पद के उम्मीदवार बने थे उन्होंने बिना शर्त अपना फार्म वापस लेकर एकता और समन्वय के प्रयास को जिसे पूर्व महामंत्री भाई शशिकांत 'पिन्टू' कर्नावट जैन ने आगे बढ़ाया और भावी अध्यक्ष पद के उम्मीदवार युवा दानवीर श्री अतुलजी जैन को भी अपनी मैत्री का वास्ता देकर इस समन्वय को परिणीति पर पहुँचाया। वरिष्ठ समाजसेवी एवं हमारे परम सहयोगी श्रीमान् अशोक कुमार बाबूसेठ बोरा जैन का योगदान भी भुलाया नहीं जा सकता।

आज इस सुखद घड़ी में सभी को बधाई देते हुए यह कहना चाहूंगा कि क्या सुखद संयोग है कि अद्भुत भामाशाह श्रीमान् रमणलाल जी कपूरचंद जी लुंकड़ जैन की पुण्यायी और उनके द्वारा दिये गए सहयोग से जैन कॉन्फ्रेंस जिस मार्ग पर आगे बढ़ चुकी है उनके अप्रतिम योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता। आज की सभा में वे स्वयं विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन होने के नाते प्रमुख रूप से भागीदार रहे। उनके

ही शुभ प्रयासों की गति आगे भी इसी प्रकार चलती रहे और जैसा कि उन्होंने मुझे कहा भावी अध्यक्ष युवा दानवीर श्री अतुल जैन को भी उसी प्रकार का पूर्ण सहयोग मिलेगा जैसा आज तक देता रहा हूँ। आपने यह भी कहा कि हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जैन कॉन्फ्रेंस श्रमण संघ की मातृ संस्था है और माँ की सेवा करना हम सबका परम कर्त्तव्य है।

इसी भाव से हम पहले ही दिन चुनाव के लिये सहमत नहीं थे। हम चाहते थे कि समन्वयपूर्वक आपसी मेल-मिलाप के साथ हम कार्य करें और जैन कॉन्फ्रेंस को मिल-जुलकर नई ऊँचाईयों पर लेकर जाएं। आज हमारी भावना फलित हुई। संपूर्ण देश से मुझे इस अवसर पर समाज हितैषी महानुभावों के फोन प्राप्त हो रहे हैं। सभी ने इस समन्वय और एकता के प्रयासों की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए अपना आशीर्वाद एवं बधाईयाँ प्रेषित की है।

यहाँ मैं पुनः दोहराना चाहूंगा कि जैन कॉन्फ्रेंस किसी भी व्यक्ति विशेष की संस्था नहीं है। जैन कॉन्फ्रेंस समग्र स्थानकवासी जैन परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाली राष्ट्रीय संस्था है। यहाँ जो भी जुड़े वह निस्वार्थ भाव से, समाज को नई ऊँचाई देने के भाव से जुड़े, सबको अपना मानकर सबके साथ समान व्यवहार करते हुए पूरी उदारता से जुड़े।

आज प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से जिन-जिन लोगों ने इस समन्वय प्रयास के प्रति अपनी सद्भावनाएं व्यक्त की है, उन सबका मैं हृदय से आभार मानता हूँ। साथ ही यह आव्हान करता हूँ कि अब सब विवाद भूलकर, कोर्ट कचहरी भूलकर, कहासुना भूलकर साथ बैठे और ऊर्जा व समन्वय से भरपूर समाज सेवक अतुल जैन को राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर सफल बनाने में अपना-अपना योगदान दें। यह योगदान कहीं से भी व्यक्तिगत नहीं होगा। यह योगदान समाज के हित में योगदान होगा। जैन कॉन्फ्रेंस के दायरे को व्यापक करने में होगा। जो सुधार कार्यों की गति आज तक आगे बढ़ी है, उसको निरंतरता देने के लिये होगा।

हमारा तो स्पष्ट सपना है कि हम ऐसे दानवीर सहयोगियों और संस्थाओं के माध्यम से मान्य कानून के आधार पर एक विशाल फण्ड एकत्र करें, जिसके ब्याज मात्र से श्रमण संघ की विविध सेवाओं को, हमारी संयमी महान आत्माओं को उनकी संयम यात्रा में और अधिक योगदान देने के लिए प्रयास करें। जो योजनाएं आज तक चल रही है वे नई ऊंचाईयों की ओर कैसे बढ़ें ! इस सोच के साथ आपके सुझाव सामने आने चाहिए।

युवाओं और महिलाओं को नए संगठन में व्यापक जिम्मेदारियाँ देते हुए भविष्य का नेतृत्व बनाने की दिशा में भी कार्य करें। **हमारा लक्ष्य हो कि हम जैन कॉन्फ्रेंस की सदस्य संख्या को एक लाख तक पहुंचाएं और इस सदस्यता में सभी क्षेत्रों की महान प्रतिभाओं को, संभावना और सद्भावना से भरे युवकों को, वरिष्ठ अनुभवी समाजसेवियों को, जैन धर्म दर्शन के ज्ञाता विद्वानों को जोड़े।**

भावी कॉन्फ्रेंस का जो स्वरूप आगे निर्माण हो उसमें फूलों के गुलदस्ते की तरह भिन्न-भिन्न खुशबुओं का समावेश हो। प्रतिनिधित्व में ऐसे दानवीरों को, ऐसे समय और प्रतिभा का योगदान देने वाले लोगों को जोड़े जो जैन कॉन्फ्रेंस को ही नहीं संपूर्ण जैन धर्म परम्परा को, जिन शासन को, हमारे आंतरिक लोकतंत्र को अभिव्यक्त करने में सफल हो।

जिस तरह से जन सामान्य में जैन धर्म और जैन धर्मानुयायियों की प्रतिष्ठा है, उसका दर्पण जैन कॉन्फ्रेंस बनें, मैं इसी आग्रह के साथ पुनः-पुनः सभी को बधाई देता हूँ और आज जो एकता का बिगुल फूंका गया है ! उसका स्वर मंद न हो। हम मिल-जुलकर ऐसा प्रयास करें जो हमारे समाज का गौरव बढ़ाने में योगदान दें, जय जिनेन्द्र ! ❖❖

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
रजिस्टर्ड कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली – 110 001
फोन नं. 011–23363729, 23365420, 23344380, ई–मेल: aissjc1906@gmail.com

चुनाव कार्यकाल वर्ष 2025–27
राष्ट्रीय चुनाव समिति

श्री रमेशचंद जैन 'काहनी' – **राष्ट्रीय मुख्य चुनाव अधिकारी**
एच–32/94, सैक्टर – 3,
रोहिणी, नई दिल्ली – 110 085
मो. : 84700 18575

श्री अरुण कुमार जैन - **राष्ट्रीय सह–चुनाव अधिकारी**
82–ए, विद्या नगर, आईनोक्स थियेटर के पीछे,
इन्दौर – 452 001 (मध्य प्रदेश)
मो. : 98260 11099
E-MAIL : arunkumarjain28@gmail.com

श्री जगदीश सिंह - **राष्ट्रीय सह–चुनाव अधिकारी**
फ्लैट नं. 003, टॉवर–ए2, अंतरिक्ष नेचर अपार्टमेन्ट,
प्लॉट नं. ए–110, मेन रोड़, सैक्टर – 52,
नोएडा – 201 301 गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश)
मो. : 98689 40586
E-MAIL : jagdishs63@gmail.com

श्री आनंदमल छल्लाणी जैन - **राष्ट्रीय अध्यक्ष**
(सदस्य–राष्ट्रीय चुनाव समिति)
नं. – 2, रिथर्डन एवेन्यु,
रिथर्डन रोड़, नीलगिरीश के सामने,
वैपेरी, चेन्नई – 600 007 (तमिलनाडु)
मो. : 98410 30035, 93800 72199

श्री दिलीप खिंवसरा जैन - **राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री**
(सदस्य–राष्ट्रीय चुनाव समिति)
"आनंद", अंगूरीबाग रोड़, पांडारिबा
जागृति हनुमान मंदिर के निकट,
औरंगाबाद – 431 001 (महाराष्ट्र)
मो. : 94222 05434
E-MAIL: deelipkhivesara@gmail.com

चुनाव कार्यकाल वर्ष 2025–27 से संबंधित महत्वपूर्ण सूचनाएं

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की चुनाव प्रक्रिया वर्ष 2025–27 में चुनाव की समस्त व्यवस्थाएँ केन्द्रीयकृत रूप में रखी गई थी ताकि कहीं भी गडबड़ी नहीं हो और किसी भी प्रकार की अन्य तरीकों से दी जाने वाली गडबडियों को रोका जा सके।

जहाँ आवश्यकता पडेगी वहाँ पर्यवेक्षक नियुक्त किए जा रहे हैं। साथ ही गड़बड़ी पाए जाने पर संबंधित चुनाव मतदान केन्द्र का मतदान स्थगित कर दिया जाएगा।

चुनाव प्रक्रिया में नामांकन पत्रों की जाँच में देरी का कारण केन्द्रीय चुनाव समिति के पास विभिन्न प्रांतों से फार्म का देरी से पहुँचना रहा। इसके अतिरिक्त कतिपय विघ्न संतोषी तत्वों द्वारा चुनाव प्रक्रिया में बाधा पहुँचाने हेतु अकारण शिकायतों का अंबार लगाया गया, चुनाव अधिकरियों को व्यर्थ फोन करना, बार–बार एक बात को दोहराया जाना और प्रभावित करने हेतु अनर्गल दबाव बनाना तथा धौंस देने के कृत्य भी किए गए।

ज़ोन – 3 (राजस्थान – प्रांत मतदान स्थल) *भूल सुधार ...*

उदयपुर सेन्टर

इस मतदान केन्द्र पर उदयपुर, रासमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, डुंगरपुर, कोटा, बून्दी, झालावाड़, सवाई माधोपुर, बांरा, टोंक, जोधपुर, सिरोही, आबूरोड़, पाली इन जिलों के आजीवन सदस्य / मतदाता मतदान करेंगे।

देवेन्द्र धाम भुवाना रोड़,
उदयपुर – 313 001 (राजस्थान)

किसी का बुरा सोचना भी मत

बात सन् 1970 की है। मैं अपने गांव जानखेड़ा जिला सहारनपुर में कक्षा आठ में पढ़ता था। गांव में हमारी परचून की बहुत बड़ी दुकान थी जो आज भी है।

बड़े भाई साहब जय प्रकाश जैन को दुकान का सामान लाने गांव से आठ कि. मी. दूर कस्बे, रामपुर मनिहाराना जाना था साईकिल में हवा कम थी भाई साहब ने मुझे साईकिल देकर कहा कि – 'इसमें पंचर जुड़वा लाओ।' मैं साइकिल लेकर सुनारों की गली में साईकिल रिपेयर करने वाले लालसिंह की दुकान पर गया और मैंने स्वयं ही पंप से साइकिल में हवा भर ली। पंचर जुड़वाने के लिए पहिए टेस्ट नहीं करवाए क्योंकि उस समय मेरे मन में विचार आया कि साईकिल पर मुझे थोड़े ही जाना है जाएंगे तो भाई साहब ही अगर रास्ते में हवा निकल गई तो परेशानी तो भाई साहब को ही होगी मुझे थोड़ी ही होगी।

मैं जैसे ही साईकिल लेकर दुकान पर आया तो अचानक ही भाई साहब बोले कि – 'रामपुर सामान लेने तुम्हें ही जाना है।' मैं साइकिल से सामान लेने के रामपुर के लिए चल दिया। रास्तु में पाँच कि.मी. चलने पर सलेमपुर गांव के पास साईकिल में पंचर हो गया। मैं साईकिल लेकर पैदल ही रामपुर के लिए चल दिया। उस समय मुझे क्रोध नहीं आया, बल्कि मन में जबर्दस्त चिंतन चलने लगा और इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि यदि हम किसी का बुरा सोचते हैं तो उसका बुरा नहीं होता, बल्कि हमारा ही बुरा हो जाता है। उस दिन के बाद मैंने किसी का बुरा नहीं सोचा।

माँ ने सादा यही सीख दी कि किसी का बुरा करना तो है ही नहीं, सोचना भी नहीं सोचने मात्र से भी अपने ही कर्मों का बंध हो जाता है। दूसरों का कुछ भी नहीं बिगड़ता। ❖❖

" संकल्प से सिद्धि "

- आचार्य सम्राट्, पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा.

आत्मा एक तत्व है, जिसे तत्व का बोध हो जाता है वह जीव सम्यक् दर्शी बन जाता है। 'सम्मत्त दंसी न करेइं पावगं' आगम में फरमाया है - सम्यक् दृष्टि पाप नहीं करता।

"सम्यक् दृष्टि जीवड़ा करे, कुटुम्ब प्रतिपाल,
अन्तर्गत् न्यारो रहे, ज्यों धाय खिलावे बाल"

सम्यक् दृष्टि जीव परिवार का प्रतिपाल करता है, परन्तु भीतर में भेद विज्ञान के द्वारा अलग रहता है अर्थात् शरीर से परिवार का पालन पोषण करता है पर भीतर में बोध रहता है कि यह जीव आत्मा अलग है। यह परिवार शरीर से जुड़ा हुआ है। मैं शरीर नहीं हूँ। मैं जीवात्मा हूँ इस जीव का कोई नहीं, कुछ नहीं जीव अकेला है। इस एकत्व भावना का पोषण करता हुआ जीव अपने स्वरूप में रमण करता है।

जैसे धाय माता बच्चे का पूरा ध्यान रखती है व्यवहार से, किन्तु निश्चय में यह जानती है कि यह बच्चा मेरा नहीं है।

इसी प्रकार सम्यक् दृष्टि संसार की समस्त क्रियाएं करता है, परन्तु कहीं पर भी कर्त्ता भाव का पोषण नहीं करता। भीतर में ज्ञाता-दृष्टा भाव में रहकर अपनी आत्म प्रतिति में आत्मानुभव में रत रहता है। वही साधक मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ जाता है।

वर्ष 2024 समापन की ओर है। वर्ष 2024 में जितनी भी क्रियाएं इस देह के निमित्त से हुई। चाहे वह शारीरिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक क्रियाएं थी इस जीव का उन क्रियाओं से कोई सम्बन्ध नहीं, क्योंकि जीव किसी क्रियाओं का कर्त्ता था ही नहीं, जीव का स्वभाव ज्ञाता-दृष्टा भाव था, है और रहेगा। अतः जीव को कोई कर्म नहीं लगता। जहाँ-जहाँ विभाव वश, कर्त्ता भाव का पोषण हुआ। मैं जीव उन सभी का प्रतिक्रमण कर स्वभाव में स्थित होता हूँ। संकल्प करता हूँ कि आने वाले वर्ष में मैं जीवात्मा अपने स्वभाव में स्थिर रहने का पुरुषार्थ करूँगा।

संकल्प - प्रभु महावीर का मार्ग संकल्प का है। हम जो संकल्प करते हैं वह अवश्य पूर्ण होता है। जैसे एक व्यक्ति को भूख लगती है तो वह भोजन का संकल्प करता है तो कहीं से भी भोजन ढूँढ़ लाता है। ऐसे ही हमने संकल्प किया तो हम साधक बन गये। ऐसे हम संकल्प करें कि आने वाले वर्ष में मैं मिथ्यात्व को क्षय कर सम्यक्त्व को परिपक्व करूंगा व क्षायिक सम्यक्त्व को प्रकट करूंगा, जिससे यह जीव बचे हुए शेष मोह कर्म को क्षय कर्म, कैवल्य को प्रकटाएगा और अंततः निर्वाण को प्राप्त करेगा।

वर्ष 2024 के चातुर्मास में उपासकदशांग एवं तत्वार्थ सूत्र के स्वाध्याय व ध्यान के अनुभव के साथ परिपूर्ण हुआ। इस सूत्र के स्वाध्याय से अध्यात्म की अनेक गुत्थियां अनुभव के साथ सुलझती गई।

प्रत्येक तीर्थवासी व आत्मार्थी को साधना के साथ इस सूत्र अवश्य स्वाध्याय करना चाहिए, जिससे अध्यात्म की साधना पुष्ट होगी।

वर्ष 2025 में अध्यात्म का विकास हो। घट-घट में जड़ जीव के भेद के साथ अभेद दृष्टि का विकास हो। व्यवहार के साथ निश्चय दृष्टि को मुख्यता मिले, परमार्थ जीवन में मुख्य हो, यही मंगल मनीषा।

❖❖

बिइओ उद्देसओ : द्वितीय उद्देशक

- युवाचार्य पू. श्री मधुकरमुनिजी म.सा.

पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा का निषेध

10. अट्टे लोए परिजुण्णे दुस्संबोधे अविजाणए। अस्सिं लोए पव्वहिए तथ्य तथ्य पुढो पास आतुरा परितावेंति।

10. जो मनुष्य आर्त, (विषय-वासना-कषाय आदि से पीड़ित) है, वह ज्ञान दर्शन से परिजीणं हीन रहता है। ऐसे व्यक्ति को समझाना कठिन होता है, क्योंकि वह अज्ञानी जो है। अज्ञानी मनुष्य इस लोक में व्यथा-पीड़ा का अनुभव करता है। काम, भोग व सुख के लिए आतुर-लालायित बने प्राणी स्थान-स्थान पर पृथ्वीकाय आदि प्राणियों को परिताप (कष्ट) देते रहते हैं। यह तू देख ! समझ !

11. संति पाणा पुढो सिआ।

11. पृथ्वीकायिक प्राणी पृथक् पृथक् शरीर में आश्रित रहते हैं अर्थात् वे प्रत्येकशरीरी होते हैं।

12. लज्जमाणा पुढो पास। 'अणगारा मो' त्ति एगे पवयमाणा, जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्पसमारंभेणं पुढविसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसति।

12. तू देख ! आत्म-साधक, लज्जमान है- (हिंसा से स्वयं को संकोच करता हुआ अर्थात् हिंसा करने में लज्जा का अनुभव करता हुआ संयममय जीवन जीता है।)

कुछ साधु वेषधारी 'हम गृहत्यागी हैं' ऐसा कथन करते हुए भी वे नाना प्रकार के शस्त्रों से पृथ्वीसम्बन्धी हिंसा-क्रिया में लगकर पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करते हैं तथा पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा के साथ तदाश्रित अन्य अनेक प्रकार के जीवों की भी हिंसा करते हैं।

13. तत्थ खलु भगवता परिण्णा पवेदिता। इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदण-माणण-पूयणाए-जाई-मरण -मोयणाए, दुक्खपडिघातहेउं। से सयमेव पुढविसत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा पुढविसत्थं समारंभावेति, अण्णे वा पुढविसत्थं समारंभंते समणुजाणति।

तं से अहिआए, तं से अबोहीए।

13. इस विषय में भगवान महावीर स्वामी ने परिज्ञाधविवेक का उपदेश किया है। कोई व्यक्ति इस जीवन के लिए, प्रशंसा -सम्मान और पूजा के लिए, जन्म-मरण और मुक्ति के लिए, दुःख का प्रतिकार करने के लिए, स्वयं पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करता है, दूसरों से हिंसा करवाता है, तथा हिंसा करने वालों का अनुमोदन करता है।

वह (हिंसावृत्ति) उसके अहित के लिए होती है। उसकी अबोधि अर्थात् ज्ञान-बोधि, दर्शन-बोधि, और चारित्र-बोधि की अनुपलब्धि के लिए कारणभूत होती है।

14. से तं संबुज्झमाणे आयाणीयं समुट्ठाए। सोच्चा खलु भगवतो अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेसिं णातं भवति-एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णिरए।

इच्चत्थं गढिए लोए, जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेणं पुढविसत्थं समारंभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसति।

14. वह साधक (संयमी) हिंसा के उक्त दुष्परिणामों को अच्छी तरह समझता हुआ, आदानीय-संयम-साधना में तत्पर हो जाता है। कुछ मनुष्यों को भगवान् के या अनगार मुनियों के समीप धर्म सुनकर यह ज्ञात होता है कि-'यह जीव-हिंसा ग्रन्थि है, यह मोह है, यह मृत्यु है और यही नरक है।'

(फिर भी) जो मनुष्य सुख आदि के लिए जीवहिंसा में आसक्त होता है, वह नाना प्रकार के शस्त्रों से पृथ्वी-सम्बन्धी हिंसा-क्रिया में संलग्न होकर पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करता है और तब वह न केवल पृथ्वीकायिक जीवों की हिंसा करता है, अपितु अन्य नानाप्रकार के जीवों की भी हिंसा करता है।

विवेचन- चूर्णि में 'आदानीय' का अर्थ संयम तथा 'विनय' किया है। *साभार :- !! आचारांग सूत्र - 1 !!*

(... शेष आगे)

श्रमण संघ हो अविचल मंगल

जैन श्रमण संघ अतीत से आज तक

- उपाध्याय प्रवर पू. श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

प्रथम साधु-सम्मेलन अजमेर : समन्वय का शुभारम्भ

जिसका लक्ष्य आत्म सुधार हो वही श्री वर्धमान संघ में प्रविष्ठ हो। इसका प्रत्येक सदस्य प्रवेश के समय ही लिखित स्वीकृति प्रदान करे और शुद्ध मन से अतीत की आलोचना-समालोचना कर लें। सर्व सम्मति से एक कुल जाति गण सम्पन्न आचार्य बनाया जावें। (समय 10:30 से 11 बजे दिनांक 9 अप्रैल 1933)

इस विचार को पुष्टि देने वाला एक निबंध भी उन्हीं के एक शिष्य ने पढ़ा। जो शायद प्रतिनिधि नहीं था। शांति रक्षक शतावधानी श्री रत्नचंद्र जी म. ने इस कृत्य को नियम विरुद्ध ठहराकर आक्रोश व्यक्त किया।

इस पर पुनः श्री जवाहराचार्य ने समाधान किया, तो छगनलाल जी म. ने कहा कि **"पहले घुड़साल बनानी है या घोड़ा? तय तो करें।"** इस टिप्पणी पर सदन में उपस्थित संग गण हँसने लगे। लेकिन ये हँसी दिल्लगी श्री जवाहरलाल जी म. को खल गई। उन्होंने क्रुध मन से कहा कि- **"सम्प करो"**, **"सम्प करो"** कि रट लगाते हो मगर जब यह होने का अवसर सामने है तो कोई प्रवेश का इच्छुक नहीं है।

इस पर अनेक परस्पर विरोधी स्वर एवं विकल्प उभरने लगे। बात इतनी बिगड़ गई कि ये प्रस्ताव ही स्थगित हो गया। अन्त में श्री कजोड़ीमल जी म. को यह कहना पड़ा कि-क्या सबको पहले की भांति ही रहना है? समवेत स्वर में सबने कहा "ठीक है", "ठीक है"।

लेकिन इसी शोर शराबे में वयोवृद्ध कवि श्री नानकचंद जी म. ने समाज की बहुसंख्यक जनता के हालात और मुनि गणों के इस प्रकार समस्या निरपेक्ष होने पर चिन्ता प्रकट की।

इस गंभीर विचारभिव्यक्ति पर जवाहराचार्य की टिप्पणी थी कि- **"चाहे कोंई स्वीकार करे न करें। हमें तो ये विचार पूरी तरह मंजूर है।" यह सुनकर पूज्ज श्री हस्तीमल जी म. बोले कि- "पहले आप सबकी राय तो स्वीकृति स्वरुप ले लें।"**

यह सुनना था कि तुनक कर श्री जवाहरलाल जी म. बोले कि- **"यह न होगा, हमें किसी का दखल पसंद नहीं।"**

इस विषय पर शांतमना विद्वान उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. भी अपने विचार रखना चाहते थे, किन्तु उन्हें भी यह कह कर चुप करा दिया कि- अब तक काफी प्रकाश डाला जा चुका है अब तो सिर्फ मनन करने के लिए तैयार होना चाहिये। यह एक तरफा आदेश आने पर व्याख्यान वाचस्पति श्री मदनलाल जी म. ने साहस के साथ कहा कि- **"आप सबको रोक-टोक देते हैं, बोलने तक नहीं देते क्या यही आपकी न्याय पद्धति है? आप जब किसी की भी सुनते तक नहीं हैं तो संगठन और संघ कैसे बनेगा? मुझे तो दाल में कुछ काला नजर आता है।"**

इस उत्तर पर पूज्य जवाहरलाल जी म. उदास होकर बोले कि- "अच्छा जी अब हम न बोलेंगे, आप ही बोला कीजिए।"

इस पर पुनः मदनलाल जी म. ने कहा कि- "सुनिए। प्रस्ताव को कसौटी पर कसे बिना हम एकदम तैयार नहीं है। हम तो सर्वमान्य लोकप्रिय प्रस्ताव बनाकर फिर उसे स्वीकार करने के लिए उपस्थित हो सकते हैं। लेकिन सुनी सुनाई युक्ति को सहसा मानने के लिए तैयार नहीं है।"

यह तर्क सुनते ही सभी **'वाह' 'वाह'** करने लगे। इसके पश्चात् श्री सौभाग्यचंद्र जी म. (गुजराती) ने समाचारी विषय सुनाना आरम्भ किया। मुनि मंडल में मौन छा गया।

समाचारी विषय लम्बा होने से रोककर, प्रतिक्रमण पाठों को एक करने का प्रस्ताव सामने आया तो इसे एक कमेटी को सौंपना तय हो गया और जो भी निर्णय हो उसे स्वीकार करने पर सहमति हो गई।

दीक्षित की आयु/जाति संबंधी निर्णय

पू. श्री जवाहरलाल जी म. ने कहा कि इस विषय में अपने-अपने सम्प्रदाय वालों को अधिकार रहे कि वे समयानुसार कार्य करें। परन्तु कोई ऐसा मध्यम मार्ग निकाला जाए कि भविष्य में होने वाली हानि में रोकथाम हो जाए। **इस मन्तव्य पर लम्बी बहस चली और अन्त में 16 वर्ष की वय सबको मान्य हो गई। जाति का प्रश्न गौण ही रहा।**

प्रमुख संत की योग्यता आज्ञा का प्रश्न

इस प्रश्न पर उपाध्याय श्री आत्माराम जी म. ने कहा कि-आचारांग, निशीथ सूत्र का ज्ञाता ही अग्रसर प्रमुख साधु हो सकता है और वह देश कालज्ञ भी हो तो उनकी आज्ञा से विहारादिक आज्ञा भी मान्य हो। शास्त्र या भाण्डोपकरण आदि सब आचार्य अथवा प्रमुख के अधिकार में रहने चाहिये। इसी प्रकार शिष्यादि भी प्रमुख द्वारा ही अधिकृत हो।

भारी बहस के बीच इस प्रस्ताव को भी स्थगित करने की मांग होने लगी तो श्री जवाहिराचार्य एवं युवाचार्य श्री कांशीराम जी म. ने मिलकर कहा कि प्रस्ताव स्थगन से प्रस्ताव का अपमान होगा। अतः प्रस्ताव आया ही नहीं ऐसा माना जाए।

सत्र 12/4/1933, प्रातः 9.30 से 2.15 दोपहर तक

इस दिन वर्षा हो गई थी अतः मण्डलाकार बैठक में बाधा पड़ गई। शामियाना तक बूंदाबांदी से टपक रहा था। इस दिन शास्त्रवार्ता में समय व्यतीत हुआ।

मध्यान्ह की सभा के निर्णय

गण-स्थापन के हेतु 31 साधु व 50 साध्वी का एक गण मान्य हुआ। स्थिरवास प्रमुख की आज्ञा से अनुकूल स्थान पर हो अन्यथा नहीं। प्रमुख के दर्शन तीन वर्ष की अवधि के मध्य अवश्य हो। दूर की बात हो तो पत्रादि से आज्ञा-विवरण चलता रहे।

प्रमुख की आज्ञा बिना सम्प्रदाय के नियम में परिवर्तन न किया जाए। गृहस्थों को दर्शन के नियम या प्रतिज्ञा न करावें। कुटुम्ब की आज्ञा बिना दीक्षित को मुनिवेश न पहनाया जाए।

साधु-साध्वी बिना कारण एक दूसरे के साथ स्थानक में न बैठें। साधु साध्वी अपने नाम पर संस्था कायम नहीं करावें।

देव गुरु धर्म के विषय में तो सब साधु साध्वी की श्रद्धा प्ररुपणा सहसा एक ही हो। यदि कोई साधु निरंकुश या कषायवश आज्ञा से बाहर एकल विहारी हो गया तो उसे कोई अभिवादन न करें।

13 अप्रैल 1933

इस रोज स्थानक का प्रसंग उपस्थित था। इसमें न ठहरने के लिए पूज्य जवाहराचार्य जी ने बड़ा जोर लगाया था। इससे छः सम्प्रदायों में अत्यंत प्रसन्नता प्रकट होने लगी। उन्होंने तो यह तक कहा कि मेरा समर्थन यदि अनुचित हो तो मैं शांतिरक्षक श्री रत्नचन्द्र जी से इसकी आलोचना हेतु भी तत्पर हूँ। बात को तूल न देने की गरज से नैमेत्तिक मकान में ठहरना उचित है यह मान ही लिया गया था, किन्तु जब श्री सौभागयचंद्र जी म. ने स्पष्टता से कह दिया कि- **"स्थानक में निवास करने के कारण ही हमारे समाज का नाम स्थानकवासी विश्रुत है। अतः स्थानक के बिना धर्म श्रद्धा नहीं टिक पाएगी।"**

इस मंतव्य पर शांतिरक्षक शतावधानी श्री रत्नचंद्र जी म. ने कहा कि "स्थानक का सम्यक निर्णय श्रावकों की कमेटी द्वारा ही हो तब ही ठीक है। **इस चर्चा को सुनकर पं. रतन श्री आनंदऋषि जी म. ने कहा कि- "जब हमारी समाज का नाम ही श्वे. स्थानकवासी जैन समाज है, तब स्थानक के नाम से इतनी चिढ़ या उदासीनता क्यों?"**

इस सवाल ने सबको गंभीर बना दिया। युवाचार्य श्री कांशीराम जी म. ने भी कुछ युक्ति सुझाई किन्तु अंत में स्थानक निवास के मामले को कमेटी के सुपुर्द कर उसके निर्णय को मान्य करने की आम राय बन पायी।

14 अप्रैल 1933

साधु-सम्मेलन की पूर्णता में अब मात्र चार-पाँच दिन शेष रहने से संघीय संबंधों पर निष्कर्ष का वातावरण बन गया था। जैन कॉन्फ्रेंस के प्रयासों और जन भावना को मद्देनजर मुनिराज विचार मग्न थे। अतः तय किया गया कि एक क्षेत्र में व्याख्यान एक ही स्थान पर हो, चाहे साधु-साध्वी किसी भी गण या सम्प्रदाय के क्यों न हो। यदि परस्पर व्यवहार एवं परिचय न भी हो तो निवास आहार और व्याख्यान एक स्थान पर ही हो यह आग्रह प्रबल बना।

(... शेष आगे)

मेवाड गौरव पूज्य आचार्य श्री एकलिंगदासजी महाराज

जैन संस्कृति में आचार्य पद का विशेष महत्त्व रहा है। तीर्थंकरों के अभाव में आचार्य ही चतुर्विध संघ का नेतृत्व करते हैं। 'दीवसमा आयरिया' इसीलिए आचार्य को दीप की उपमा दी गई है।

श्रद्धेय पूज्य श्री एकलिंगदासजी म.सा. ऐसे ही एक महान् आचार्य थे, जिन्होंने वीर भूमि मेवाड़ में जन्म लेकर इस भूमि की पुण्य ख्याति में अभिवृद्धि की। आपकी जन्मभूमि निम्बाहेड़ा जिले में 'संगेसरा' नामक गाँव है। इस गाँव में ओसवाल वंशीय छोटे साजन सहलोत गोत्रीय श्रीमान् शिवलालजी रहते थे। आपकी धर्मपत्नी पतिभक्त सुश्राविका श्रीमती सुरतबाई थी। दोनों दम्पति कुल मर्यादा के पोषक एवं धर्म में दृढ़ श्रद्धालु थे। धार्मिक वृत्ति होने के कारण पति-पत्नी का जीवन पवित्र और सुखी था। वि.सं. 1916 की ज्येष्ठ मास की अमावस्या रविवार की रात्रि में इस दम्पति को कुल दीपक पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। पुण्यशाली के जन्म से भला किसको प्रसन्नता नहीं होती ? उसका जीवन सर्वप्रिय होता है। इस सिद्धान्त के अनुसार बन्धु-बान्धव और इष्ट मित्रों ने बालक के जन्म पर आनन्दोत्सव मनाया।

आपके जेष्ठ भ्राता का नाम मोडीलालजी था। दोनों बालक राम-लक्ष्मण की जोड़ीवत् प्रतीत होते थे। बालक एकलिंगदास के जन्म के बाद उनके माता-पिता को अधिक अनुकूल संयोगों की प्राप्ति होने लगी । इस लाभ को वह दम्पति बालक के पुण्य प्रभाव का फल मात्र समझते थे। अतः माता-पिता की ममता इस बालक पर विशेष रूप से थी।

बालक एकलिंगदास माता-पिता की वात्सल्यमयी गोद में दूज के चाँद की तरह बढ़ने लगा। बाल सुलभ चेष्टाओं और अपनी सुन्दर सुकुमार मुखाकृति से वह अपने माता-पिता को आनन्दित करने लगा।

तत्कालीन व्यवस्था के अनुसार बालक स्कूल में पढ़ने लगा। इनकी बुद्धि बड़ी तीव्र थी। शिक्षक के दिये गये पाठ को ये अल्प समय में ही तैयार कर लेते थे। इनके विनम्र स्वभाव और प्रतिभा से शिक्षक स्वयं चकित थे।

यद्यपि ये माता-पिता की प्रेरणा से पाठशाला में अवश्य पढ़ने जाते थे किन्तु उन्हें इस बाहरी शिक्षा में जरा भी रसानुभूति नहीं होती थी। इनके धार्मिक संस्कार जागृत होने लगे। इनका ध्यान आध्यात्मिक शिक्षा की ओर अधिक जाने लगा। ये प्रतिदिन सामायिक करते, माला फेरते और नया धार्मिक ज्ञान प्राप्त करते। इन्होंने धीरे-धीरे सामायिक, प्रतिक्रमण, स्तवन थोकड़े आदि याद कर लिये।

माता-पिता का वियोग : दस-ग्यारह वर्ष की कोमल अवस्था में ही आप पर माता-पिता के वियोग का वज्रपात टूट पड़ा। माता-पिता के स्वर्गवास से दोनों भाई अनाथ हो गये। पूर्व संचित कर्म को यही इष्ट था। शायद कर्मदशा आपके बचपन से ही आपको स्वावलम्बन का पाठ सिखाना चाहती थी। इसलिए कुदरत ने माता-पिता की स्नेहमयी ममता के आँचल से आपको वंचित रखा। पवित्र, पावन, पुनीत पथ की ओर बढ़ने की आपके जीवन की यह सबसे प्रेरक घटना थी।

अब माता-पिता के वियोग के बाद परिवार का सारा भार आपके जेष्ठ भ्राता मोडीलालजी पर आ पड़ा। श्री मोडीलालजी ने बड़ी कुशलता के साथ घर का भार कार्य संभाल लिया। इन्होंने अपने नन्हें भाई को माता-पिता दोनों का प्यार दिया। वे अपने प्राणों से भी बढ़कर नन्हें भाई को प्यार करते थे। उन्होंने कभी भी बालक एकलिंगदास को माता-पिता का वियोग खटकने नहीं दिया।

धीरे-धीरे अवस्था के बढ़ने के साथ ही साथ बुद्धि की कुशलता और पुरुषार्थ से दोनों भाई जीवन निर्वाह के लिये व्यवसाय करने लगे। व्यवसाय के साथ ही साथ आपका धर्म की ओर भी झुकाव होने लगा। पुद्गलों से ममत्व हटाकर आत्मा के स्वरूप में आपका मन रमण करने लगा।

आपने मुनिराजों के प्रवचनों से प्रभावित होकर रात्रि भोजन, तिथियों में हरी वनस्पति आदि का त्याग कर दिया। संयोगवश मेवाड़ सम्प्रदाय के तत्कालीन प्रखर व्याख्याता, आगमज्ञ, प्रभावक संत शिरोमणि मुनि श्री रिखबचंदजी म.सा. के शिष्य घोर तपस्वी श्री वेणीचंदजी म.सा. का संगेसरा गाँव में आगमन हुआ। मुनिश्री के शुभागमन से सारा गाँव हर्षित होकर मुनिश्री की सेवा में जाने लगा। गाँव वाले उनके

सारगर्भित व्याख्यान सुनकर अपने आपको धन्य मानने लगे। श्री एकलिंगदासजी भी प्रतिदिन नियमित रूप से मुनिश्री का प्रवचन सुनने जाने लगे। उनके प्रवचन ने श्री एकलिंगदास जी के कोमल हृदय में रहे हुए वैराग्य के बीज को अंकुरित और पल्लवित कर दिया। आपका चित्त संसार से एकदम विरक्त हो गया।

आपने एक दिन व्याख्यान के बीच खड़े होकर मुनिश्री से विनम्र प्रार्थना की - "तरण तारण गुरुदेव ! आपके उपदेश ने मुझे जागृत कर दिया है। मैं जन्म, जरा, व्याधि आदि के दुःखों से अत्यन्त संतप्त हूँ; अतः अब आप मुझे भी वीतराग प्रभु के मार्ग में दीक्षित कर मेरा उद्धार कीजिये।"

उस समय आपकी उम्र तीस वर्ष की थी। उभरती हुई जवानी में त्याग मार्ग की बात सुनकर सभी उपस्थित जन समूह स्तब्ध हो गया। भाई मोडीलालजी को जब इस बात का पता चला तो वे दौड़े हुए वहाँ आये और लघु भ्राता से बोले- "भाई। यहाँ कौनसी कमीं है जो तुम साधु बनने जा रहे हो? मैं तो तेरे लिये नववधु लाने के स्वप्न देख रहा हूँ।"

श्री एकलिंगदास जी ने धीमे स्वर में कहा - "मेरे पूज्य भाई ! आपकी शीतल छाया में दुःख की दोपहरी का अनुभव नहीं हो सकता फिर भी किसी से जन्म-मरण की पीड़ा को भुलाया नहीं जा सकता। उसके लिये मुझे घर का मोह तो छोड़ना ही होगा।"

त्याग और राग में विरोध होता ही है। आपके इन विचारों के कारण बन्धु-बान्धवों ने दीक्षा के विरूद्ध प्रपंच फैलाना शुरू कर दिया। "श्रेयांसि बहु विघ्नानि" इस उक्ति के अनुसार आपकी दीक्षा रोकने के कई प्रपंच किये गये परन्तु जिस व्यक्ति की तीव्र भावना होती है, उसे कौन कब तक रोक सकता है?

आपने अत्यंत मधुरता के साथ शान्त और निश्चल भाव से सबको स्नेहपूर्वक समझाया। अन्ततः आपके दीक्षा के उत्कृष्ट भाव के सामने, सबको नतमस्तक होना पड़ा। परिणाम स्वरूप भाई मोडीलालजी ने अत्यंत दुःखी हृदय से दीक्षा का आज्ञा पत्र लिख दिया।

आपकी दीक्षा का मुहूर्त फागुन सुदी 1 का तय हुआ। दीक्षा का समय और स्थान के निश्चित होने के बाद भी बड़े भाई ने दीक्षा को कुछ दिन आगे बढ़ा देने की प्रार्थना की। उस समय विदुषी महासतीजी श्री नगीनाजी भी वहाँ विराजमान थी। उन्होंने कहा - "शुभस्य शीघ्रम्" शुभ कार्य में लाख विघ्न आते हैं; अतः अब ऐसे शुभ कार्य में विलम्ब करना उचित नहीं है। आखिर महासतीजी की दीर्घदृष्टि के सामने सबको झुकना पड़ा।

जिस मंगलमय शुभ घड़ी की प्रतीक्षा हो रही थी वह आ पहुँची। वि.सं. 1947 की फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा मंगलवार के दिन आपकी दीक्षा जैन जगत् के महान् संत श्री वेणीचन्दजी म.सा. के पावन सान्निध्य में समारोह के साथ आकोला (मेवाड़) में सानन्द सम्पन्न हुई। दीक्षा के शुभ अवसर पर आकोला तथा आस-पास का जनसमूह उमड़ पड़ा। दीक्षा विधि की समाप्ति के पश्चात् श्री वेणीचन्दजी म.सा. ने विहार कर दिया। दीक्षा होने के सात दिन के पश्चात् आपके बड़े भ्राता श्री मोडीलालजी का स्वर्गवास हो गया।

दीक्षा धारण करने के पश्चात् नवदीक्षित मुनि श्री एकलिंगदासजी ने विद्याध्ययन आरम्भ किया। विदुषी महासती श्री नगीनाजी ने लगातार तीन वर्ष तक आपको शास्त्रीय ज्ञान करवाया। इसके बाद आपने अपनी बुद्धि की प्रतिभा, परिश्रम और गुरुदेव की कृपा से खूब अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। आप जैन आगमों के प्रकाण्ड विद्वान् बन गये। आपने अपने हाथ से अनेक शास्त्र और ग्रन्थों का आलेखन किया।

वि.सं. 1977 का चातुर्मास नाथद्वारा में हुआ। यहाँ चातुर्मास काल में 2000 बकरों को अमर किया गया। इस चातुर्मास के बाद रायपुर पथारे, जहाँ पावनमूर्ति श्री मांगीलालजी एवं उनकी मातुश्री मगनबाई की दीक्षा वैशाख सुदी 2 को सम्पन्न हुई।

अंतिम यात्रा : वि.सं. 1987 का चातुर्मास करने के लिये आप पूज्यश्री उंटाला पधारे। इस चातुर्मास में आपके शरीर पर रोग का आक्रमण हुआ। औषधोपचार करने पर भी शान्ति न हो सकी। इस वर्ष आप प्रायः अस्वस्थ ही रहा करते थे, चातुर्मास काल में व्याधि ने खूब जोर पकड़ा। उस समय आपकी सेवा में आठ सन्त थे।

इन सन्तों में पंडित श्री जोधराजजी महाराज की सेवा-भक्ति सर्वोपरि थी। रात-दिन गुरुदेव की सेवा में उपस्थित रहकर

उनकी सेवा में रत रहते थे। एक क्षण के लिए भी वे गुरुदेव को नहीं छोड़ते थे। भयंकर व्याधि और असह्य पीड़ा होने पर भी पूज्यश्री आत्मा और देह के विनश्वर संयोग का विचार करते हुए शान्ति के साथ वेदना सहन करते थे।

पूज्यश्री इस रूग्णावस्था में भी अपनी मानसिक दृढ़ता के कारण प्रातःकाल और रात्रि के प्रतिक्रमण बड़े ध्यान से सुनते थे। सावण वदि 1 के दिन प्रातःकाल आपकी वेदना और भी बढ़ गई। सैंकड़ों श्रावक पूज्यश्री की सेवा में उपस्थित हो गये। पूज्यश्री ने उत्तरोत्तर कमजोरी बढ़ती हुई देखकर संथारा ग्रहण करने की इच्छा व्यक्त की। पूज्यश्री की इच्छानुसार संघ की सम्मति से उन्हें आलोचना पूर्वक संथारा कराया। पूज्यश्री ने समस्त संघ से क्षमायाचना की और पंच परमेष्ठी के ध्यान में लीन हो गये। अंततः 9 बजे पूज्यश्री का आत्मा रूपी हंस स्वर्ग रूपी मानसरोवर की ओर उड़ गया।

पूज्यश्री के नश्वर देह को अग्नि भस्मसात् कर गई किन्तु उनके यशः शरीर को भस्मसात् करने में वह समर्थ न हो सकी। पूज्यश्री का जीवन भी आदर्श था और उनकी मृत्यु भी आदर्श थी। ऐसे महामानव मरकर भी सदा के लिए अमर हो जाते हैं। आज मेवाड़ संप्रदाय का एक दीपक सदा के लिये बुझ गया। मेवाड़ का भाग्य ही कमजोर है जो तीन महीने की अवधि में दो मेवाड़नाथ मेवाड़ की गोद से ले गये। यानी आपके स्वर्गवास के तीन महीने पूर्व एक मेवाड़नाथ हिन्दवा-सूर्य महाराणा फतहसिंहजी बहादुर का स्वर्गवास हो गया था।

वस्तुतः पूज्यश्री बड़े दयालु, शान्त स्वभावी, तपस्वी थे। आपका कद लम्बा था। आप अखण्ड ब्रह्मचारी थे। आपके समय में संप्रदाय की नींव मजबूत हुई। आपने पाँच वर्ष तक लगातार एकान्तर तप किये। आपने कई प्रकार की तपस्या की। मेवाड़ी जनता आपश्री की चिरऋणी है। जिससे उऋण होना दुष्कर है। आपका यश सदैव अमर रहेगा।

साभार :- स्थानकवासी जैन शासन
की दिव्य विभूति ...

❖❖

भगवान ऋषभदेव का संदेश : सुखी कैसे बनें ?

बात 17 फरवरी 2002 की है। प्रख्यात जैन संत सिद्धांत चक्रवर्ती दिगम्बर आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज विश्वासनगर में विराजमान थे। एक भक्त उनके दर्शनार्थ गया और धर्मचर्चा चली तो उनका ज्ञानस्त्रोत निम्न शब्दों में फूट पड़ा - 'आज सारी दुनिया में लोग दुःखी हैं, कोई पैसे की कमी से दुःखी है तो कोई पैसे की अधिकता से भी कम दुःखी नहीं है। पांच प्रतिशत लोग भी सुखी नहीं है। सुखी बनने का तरीका प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ ने बताया था। उन्होंने अपने सभी पुत्रों को चार शिक्षाएं दी थी कि स्वयं को बदलो, स्वाबलंबी बनो ! स्वतंत्र रहो ! हर परिस्थिति में मुस्कुराओ !!

लोग दूसरों को सुधारना चाहते हैं सब सारी दुनिया को बदलने में लगे हैं पर ऐसा कर नहीं पाते, इसलिए स्वयं को बदलने, सुधारने में ही सच्चा सुख है। अपनी बागडोर किसी और के हाथ में मत दो। स्वावलंबी बनो। अपनी इच्छा के अनुसार खाओ-पियो, दूसरों की चिंता मत करो। होनहार बलवान होता है जो होना है होके रहेगा। किसी भी परिस्थिति में डरना या घबराना नहीं सभी परिस्थितयों में हंसते रहो, मुस्कुराते रहो। कहां तो श्रीराम के राज तिलक की तैयारी हो रही थी सर्वत्र खुशी, हर्ष का वातावरण और उसी समय उन्हें वनवास हो गया। राम मुस्कुराते रहे। श्रीकृष्ण का जीवन भी बड़ा दुःख भरा रहा, जेल में जन्म लिया, कोई मंगल गीत गाने वाला भी नहीं था, कभी सारथी बने और अंत में जराकुमार की तीर से मरे तो कोई रोने वाला भी नहीं था। आज लोग मंदिरों में हजार-पांच सौ दान देते हैं तो चाहते हैं कि नाम पत्थरों पर लिखा जाए और जब उनका नाम थाने में लिखा हो तो उसे कटवाने को बीस-तीस हजार तुरन्त दे देंगे। वाह रे मनुष्य, तेरी केसी विचित्र गति? सारांश यही है कि यदि हमें सुखी बनना है तो महापुरुषों की शिक्षाओं को अपने आचरण में उतारना होगा। ❖❖

प्रथम अध्याय : ज्ञान

- आगम रत्नाकर, विद्या वाचस्पति, पूज्य प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनिजी म.सा.

जीवाढ़ि तत्त्व जानने के अन्य उपाय

सत्संख्याक्षेत्रस्पर्शनकालान्तरभावाल्पबहुत्वैश्च ।। 8।।

अर्थ-सत्, संख्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव और अल्पबहुत्व, इन अनुयोग द्वारों से भी सम्यग्दर्शनाढ़ि विषयों का तथा जीवाढ़ि तत्त्वों का ज्ञान होता है।

विवेचन - इस सूत्र में जीवादि को जानने के और भी उपाय बताए गए हैं। ये उपाय सत्, संख्या आदि से आठ हैं-

1. सत् - सत्ता, अस्तित्व या अवस्थिति सत् से संज्ञायित है। सम्यग्दर्शन की सत्ता या अस्तित्त्व तो गुण रूप से प्रत्येक जीव में विद्यमान है, पर उसका आविर्भाव केवल भव्य जीवों में होता है, अभव्यों में नहीं।

2. संख्या - इस उपाय में सम्यग्दर्शन के भेदों की गिनती की जाती है। सम्यग्दर्शन की गिनती उसे प्राप्त करने वालों की संख्या पर निर्भर है। भूत और भविष्य में अनन्त जीवों ने सम्यग्दर्शन प्राप्त किया है और आगे भी अनन्त जीव करेंगे, इस दृष्टि से सम्यग्दर्शन संख्या की दृष्टि से अनन्त है।

3. क्षेत्र - सम्यग्दर्शन का क्षेत्र सम्पूर्ण लोकाकाश की अपेक्षा उसका असंख्यातवाँ भाग है।

4. स्पर्शन- इसका अभिप्राय है तीनों काल में विचरने का क्षेत्र। यानि निवास स्थान रूप आकाश के चारों ओर के प्रदेशों को छूना (स्पर्श करना)।

क्षेत्र में केवल आधारभूत आकाश ही आता है जबकि स्पर्शन में आधार क्षेत्र के चहुँ ओर के आधेय द्वारा स्पर्शित आकाश-प्रदेश भी है। सम्यग्दर्शन का स्पर्शन क्षेत्र भी लोक का असंख्यातवाँ भाग है, किन्तु यह भाग उसके क्षेत्र की अपेक्षा कुछ बड़ा होता है। क्योंकि इसमें क्षेत्र-भूत आकाश पर्यन्त प्रदेश भी सम्मिलित हैं।

5. काल। ठहरने की अवधि को काल कहते हैं। काल की दृष्टि से सम्यग्दर्शन अनादि अनन्त है। तीनों कालों (भूत, वर्तमान, भविष्य) में सम्यग्दर्शन का आविर्भाव था (अतीत में), है (वर्तमान में) और रहेगा (भविष्य में)।

6. अन्तर - अन्तर यानि विरहकाल का अभिप्राय है सम्यक्त्व का अभाव। जब और जिस काल में जीव को सम्यग्दर्शन न हो। एक जीव की अपेक्षा से सम्यग्दर्शन का विरहकाल कम से कम एक अन्तर्मुहूर्त यानी अड़तालीस मिनट और अधिक से अधिक अपार्द्ध-पुद्गल परावर्तन जितना समय है तथा अनेक जीवों की अपेक्षा से तो विरहकाल बिल्कुल भी नहीं होता क्योंकि अनेक जीवों में किसी न किसी को सम्यग्दर्शन होता ही रहता है।

7. भाव - जीव के परिणाम को भाव कहते हैं। क्षायिक, क्षायोपशमिक और औपशमिक भावों में सम्यग्दर्शन पाया जाता है। इन भावों से ही सम्यग्दर्शन की शुद्धता का बोध होता है।

8. अल्प-बहुत्व - इसका अर्थ है कम और अधिक होना। एक-दूसरे की अपेक्षा तुलना करके एक को न्यून, दूसरे को अधिक बतलाना अल्प-बहुत्व है।

सम्यग्दर्शनधारी जीवों की अपेक्षा से औपशमिक सम्यग्दर्शन सबसे न्यून, क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन इससे असंख्यात गुणा और क्षायिक सम्यग्दर्शन अनन्तगुणा होता है। इसके अनन्तगुणा होने का कारण यह है कि यह जीव के साथ सिद्ध अवस्था में भी रहता है और सिद्ध (मुक्त) जीव अनन्त हैं। इस प्रकार क्षायिक सम्यग्दर्शन एक बार होने के बाद सदा रहता है।

सम्यग्दर्शन को जानने के अन्य आठ उपाय

सत्	संख्या	क्षेत्र	स्पर्शन	काल	अंतर	भाव	अल्प–बहुत्व
(आस्तित्व) सभी जीवों में आविर्भाव केवल भव्य जीवों में	(गिनती) अनन्त	(वर्तमान निवास) लोक का असंख्यातवाँ भाग	(तीन कालों में विचरण क्षेत्र) लोक का असंख्यातवाँ) भाग (परन्तु क्षेत्र से बड़ा)	(अवधि) एक जीव की अपेक्षा से सादि–सान्त सब जीवों की अपेक्षा से अनादि अनन्त	(विरह काल) एक जीव की अपेक्षा से जधन्य अन्तर्मुहूर्त्त सब जीवों की अपेक्षा से उत्कृष्ट अपार्द्ध–पुद्गलपरावर्त	(परिणाम) औपशमिक, क्षायोपशमिक, क्षायिक	(कम–ज्यादा की तुलना करना) औपशमिक, सबसे अल्प, क्षायोपशमिक औपशमिक से संख्यातगुण, क्षायोपशमिक से क्षायिक असंख्यातगुण

नोट- अनुयोग द्वार, सूत्र 80 में इन उपायों की संख्या नौ है। यथा-

अणुगमे नवविहे पण्णत्ते, तंजहा-संतपयपरूवणया, दव्वपमाणे च खित्त, फुसणा य कालो य, अंतर, भाग, भाव, अप्पा बहुंचैव।

अर्थात् **1.** सत्पदप्ररूपणा, **2.** द्रव्यप्रमाण, **3.** क्षेत्र, **4.** स्पर्शन, **5.** काल, **6.** अन्तर, **7.** भाग, **8.** भाव, **9.** अल्पबहुत्व।

इसमें 'भाग' शब्द अधिक है। आचार्य उमास्वाति ने द्रव्य प्रमाण के साथ 'संख्या' में आगमगत 'भाग' का अन्तर्भाव कर लिया है। दिगम्बराचार्य पूज्यपाद ने 'सर्वार्थसिद्धि' में सम्यग्दर्शन और जीवादि तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप को जानने के लिए उपायों में मार्गणास्थान और गुणस्थानों की अपेक्षा से भी विचार किया है।

सम्यग्ज्ञान के प्रकार

मतिश्रुताऽवधिमनः पर्यायकेवलानि ज्ञानम् ।। 9।।

अर्थ-मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्याय और केवल-ये पाँच ज्ञान हैं।

विवेचन- इस सूत्र में सम्यग्ज्ञान के पाँच प्रकार बताए गए हैं।

1. मतिज्ञान - मन और इन्द्रियों के सहयोग से पदार्थों का जो ज्ञान होता है, उसे मतिज्ञान कहते हैं। इसमें पाँचों इन्द्रियों (स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु और कर्ण) में से कोई भी एक इन्द्रिय निमित्त हो सकती है। मतिज्ञान एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय जीवों तक में होता है।

2. श्रुतज्ञान- यह ज्ञान मतिज्ञानपूर्वक होता है। मतिज्ञान से ज्ञात पदार्थ से सम्बन्ध रखने वाले किसी दूसरे पदार्थ के ज्ञान को श्रुतज्ञान कहा जाता है। जैसे-मतिज्ञान से 'घट' को जाना, फिर अपनी बुद्धि आदि से यह जाना कि यह 'घट' पानी आदि द्रवों के भरने के काम का है अथवा उस एक 'घट' के समान या असमान जो अन्य बहुत से 'घट' है, उनको जाना, यह जानना श्रुतज्ञान है।

3. अवधिज्ञान- द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की मर्यादा लिए हुए रूपी पदार्थ (स्पर्श, गन्ध, रस, वर्ण वाले पदार्थ) को प्रत्यक्ष जानने वाले ज्ञान को अवविज्ञान कहते हैं।

4. मनःपर्यायज्ञान- मनुष्य लोक में वर्तमान जीवों के मन में स्थित जो रूपी पदार्थ हैं, जिनका उन जीवों ने विचार किया है या विचार कर रहे हैं अथवा भविष्य में विचार करेंगे उनको स्पष्ट जानने वाले ज्ञान को मनः पर्याय ज्ञान कहते हैं। अर्थात् दूसरे के मन के विचारों-भावों को जिसके द्वारा जीव प्रत्यक्ष जानता है, वह मनः पर्याय ज्ञान है।

5. केवलज्ञान- सब द्रव्यों की सब पर्यायों को एक साथ स्पष्ट जानने वाला ज्ञान, केवलज्ञान है। केवलज्ञान में समस्त लोकालोक और तीनों काल-भूत-भविष्य-वर्तमान के समस्त पदार्थों के हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष जाना जाता है। मतिज्ञान आदि पाँचों ज्ञान सम्यक् हैं। **तत् प्रमाणे ।।10।।**

अर्थ-वह पाँचों ज्ञान प्रमाण है।

विवेचन- प्रमाण द्वारा पदार्थों का भलि-भाँति ज्ञान प्राप्त किया जाता है। सूत्र में **'प्रमाणे'** कहा गया है, इसका अर्थ है प्रमाण द्विवचन में प्रयुक्त है। यानि प्रमाण के दो प्रकार हैं- एक प्रत्यक्ष प्रमाण और दूसरा परोक्ष प्रमाण। इन्हीं दो में प्रमाण के समस्त भेद अंतर्निहित हैं। इन्द्रिय प्रमाण नहीं हो सकती। क्योंकि इन्द्रिय का सम्बन्ध तो सामने वर्तमान स्थिर स्थूल पदार्थ के साथ ही हो सकता है। इन्द्रियाँ पदार्थ को छूकर जानती हैं जबकि मन और चक्षु दूर रहकर ही उसे जानते हैं। अतः ज्ञान ही प्रमाण है। साभार :- तत्त्वार्थ सूत्र...

(... शेष आगे

लेन-देन में शुचिता और इच्छा परिमाण व्रत आवश्यक है !

- साहित्य दिवाकर पूज्य डॉ. श्री सुरेन्द्रमुनिजी म.सा.

हमारे जीवन में हमारी संस्कृति में मान्य पुरुषार्थ है, इनमें भी अर्थ और काम का परस्पर घनिष्ठ संबंध है।

काम (इच्छा) की पूर्ति के लिए अर्थ/पदार्थ की आवश्यकता होती है तथा अर्थ की प्राप्ति काम को जन्म देती है, फिर उस काम की पूर्ति के लिए अर्थ/पदार्थ की आवश्यकता होती है। इस प्रकार अर्थ एवं काम का चक्र सतत् चलता रहता है। अर्थ का सम्बन्ध बाह्य पदार्थों एवं उनकी प्राप्ति के उपायों से है। इसी की भित्ति पर संसार का अर्थशास्त्र खड़ा है। अर्थशास्त्र में पदार्थों के उत्पाद, वितरण, व्यापार एवं उपभोक्ता का विचार किया जाता है तो धर्मशास्त्र में उत्पाद और ध्रौव्य मान्य है।

यहाँ मैं अर्थशास्त्र नहीं समझाना चाहता। मगर लेन-देन में शुचिता और संयम पर संकेत अवश्य कर रहा हूँ। जैन कॉन्फ्रेंस से जुड़े भक्त और समाजसेवी इस बात पर प्रमुख रूप से ध्यान दें कि अर्थशास्त्र, शास्त्र तब कहलाता है जब उसका चिन्तन मानवीय मूल्यों की संरक्षा की अपेक्षा रखकर होता है। मनुष्य सुख की प्राप्ति के लिए अर्थ का अर्जन एवं संग्रह करता है, परन्तु वह शान्ति से वंचित रहता है। जब शान्ति की अपेक्षा रखकर अर्थशास्त्र का प्रतिपादन किया जाता है तो उसे सापेक्ष अर्थशास्त्र कहा जाता है। सापेक्ष अर्थशास्त्र में हिंसा, झूठ, चोरी, परिग्रह आदि दोषों/पापों का परिहार किया जाता है। वर्तमान में जिस अर्थशास्त्र का प्रतिपादन किया जा रहा है, उसमें हिंसा, झूठ, चोरी, नीति अनीति आदि की उपेक्षा रहती है। भगवान् महावीर के सिद्धातों का समावेश करते हुए जिस अर्थशास्त्र का विकास हो सकता है, वह सापेक्ष अर्थशास्त्र है। जो हमारी उत्कृष्ट छवि के लिए परमावश्यक है, सच्ची सुख शांति के लिए आवश्यक है।

हम चूंकि एक सामाजिक प्राणी है। बुद्धि सम्पन्न होने के कारण पदार्थों की प्राप्ति में हमारी गहरी रूचि है। संसाधनों का अंबार लगा लेना, नित नई सुविधा को खरीद लेना हमारी पहली चाहत बन गया है। यहां यदि हम विवेक से काम लेंगे तो मितव्ययी बनकर सुखद तनावमुक्त जीवन जी पाएंगे। आज हो क्या रहा है कि जिसमें जितनी अधिक क्रय शक्ति, वह उतना अधिक आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ माना जाता है। सम्प्रति सम्पन्नता का यह आधार अर्थ-संग्रह एवं क्रय-क्षमता को माना जा रहा है। यही कारण है कि मनुष्य अधिकाधिक अर्थ संग्रह कर अपने आपको सुरक्षित अनुभव करता है। इन बाह्य पदार्थों के संग्रह हेतु जिसकी जितनी अधिक क्षमता होती है अथवा जो इनसे युक्त होता है, उसे समाज में प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है एवं समृद्ध भी समझा जाता है, क्योंकि वह पदार्थ-संग्रह की दृष्टि से दूसरों की अपेक्षा सुदुढ़ है, धनी है, सम्पन्न है।

इसी से जुड़ा दूसरा पहलू है कामेच्छा या वासना। मनुष्य में इच्छाओं की श्रृंखला सतत् चलती रहती है। वह इन इच्छाओं की पूर्ति बाह्य पदार्थों से करता है। इच्छाओं का संसार आवश्यकताओं से बड़ा है। शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति में इतनी कठिनाई नहीं है, किन्तु नित नवीन इच्छाओं का जन्म मनुष्य को दुःखी एवं अशान्त बनाए रखता है। उसे ये इच्छाएँ सक्रिय भी रखती है, किन्तु इन इच्छाओं या कामनाओं की दिशा क्या होनी चाहिए, यह निर्णय धर्म के आधार पर होता है। इसलिए अर्थ एवं काम को धर्म से नियन्त्रित किए जाने की आवश्यकता है। जब कामनाएँ विवेक रूपी धर्म से नियन्त्रित नहीं होती है तो वे दुःख की कारण बन जाती है।

अर्थ-तंत्र का विकास काम पुरुषार्थ पर प्रतिष्ठित है। आज इस सूत्र को औद्योगिक उत्पादकों द्वारा खूब अपनाया जा रहा है। विज्ञापनों के माध्यम से मनुष्य में विशिष्ट उत्पाद को प्राप्त करने के लिए कामना/इच्छा उत्पन्न की जाती है। इस इच्छा के उत्पन्न होने पर मनुष्य उस विशिष्ट उत्पाद को जुटाने हेतु प्रयत्नशील होता है और बाजार में उस उत्पाद का विक्रय अर्थतंत्र के विकास को नया आयाम देता है। जितनी बाह्य पदार्थों की मांग बढ़ती है, उनकी पूर्ति हेतु उतना ही अर्थ का व्यापार विकसित होता है। काल्पनिक मांग के आधार

पर भी वायदा व्यापार के रूप में व्यापारिक तंत्र बढ़ रहा है, जो कभी भी ढह सकता है एवं धोखा दे सकता है।

विचारणीय प्रश्न अर्थ का महत्व : प्रश्न यह है कि मनुष्य अर्थ के प्रति इतना आकृष्ट क्यों है? उत्तर में कहा जा सकता है कि अर्थ/पदार्थ से मनुष्य को सुख एवं सुविधा की प्राप्ति होती है। कौटिल्य ने अर्थ को सुख का हेतु स्वीकार किया है। **तत्त्वार्थ सूत्र** में भी उसे साता-असाता रूपी सुख-दुख का हेतु माना गया है। सुख एवं सुविधाओं के लिए मनुष्य लालायित रहता है। अतः वह सुखकारी पदार्थों एवं अर्थ के अधिकारिक संग्रह के लिए प्रवृत्त होता है, जो व्यक्तिगत अशान्ति एवं वर्ग संघर्ष को जन्म देता है। यही नहीं वह विलासिता को अपनाकर स्व एवं पर की हानि करता है। विडम्बना यह है कि जिन व्यक्तियों में कामनाएँ कम हैं, उन्हें आज पिछड़ा समझा जाता है तथा जो अधिक कामनाओं के साथ अर्थसंग्रह करके जीता है, उसे प्रगतिशील, अग्रसर माना जाता है। मेरी राय में यह भ्रांति है, अशांति का कारण है।

मनुष्य का विकास सम्यक् रीति से तभी हो सकता है जब तक वह जीवन के प्रति यही सोच का विकास करें। प्राचीन काल में इसे ही धर्मशिक्षा अथवा अध्यात्म शिक्षा का नाम दिया गया। मनुष्य को यह समझाने की आवश्यकता है कि इन्द्रियों के द्वारा पदार्थों के सेवन से जो सुख उपलब्ध होता है वह क्षणिक है तथा अशान्त बनाने वाला है। इन विषयों के प्रति अधिक लोलुप बनने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए विषय पदार्थों की प्राप्ति के समय कामनाओं का मूल्यांकन करना चाहिए कि मेरे लिए कौन-सी इच्छाएँ या कामनाएँ पूर्ण करना आवश्यक है तथा कौन-सी कामनाओं को पूर्ण किए बिना भी सुख से रहा जा सकता है। दूसरी बात यह है कि इन कामनाओं या इच्छाओं की पूर्ति हेतु नैतिक विधि क्या होगी, जिससे अन्य मनुष्यों एवं प्राणियों का जीवन बाधित न हो। इस पर विचार करना आवश्यक है। ❖❖

माँ का दुःख

बात आजादी के पहले की है। कोहिमा और इम्फाल के पहाड़ी प्रदेश में70 वर्ष की एक बुढ़िया और उसका बेटा रहते थे। उन्हीं दिनों नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने हरघर से एक व्यक्ति के सेना में भर्ती होने की अपील की, ताकि देश को अंग्रेजी शासन से मुक्ति दिलाई जा सके। बूढ़ी माँ की इच्छा थी कि उसका बेटा भी देश के काम आए। मां की इच्छा को जानते हुए पुत्र ने खुशी-खुशी सेना में भर्ती होने की ठानी।

अगले ही दिन वह युवक नेताजी की फौज में भर्ती होने के लिए रंगरूटों की पहली पंक्ति में खड़ा था। कर्नल के पूछने पर उसने अपना नाम अर्जुन सिंह तथा आयु 20 वर्ष बताई जब कर्नल को पता चला कि वह अपनी मां का इकलौता पुत्र है, तो कर्नल ने उसे सेना में भर्ती करने से इंकार कर दिया, क्योंकि नेताजी की आज्ञा थी कि घर के अकेले युवक को भर्ती न किया जाए। उस युवक ने कर्नल से बहुत अनुनय-विनय किया कि वे उसे सेना में भर्ती कर लें परन्तु नेताजी की सेना में भर्ती न होने से माँ को बहुत दुःख हुआ और इस दुःख में वह परलोक सिधार गई। दूसरे दिन युवक फिर रंगरूटों की पंक्ति में जाकर खड़ा हो गया। कर्नल को जब यह पता चला कि युवक को सेना में भर्ती न किए जाने के दुःख में उसकी माँ यह कहकर मर गई कि - 'मैं तुम्हारी माँ नहीं मैं तो तुम्हारे मार्ग की बाधा हूँ। तुम्हारी असली माता तो भारत माता है।' तो कर्नल को बहुत दुःख हुआ।

उसने युवक की वीर माता को सलामी देकर श्रद्धांजलि दी और युवक को सेना में कप्तान नियुक्त कर लिया। ❖❖

शुद्धाचार एवं शालीनता से बढ़ता है सम्मान !

- पू. श्री प्रबुद्धमुनि जी म.सा.

समाज में धन सम्पदा, वैभव संसाधन से सम्मान नहीं बढ़ता, सम्मान बढ़ता है शुद्धाचार से निर्मल व्यवहार से परस्पर प्रेम और सहजना से। इसके विपरीत विद्वान है, धनी है, ज्ञानी है तपस्वी है ऊँची पद पदवी पर बैठा साधक है या सामाजिक पद प्रतिष्ठा से बड़ा कहलाने वाला अधिकारी है, मगर वाणी में शुष्क है, व्यवहार में भी छोटेपन वाला है तो जनप्रिय नहीं हो सकता।

वास्तव में जीवन के आधारभूत सिद्धांत है :- ज्ञान-दर्शन-चारित्र है। ज्ञान दर्शन से ज्यादा महत्वपूर्ण है चारित्र यानी आचरण। एक व्यक्ति है जिसमें ज्ञान तो खूब है, विषय की विशद जानकारी है, पर यदि आचरण नहीं तो उस ज्ञान का क्या मूल्य ?

बन्धुओं हम भगवान महावीर के अनुयायी है। वे हमारे परम आराध्य है क्यों? क्योंकि हम जानते और मानते है कि प्रभु प्रभु का ज्ञान कैसा, दर्शन कैसा, चारित्र कैसा? प्रभु को अनेक नाम से संबोधित किया गया है। हम महावीर कहें, वर्द्धमान कहें, श्रमण कहें, श्रमण कहें, ज्ञात पुत्र कहें। इस तरह के कई नाम हैं। ज्ञान और चारित्र में क्या अंतर है, इसे समझने के लिए एक छोटा सा रूपक है।

एक राजा ने अपने पंडित से पूछा - ज्ञान बड़ा या आचरण? पंडित जी ने कहा - राजन् ! इसका दो दिन में जवाब दूँगा। वह राज दरबार का पंडित था। पंडित के आने पर स्वयं राजा खड़ा होकर सम्मान देता था। पंडित ने कोषाध्यक्ष के पास से एक स्वर्ण मुद्रिका उठा ली। कोषाध्यक्ष देख रहा था। पर, बोला कुछ नहीं, क्योंकि राजा पंडितजी का सत्कार करता है। दूसरे दिन पंडितजी ने फिर एक स्वर्ण मुद्रिका उठा ली। ये चोरी ही उनकी आदत बन गई तो राजा को बात बताई गई। पंडित के आने पर राजा न तो खड़ा हुआ और न ही स्वागत सत्कार दिया। उलटा कहा - ऐसा काम करते हो !

पंडित को पता चल गया कि राजा को वृतान्त ज्ञात हो गया है। पंडित बोला राजन् ! मैं तो आपके प्रश्न का उत्तर दे रहा था। आपने देखा - "आचरण से गिर जाने वाले का सम्मान नहीं होता, भले ही उसे ज्ञान कितना ही क्यों न हो।"

यहाँ यह भी महत्वपूर्ण है कि कार्य करने का लक्ष्य क्या है? उपरोक्त प्रसंग में शिक्षा देना, सच का प्रमाण देना हमारा लक्ष्य है। अतः पंडित ने ये ही माध्यम चुना।

पर ना राजा अविनीत था, ना पंडित चोर ! मगर यही पाप किसी कच्चे लोभ के कारण होता तो आचरण पर दाग बन जाता। अतः याद रखना शुद्धाचार और सम्मान एक ही सिक्के के दो पहलु है। मगर व्यवहार में शालीनता भी आवश्यक है। ❖❖

जैन प्रकाश में आध्यात्मिक प्रस्तुति के हेतु प्रकाशनार्थ रचनाएं एवं समाचार भेजें

जैन प्रकाश पत्रिका को आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान करने हेतु धार्मिक - आध्यात्मिकक - सामाजिक एवं सामायिक रचना के समर्थ रचनाकारों से निवेदन है कि अहिंसा धर्म के परिसर में होने वाली प्रत्येक धारणा को अपनी कलम से संजोकर प्रकाशनार्थ भेजें। रचनाएं संक्षिप्त हो, स्पष्ट हो, पेज के एक तरफा दी गई हों, ऐसी सभी रचनाओं का और रचनाकारों का हृदय से स्वागत है।

आपसे यह भी निवेदन है कि आपके क्षेत्र में होने वाले धार्मिक, सामाजिक कार्यक्रमों का समाचार संक्षिप्त रूप में बनाकर फोटो आदि हमें ई-मेल aissjc1906@gmail.com पर प्रेषित करें। पत्रिका में विषयानुसार के अनुसार सभी को उचित स्थान सम्मान देने का हमारा प्रयास रहेगा। ❖❖

साधक को भी भीड़ सुहाती है !

- पू. डॉ. श्री समकितमुनि जी म.सा.

साधना कहीं से भी, कभी भी किसी आलम्बन की मोहताज नहीं है। यह यथार्थ सत्य है कि साधना मार्ग में, आत्मा के हित को साधने के मार्ग में साधक को दुनिया स्वार्थी नहीं, अपनी सहकारी प्रतीत होती है। संसार की सच्चाई दिखाकर वह संसार से मुक्त होने की प्रेरणा प्रदान करती है, संसार से लिये कर्ज को चुकाने का अवसर प्रदान करती है, शाश्वत सुखों को प्रकटाने में सहकारी बनती है वहीं कदाचित ऐसा भी सुनने को मिलता है, यह तो हवाई उडान है, कपोल कल्पनाएं हैं, कहां संभव है ऐसा? आज तो चारों तरफ भीड़ में, नये-नये संबंध बनाने में, मित्र बनाने में सांसारिक प्राणी जुड़े हैं। वहाँ कौनसा श्रावक अकेला साधना करता नज़र आता है? साधु-साध्वियाँ भी जहां भक्तों की संख्या कम आती हो, स्थानक सूना सा पड़ा रहता हो, वहां रूकने को, चौमासा करने को कहाँ तैयार है? यदि कोई बताने वाला, बोलने वाला नहीं मिले तो बोरियत लगती है। एकत्व के गान शास्त्रों में ही अच्छे है। अन्दर के रस का स्पर्श नहीं होने तक भले ही यह सही प्रतीत हो सकता है, पर साधना का सत्य कुछ और है जिसे उत्तराध्ययन सूत्र के छठे अध्याय की दूसरी गाथा में कहा गया है :-

समिक्ख पंडिए तम्हा, पास जाइपहे बहू ।
अप्पणा सच्चमेसेज्जा, मित्ति भूएहिं कप्पए ।।

दुःखों से छुटकारे का यही राजमार्ग है। ज्यों-ज्यों साधक अन्तर में जागरूक बनेगा, अपने ध्यान की गहराई में डूबता जायेगा, निःशंक्ति होता चला जायेगा, निःकांक्षित होता चला जायेगा तो सारे जीवों में अपनत्व बढ़ता ही जायेगा। अपने से सत्य का अन्वेषण करेगा। यही जिन सूत्र है, जिन शासन की आचार पद्धति है।

इस भाव भंगिमा से बाह्य पुद्गलों में पराएपन की, बाहरी प्रभाव की अनुभूति होगी, जीव मात्र में शुद्ध आत्मा ही दिखेगी, समस्त प्राणियों में मैत्री की अजस्त्र धारा प्रवाहित होगी। इसीलिये कषाय-मुक्त या कषाय मुक्ति के निकटस्थ यथाख्यात चारित्र और सूक्ष्म संपराय चारित्र वाले कल्पातीत ही होते हैं। इस मार्ग में आगे बढ़ने में यम, नियम और संयम उपयोगी होते हैं। पंच महाव्रत को पातंजल योगसूत्र में यम कहा गया है। निज के लिये नियंत्रण नियम और समूह के लिये नियंत्रण संयम भी आवश्यक है। कषाय का उदय ही यम, नियम एवं संयम की पालना में बाधक होता है, शुक्ल-ध्यान तो खंति, मुत्ति, अज्जवे, मद्दवे की निर्मल आराधना में ही प्राप्त होता है। शुक्ल-ध्यान में शंका, कांक्षा आदि दोष हो ही नहीं सकते, वहां तो एकत्व-अपनत्व की भव्य आराधना होती है।

इस सत्य को सभी आत्मार्थी जानते हैं, फिर भी भौतिक युग के प्रभाव से संयमी भी अपने आस-पास भीड़ पसंद करते हैं। जय जयकार के तुमुलनाद के बिना संयमियों को भी चैन नहीं मिलता। आज एकांत साधना प्रिय साधकों की गिनती अंगुलियों में भी नहीं गिनी जाती। हम स्थानकवासी साधक भी आत्म-साधना से विलग भीड़ तंत्र में भरोसा करने लगे हैं।

❖❖

आत्मा की कीमत

महात्मा गांधी के आध्यात्मिक गुरु श्रीमद् रायचंद प्रवचन कर रहे थे, उसी समय दो सज्जन आकर प्रवचन सुनने लगे और उन्हें अपने व्यसन अनुसार कुछ अन्य चीजों को तत्काल स्वीकार करने की इच्छा हुई। वे दोनों वहाँ से उठकर बाहर आ गए और दूर खड़े रहकर प्रवचन सुनने लगे। उस समय श्रीमद् रायचंद अपने प्रवचनों कह रहे थे कि 'आज आत्मा की कीमत एक पैसे के बारहवें हिस्से के बराबर भी नहीं है।' इस बात को सुनकर वे दोनों सज्जन जो दूर खड़े अपने व्यसन की पूर्ति करने में मगन थे, उन्हें अनुभव हुआ कि हम जो महत्वपूर्ण शिक्षा प्राप्त करने आए थे, उसे प्राप्त न करके निरर्थक व्यसनपूर्ति में लगे हुए हैं, यह ठीक नहीं है। यदि ऐसा ही करना था तो हमें प्रवचन सुनने आना ही नहीं चाहिए था।

कहना नहीं सहना सीखो !

- पू. साध्वी युगल निधि-कृपा जी म.सा.

मानव का जीवन आत्म-कल्याण हेतु एक वरदान स्वरूप उपलब्धि है। अगर ऐशो-आराम एवं भोग विलास ही मात्र इसकी सार्थकता है तो यह प्राप्ति पशुतुल्य है। देह से ऊपर उठकर आत्मा के केन्द्र पर जीने की जो कला है उसे मानव ही पा सकता है। इस आर्ट को आत्मसात् करने का रहस्य बताते हुए श्री आचारांग सूत्र उद्‌बोधन देता है, उपसर्ग एवं कष्टों के मध्य भी जो दुःख का स्पर्श नहीं करता वह कष्ट सहिष्णु साधक एक दिन परम लक्ष्य को प्राप्त करता है। **{देखे आचारांग सूत्र 5/2/152} अतः 'जीवन में कहना नहीं सुनना भी सीखों' इसे अपने जीवन का लक्ष्य वाक्य बनाओ।**

प्रतिकूलता, संकट या मुसीबतों को सुख में रूपांतरित करने का नाम है कष्ट सहिष्णु बनना। माना कि कष्ट कर्माधीन है किन्तु उसमें दुःख का एहसास करना है या उसे सुख में बदलना है यह अपने हाथ में है। अर्थात् परिस्थितियाँ सेल्फ निर्मित नहीं है किन्तु उसे कैसे महसूस करना यह स्टेट ऑफ माइंड होने से अपने पर निर्भर है।

ध्यान दें ! चाहे आप अकेले जीएँ या समाज में रहे, किन्तु विचार, व्यवहार, इच्छा एवं संस्कारों की भिन्नता तो सर्वत्र है। इस वैविध्य में सम रहने का नाम सहिष्णुता है। हालाँकि मुसीबत में सहनशील होना इतना आसान नहीं है। इसलिए आज की जीवन शैली से 'सहना' शब्द मानो उड़न-छू हो गया है। मनुष्य में जीवन की डायरी का वह पन्ना ही फाड़ दिया जहाँ 'सहना' शब्द लिखा गया था। फलतः इन्सान अनचाहा मिलने पर डिप्रेशन में चला जाता है और विपत्ति आने पर अपना दम तोड़ देता है। यहाँ तक कि अनिष्ट की आशंका में मनुष्य आपत्तियों का आकार इतना बड़ा कर लेता है जिसके तले उसका मूल्यावान जीवन भी दब जाता है। रात-दिन आत्महत्या की खबरें इसका प्रकट प्रमाण है।

आज का इन्सान भूल चुका है, जीवन का दूसरा नाम 'कष्ट' है जो विकास की दस्तक है और संभावनाओं की प्रेरणा है। इसीलिए जो प्रतिकूलता को स्वीकारते हैं उनके जीवन में निखार आता है और तेजस्विता जागती है। क्योंकि जब आप दुःख को स्वीकार करोगे तो उसका नेगेटिव पॉवर समाप्त हो जाएगा। अतः ज्ञानी कहते हैं, कष्टों से भागो मत बल्कि कष्टों में जागो। जीवन में आनेवाले संकट पानी में पैदा होनेवाली लहरों जैसे हैं इसलिए न उन्हें पकड़ों और न उनमें उलझो।

याद रखना, जो दुःखों से लड़ेगा उसके दुःख भी दीर्घजीवी बन जायेंगे। कहते हैं, जो कष्टों को न स्वीकारे उसके दुःख आकार में बड़े एवं वजन में भारी हो जाते हैं। कष्टसहिष्णु बनने से दुःख का आकार छोटा हो जाता है और वजन इतना कम कि एक दिन कष्ट स्वयं अपना दम तोड़ देते हैं। इसलिए संकट के समय अपने मन को शरीर, पदार्थ, व्यक्ति और परिस्थिति से ऊपर उठाकर आत्मचिन्तन में लगाना।

मान लो, तेज भूख लगी है और भोजन तैयार नहीं है तो व्याकुल मत होना ! बल्कि उस समय ऐसा चिन्तन करना कि बहुत से त्यागी, वैरागी एवं तपस्वी संत ऐसे हैं जो तप आराधना में मग्न है। आज मुझे भी इस परिस्थिति में तप करने का सौभाग्य सहज प्राप्त हो रहा है। साथ ही उन गरीबों को भी स्मृति में लाना जिन्हें भोजन नसीब नहीं होता। वे कैसे भूख के दुःख को सहते होंगे? मुझे रोज तो समय से पहले भोजन मिल जाता है आज तनिक देरी हो गई तो क्या हुआ?

बीमारी की अवस्था में सहिष्णु बनना हो तो ऐसा चिन्तन जगाना, शरीर व्याधियों का घर है। जब तक पुण्य का उदय है रोग दबे रहते हैं। आज असाता वेदनीय कर्म के प्रभाव से यह बीमारी उभरकर आई है ऐसे पॉजिटिव चिन्तन के साथ बीमारी का इलाज होगा तो दर्द की मात्रा बढ़ेगी नहीं। शरीर की अनित्यता का चिन्तन बार-बार दोहराने से आत्मिक बल प्रकट होता है और मन भी शांत हो जाता है। अतः कष्ट सहिष्णु बनने का अभ्यास सबसे पहले मन के लेवल पर प्रारंभ करना।

सन् 2021–24 के ऐतिहासिक सत्र में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमल जी छल्लाणी जैन एवं उनकी ऊर्जावान टीम के द्वारा जैन भवन में किये गये

रचनात्मक कार्यों की झलकियाँ

भामशाह श्रेष्ठिवर्य श्री रसिकलाल जी एम. - सौ. कमलाबाई धारीवाल सांस्कृतिक हॉल

सन् 2021–24 के ऐतिहासिक सत्र में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनन्दमल जी छल्लाणी जैन एवं उनकी ऊर्जावान टीम के द्वारा जैन भवन में किये गये

रचनात्मक कार्यों की झलकियाँ

भामशाह श्रेष्ठिवर्य
श्री रमणलाल जी लुंकड़
के सौजन्य से निर्मित
अतिथि गृह एवं सभा मंडप

श्रुत सेवा सन्दर्भ ग्रन्थ

बाह्य परिसर

प्रशासनिक कार्यालय

वातानुकूलित सुविधा सम्पन्न कमरे

शुभारम्भ की घड़ियां – उल्लास के क्षण

जिम्मेदार सभाएँ - लिए गए जानदार निर्णय

जैन कॉन्फ्रेंस की योजनागत गतिविधियाँ एवं सहायता

जीवन प्रकाश योजना

जीवन प्रकाश योजना मुख्यत समाज के अभावग्रस्त भाई-बहनों के सहायतार्थ संचालित है। इस कार्यकाल में जीवन प्रकाश योजना के अंतर्गत मेडिकल में 15,42,066/- रुपये एवं शिक्षा में 98,81,285/- रुपये की कुल 1,14,23,351/- रुपये की विशेषकर छात्रवृत्ति में सहायता दी गई।

अध्यक्ष : श्री रमणलाल जी लुंकड़
मंत्री : श्री ज्ञानचंद जी लुंकड़

जीव दया योजना

जीव दया योजना तिर्यंच गति प्राप्त मूक पशुओं-प्राणियों के हित में दी जाने वाली सहायता का ऐसा पुण्य कार्य है जिसको जो भी जिम्मेदारी पूर्वक करता है, वह पुण्य का भागी बनता है। इस कार्य के हेतु जैन कॉन्फ्रेंस इस सत्र में भी पूर्णतः सजग रही है।

गौशालाओं को 29,73,264/- रुपये की दानराशि प्रदान की गई।

अध्यक्ष : श्री हुकमीचंद जी कोठारी
मंत्री : श्री चतरलाल जी लोढ़ा

मानव सेवा योजना

मानव सेवा योजना के तहत अभावग्रस्त साधर्मियों को उनके मान-सम्मान-स्वाभिमान को बचाए रखते हुए सहायता प्रदान की जाती है। यह कार्य स्नेह-भरे स्पर्श जैसा है, जिसे सावधानी से न किया जाए तो सेवा का अर्थ ही समाप्त हो जाता है। इस योजना के तहत इस कार्यकाल में 36,34,889/-रुपये प्रदान किए गए।

अध्यक्ष : श्री राजेश जी मूथा जैन
मंत्री : श्री ज्ञानचंद जी लोढ़ा जैन

ज्ञान प्रकाश योजना

ज्ञान आत्मा का पर्याय है। स्वाध्याय इसी ज्ञान की अभिवृद्धि करने में सबसे बड़ा आलम्बन है। ज्ञान प्रकाश योजना इसी लक्ष्य को लेकर समाज में स्वाध्याय और ज्ञान संवर्धन के हेतु प्रयासरत रहती है। वर्तमान कार्यकाल में विशेष कार्य न होकर भी योजना की प्रगति के निमित्त 16,885 रुपये की सहायता प्रदान की गई।

अध्यक्ष : श्री संजय जी बाफना
मंत्री : श्री किशोर कुमार दलाल

वैय्यावच्च योजना

वैय्यावच्च योजना श्रमण संघ के पूज्य साधु-साध्वियों की सेवार्थ एक महत्वपूर्ण योजना है। इस योजना के अन्तर्गत सेवक पगार खर्च 1,25,67,235/-रु., व्हील चेयर हेतु 6,04,100/- रु., दवाई हेतु 15,56,030/- रु. एवं शिक्षा हेतु 36,000/- रु. मिलाकर कुल 1,47,63,365/- प्रदान किए गए। इस प्रकार इस कार्यकाल में यह योजना पूर्ण यशस्वी रही।

अध्यक्ष : श्री अशोक जी रांका जैन
मंत्री : श्री जे.रत्नचंद सिंघवी जैन

विहार धाम योजना

अध्यक्ष : श्री नन्दकुमार भटेवरा
मंत्री : श्री मनसुखलाल गुगले

श्रुत संवर्धन योजना

श्रुत संवर्धन योजना के अंतर्गत इस कार्यकाल में प्रारम्भिक गतिविधियों के अन्तर्गत पुस्तक प्रकाशन, साहित्य संग्रह, पुस्तक मेला और प्राचीन पांडुलिपियों के संरक्षण हेतु कार्य प्रारम्भ हुए। भविष्य में इस योजना का और समर्थ बनाने की दिशा में कार्य होगा। ऐसी आशा के साथ प्रयास जारी हैं।

अल्प संख्यक योजना

वर्तमान सत्र में इस योजना के अंतर्गत दो जूम मीटिंगों में इसके लाभ और प्रयासों पर चिन्तन किया गया। अध्यक्ष : श्री राजेन्द्र ओसवाल, मंत्री : एडवोकेट डॉ. अर्पित छाजेड़।

जैन कॉन्फ्रेंस में हुआ लेन-देन का DIGITALIZATION

पूर्व में जैन कॉन्फ्रेंस में Payment – RTGS और NEFT के माध्यम से तो स्वीकार की जाती थी, लेकिन अगर कोई Paytm या Google Pay से Payment करना चाहे तो उसको सुलभ बनाने के लिये, अब हमने QR Code ले लिया है। अब यदि किसी को कोई दान देना हो या जैन कॉन्फ्रेंस में किसी भी प्रकार की कोई Payment करनी हो, तो आप तुरंत इस QR Code का उपयोग करके, हमारे बैंक अकाउंट में पैसे जमा करा सकते हैं और साथ ही जो हमारा अधिकृत व्हाट्सएप नम्बर है उस पर अपनी Payment की सूचना – अपना नाम, पता एवं पेन नम्बर भेज सकते हैं, आपको Payment की रसीद मेल कर दी जायेगी।

प्रथम बार ऑल इंडिया जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली का WhatsApp Number एवं QR Code

आज बदलती तकनीक के इस युग में जैन कॉन्फ्रेंस को तकनीकी तौर पर समय के साथ चलने के लिए बहुत से बदलावों की आवश्यकता थी और हमने इस कार्यकाल मेंइन बदलावों की शुरुआत की है। हमने जैन कॉन्फ्रेंस का **व्हाट्सएप्प नम्बर** प्रारंभ किया है। **जैन कॉन्फ्रेंस का व्हाट्सएप्प नम्बर है - 07289900012 ।**

यह नम्बर जैन कॉन्फ्रेंस के प्रत्येक सदस्य के लिये हमेशा उपलब्ध रहेगा। जैन कॉन्फ्रेंस से आपको किसी भी प्रकार की सूचना प्राप्त करनी हो, किसी भी बात के लिये सम्पर्क करना हो, आप इस नम्बर पर व्हाट्सएप भेजकर या कॉल द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

जैन कॉन्फ्रेंस ने अब CRS License प्राप्त कर लिया है!

जैन कॉन्फ्रेंस अब सीएसआर यानी कॉर्पोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी पंजीकरण प्राप्त कर चुकी है। इसके अंतर्गत गैर-लाभकारी संगठनों (एनजीओ) के लिए कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय द्वारा यह किया गया है। **इसके अंतर्गत जैन कॉन्फ्रेंस जैसे एनजीओ को कॉर्पोरेट से सीएसआर फंड पाने में मदद मिल पायेगी।**

सीएसआर पंजीकरण के लिए, इन बातों का ध्यान रखना जरूरी था :

पंजीकरण के लिए, एनजीओ को प्रैक्टिसिंग सीए, सीएस, या सीएमए से प्रमाणन लेना होता है। पंजीकरण पूरी तरह से ऑनलाइन होता है। इन सभी योग्यताओं में जैन कॉन्फ्रेंस पूर्णतः समर्थ है। सीएसआर पंजीकरण के लिए, एनजीओ को आयकर अधिनियम की धारा 12A और 80G के तहत पंजीकृत होना जरूरी है। जो कि जैन कॉन्फ्रेंस के पास पहले से ही है।

आवश्यक दस्तावेजों की प्राप्ति और संरक्षण करने में इस कार्यकाल जैन कॉन्फ्रेंस को मिली सफलता

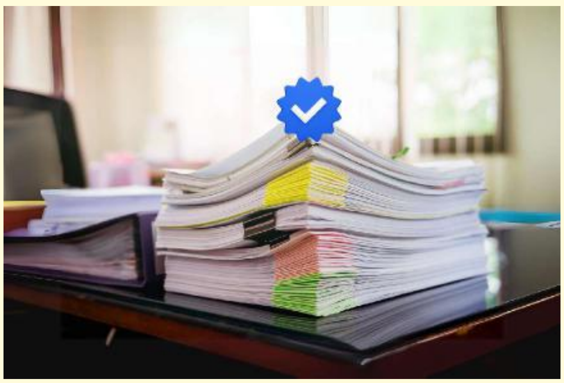

Authentic Documents obtained and kept in the Record Room of Jain Conference

बन्धुओं! आप सब जानते हैं कि किसी प्रॉपर्टी के लिए सबसे आवश्यक उस जायदाद के प्रामाणिक दस्तावेज, यदि ऐसा नहीं हो तो जायदाद और उसका अधिकार दोनों ही खतरे में पड़ जाते हैं। हमने जब जैन भवन के संदर्भ में राजस्व विभाग के मामले की जांच की तो पाया गया कि एक पीड़ादायक चूक हमारी संस्था से हो चुकी है। वह यह कि जैन भवन की सन् १९५६ में रजिस्ट्री हुई थी और इस भवन के कागजात तब से अथॉरटी में तो थे, लेकिन हमारे रख-रखाव के अभाव में हमारी संस्था के पास हमारी रजिस्ट्री की प्रतियाँ नहीं थी। परिणाम स्वरूप यह चूक हमें भारी पड़ गई।

एल.एंड डी.ओ. की पैनल्टी का मामला आज सरदर्द बना हुआ है, लेकिन संतोष की बात यह है कि ये कागजात प्राप्त कर लिये गये हैं, वो भी आधारहीन नहीं प्रामाणिक रूप में अब वह हमारे रिकार्ड रूम में सुरक्षित है। यह उपलब्धि इस कार्यकाल की बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है। इन कागजों के आधार पर हम अपनी कानूनी लड़ाई वर्तमान कानून के आधार पर पूरी ताकत से लड़ सकते हैं।

हम इन आधारभूत कागजों के बल पर संस्था पर लगे आरोपों से बचाव कर सकते हैं। हम अल्पसंख्यक समाज होने की दृष्टि से भी अतिरिक्त सुविधा की मांग की सकते हैं। वहीं एक बात और है जो सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के आधार पर है। जो प्रॉपर्टी किसी के पास 33 वर्ष से भी अधिक समय से है उस जमीन जायदाद को वर्तमान में रहने वाले व्यक्ति या संस्था से अलग नहीं किया जा सकता। इस आलोक में हम अपने मामले में बचाव कर पायेंगे। यह आशा इन कागजों के आधार पर जाग चुकी है।

इस प्रयास में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान आनन्दमल जी छल्लाणी जैन, महामंत्री श्री अतुल जी जैन एवं जैन कॉन्फ्रेंस के प्रमुख सहयोगी श्री जयप्रकाश जी ललवानी का श्रम सराहनीय रहा है। इस दस्तावेज संग्रह से निश्चित रूप से भविष्य के लिए जैन कॉन्फ्रेंस भवन संबंधी आवश्यक कार्यों को सम्पादित करने में भारी मदद प्राप्त होगी।

प्रथम बार जैन कॉन्फ्रेंस में किए गए बदलाव और नई उपलब्धियाँ

व्यवस्था – अहर्ता और बदलाव

- ये विषय चुनाव कार्यप्रणाली में जोड़ा गया। संस्था के चुनाव में यदि राष्ट्रीय अध्यक्ष पद का प्रत्याशी अपना नामांकन पत्र वापिस लेता है तो उसके द्वारा जमा कराई गई 7,51,000/- रुपये की नामांकन शुल्क राशि में से 25 प्रतिशत राशि काट कर ही उस महानुभाव को वापिस की जाएगी।
- प्रांतीय अध्यक्ष पद हेतु नामांकन पत्र के साथ 1,01,000/- रुपये की नामांकन शुल्क राशि जमा कराने हेतु प्रस्तावित है तथा उनके द्वारा नामांकन पत्र वापिस लेने की स्थिति में उन्हें 25 प्रतिशत राशि काट कर ही उन महानुभाव को वापिस की जाएगी।
- राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य हेतु नामांकन पत्र के साथ 21,000/- रुपये की नामांकन राशि जमा कराने हेतु प्रस्तावित है तथा उनके द्वारा नामांकन पत्र वापिस लेने की स्थिति में उन्हें 25 प्रतिशत राशि काट कर ही उन महानुभाव को वापिस की जाएगी।

संविधान संशोधन की सार्थकता को समाज ने समझा और स्वीकृत किया

- जैन कॉन्फ्रेंस में प्रथम बार तीनों ही सभाओं के द्वारा संविधान संशोधन को बहुमत से पास करते हुए एकाधिकार और व्यक्ति विशेष के वर्चस्व से मुक्त करने का प्रयास किया गया और इस संबंधी जो भी आपत्तियां जैन कॉन्फ्रेंस के नेतृत्व के समक्ष आई, उनका यथोचित समाधान करते हुए विधान का हिस्सा बनाया गया।
- आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत प्रथम बार जैन कॉन्फ्रेंस भवन में प्राचीन परम्परा का निर्वाह करते हुए राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। वन्दे मातरम् की गूंज से सारा परिसर गूंज उठा।
- जैन कॉन्फ्रेंस भवन में पहली बार जैन संत का चातुर्मास हुआ, ध्यान शिविर का आयोजन हुआ। साथ ही अनेक महान त्यागात्माओं का, ज्ञानी–ध्यानी तपस्वियों का पदार्पण हुआ। साथ ही उनके आशीर्वाद और मार्गदर्शन से नेतृत्व ने अपने कार्य–कर्तव्य को और भी सजग बनाया।
- युवा शाखा और महिला शाखा में अनेक स्थानों पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक एवं खेल–कूद संबंधी कार्यक्रमों के द्वारा युवकों को, समाज की बहनों को जैन कॉन्फ्रेंस के लक्ष्य से जोड़ने में सफलता प्राप्त की।
- न्यायालयीन विवादों को हल करने में सजगतापूर्वक समय देकर, योग्य व्यवस्था करके कॉन्फ्रेंस ने अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया। सम्पूर्ण राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने कतिपय ऐसे भी कदम उठाए जो अलोकप्रिय रहे, लेकिन जब उनकी सत्यता समाज के समक्ष रखी गई तो सभी लोग कॉन्फ्रेंस के निर्णय से सहमत हुए।
- जैन कॉन्फ्रेंस में रचनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहन देने की दिशा में **विद्वानों को वीर लोकाशाह सम्मान से सम्मानित** किया गया। भविष्य में भी हमारी योजना स्वाध्यायी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करते हुए जैन धर्म–दर्शन से जुड़े हुए विद्वानों को प्रोत्साहित करना है, सम्मानित करना है। जैन कॉन्फ्रेंस का भावी लक्ष्य यही है कि हम अपनी सदस्य संख्या को एक लाख तक पहुंचाएं और सम्पूर्ण देश की प्रतिभाओं को, समाजसेवियों को, युवक युवतियों को इस राष्ट्रीय गौरव से सम्मानित संस्था से जोड़ने का प्रयास करें।

ऐतिहासिक प्रसंग है कि कौशाम्बी की महारानी गौतम बुद्ध से द्वेष रखती थी कि लोग बुद्ध को महापुरुष क्यों मानते हैं ? यह बात उसे बहुत अखरती थी। अतः एक बार उसने षडयंत्रपूर्वक बुद्ध को कौशाम्बी पधारने का संदेश भिजवाया कि जब वे यहाँ आयेंगे तो मैं मनचाहे ढ़ंग से उन्हें दुःखी करूँगी।

सहजभावी महात्मा बुद्ध अपने सकल संघ के साथ कौशाम्बी पधारे तो महारानी ने अपने पालतु अनुचरों द्वारा उन्हें पीड़ित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जहाँ भी बुद्ध जाते और उपदेश देते वहाँ वे अनुचर पहुंच जाते और धर्मसभा में बाधा पहुँचाते। लोग बुद्ध के वचन न सुन सके ऐसे विघ्न पैदा करते। बार-बार ऐसा उपद्रव देख बुद्ध शांत रहे, किन्तु शिष्य हैरान हो गए। आखिर परेशान होकर शिष्यों ने कहा, "भंते! हम अन्यत्र क्यों नहीं चलते ? रानी के अनुचर जानबूझकर हमें तंग कर रहे हैं। यदि हम दूसरे शहर में चले जाएँगे तो इनके कष्टों से बच जाएँगे।"

बुद्ध ने मुस्कुराते हुए कहा, "यदि ये अनुचर वहाँ भी पहुँच गए तो क्या करोगे ?" शिष्य बोले, "फिर हम वहाँ से भी आगे चले जाएँगे।" बुद्ध ने कहा, "यह तो कष्टों से भागने का अंतहीन सिलसिला होगा।

ध्यान रखो, स्थान बदलने से कष्ट नहीं बदलते। कष्ट सब जगह आते हैं। कष्टों से भागना समाधान नहीं है, कष्टों में भी जागना सीखो।

कभी सोचा ? कि कड़वा रस (चिरायता) प्रसन्न मन से पीने वाला मनुष्य, कटु वचनों को भी क्यों नहीं पी सकता? कारण स्पष्ट है, कटु रस से मेरा शरीर स्वस्थ बनेगा ऐसा मानकर वह उसका पान प्रसन्नता से कर लेता है, किन्तु कटु वचनों को सहर्ष सहने से मन सशक्त बनेगा और कर्मों की निर्जरा भी होगी ऐसी सम्यक् समझ अभी मन में यदि नहीं आई तो परमात्मा के वचनों में कितनी गहरी निष्ठा होगी?

भव्य आत्माओं कष्ट सहिष्णु बनने के लिए हमें भगवान महावीर को अपना आदर्श बनाना होगा। अपने बेचैन एवं व्यग्र मन की तुलना में उनके महासंकल्पी मन के साथ अपना तालमेल बिठाकर देखो। साधना मार्ग पर सतत् बढ़ने वाले प्रभु की स्मृति चित्त में लाओ, जिन्होंने निम्न श्रेणी के मनुष्यों द्वारा बोले गए कटु वचनों को भी प्रसन्नता से स्वीकार किया। चूँकि उनका एकमात्र लक्ष्य था कर्मों की निर्जरा करना ! आत्म शुद्धि करना !

स्वयं से पूछो कि मैंने आज तक अपने हितकारी, उपकारी माता-पिता व गुरुजनों द्वारा हित बुद्धि से कहे गये कटु वचनों को सहा है या प्रतिकार किया है?

जैसे एक लाख का चेक कोई व्यक्ति आपको फटे हुए गंदे लिफाफे में दे तब भी आप उसे सहर्ष स्वीकारते हो ? इसी तरह परोपकारी हो या अपमान करने वाला, सहकारी हो या विरोधी उसके द्वारा प्राप्त शारीरिक-मानसिक कष्ट को कर्म निर्जरा के महान उद्देश्य से सहने का संकल्प ही एक दिन आपको कष्ट सहिष्णु बनाता है।

जैसे कपड़े पर लगा दाग आकुलाहट पैदा करता है, खिड़की के काँच पर जमी धूल बेचैन कर देती है, पैरों में चुभा कांटा पीड़ा देता है। इससे भी अधिक गुणा पीड़ा हमें जिस दिन आत्मा पर लगे हुए कर्मों की महसूस होगी उस दिन कर्म निर्जरा के ख्याल से मात्र सहनशक्ति ही नहीं जागेगी बल्कि चेतना में कर्म निर्जरा का भाव जाग्रत होगा और हम अपने ही कर्मों द्वारा उपस्थित पीड़ा से बचने का उपाय ढूंढ लेंगे।

याद रहे कष्टों को सहने की क्षमता तभी आएगी जब हम कहने से ज्यादा सहना सीखेंगे क्योंकि कई बार हमारा ही कहा हुआ हमारे लिए कष्टों का कारण बन जाता है। कई बार हमारे द्वारा कहे गए वाक्य का सही अर्थ यदि सामने वाला नहीं लगा पाए तो उसे हमारे कहे का इतना कष्ट होगा कि वह क्रोध से भर जाएगा। हो सकता है कि वह हमारे पर हाथ भी उठा दें। ऐसी अप्रिय स्थिति से बचने के लिए हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम अधिक कहने की बजाए अधिक सुनना पसंद करें। हमारा यह सुधार हमें बहुत सारे कष्टों से अपने आप बचा लेगा। अतः कहना नहीं सहना सीखों, वचनों की यह सहिष्णुता अति सुखकारी है, इस बात का स्मरण रखों !

❖❖

"हमें जैन कॉन्फ्रेंस में विवाद नहीं समन्वय ही चाहिए !"

- **नेमीचंद चोपड़ा जैन,** पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष-जैन कॉन्फ्रेंस, पाली मारवाड़ (राजस्थान)

जैन कॉन्फ्रेंस स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा की सम्पूर्ण देश में एकमात्र प्रतिनिधि संस्था है। जिसके आज ७७ हजार से अधिक आजीवन सदस्य है। पाँच ज़ोन में प्रांतीय अध्यक्ष और अन्य गतिविधियों से जुड़ी स्वतंत्र ईकाईयाँ भी है। सारे देश से जैन कॉन्फ्रेंस की साधारण सभा में प्रतिनिधिगण आते हैं और लोकतांत्रिक तरीके से अपनी अभिव्यक्ति देकर आम राय स्थापित करते हैं। इसी से यह बात स्पष्ट है कि यह एक प्रकार से सकल जैन समाज का एक मजबूत संगठन है। हमारी जैन कॉन्फ्रेंस की योजनाएं प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से समाज की सेवा में निरन्तर लगी हुई है। ज्ञान प्रकाश हो चाहे जीवन प्रकाश, जीवदया हो चाहे मानव सेवा इन सभी योजनाओं के माध्यम से अनेक वर्षों से जैन कॉन्फ्रेंस समाज के हर वर्ग को छूने की कोशिश करती है। इस संस्था की युवा एवं महिला शाखाएं भी अपने आप में एक महत्वपूर्ण योगदान करती है। जब मैं राष्ट्रीय अध्यक्ष था तब मैंने इस संस्था के सर्वोच्च पद पर रहते हुए इस संस्था के कार्य और उसके महत्व को गहराई से समझा। इसीलिए मैं आज सभी से यह निवेदन करता हूँ कि जैन कॉन्फ्रेंस जोकि श्रमण संघ की मातृ संस्था है, उसमें विवाद नहीं होना चाहिए। हम लोग समन्वय, संवाद और संगठन से अपने आपको जोड़े तो हमारे समाज की ही नहीं श्रमण संघ की ताकत भी बढ़ती है।

मैं, मेरे परम आराध्य, मार्गदर्शक एवं शाश्वत कृपालु, श्रमण सूर्य, दिव्य विभूति, गुरुदेव श्री मरुधर केसरी जी म.सा. का स्मरण करते हुए यह अनुभव करता हूँ कि किस प्रकार से उन्होंने हमारे समाज को एक करने के लिए घोर परिश्रम किया और श्रमण संघ की स्थापना में मुख्य भूमिका निभाई। इसी प्रकार मेरे ऊपर सदैव कृपा वर्षा करने वाले पूज्य गुरुदेव लोकमान्य संत, अहिंसा दिवाकर पूज्य प्रवर्तक श्री रूपचंदजी म.सा. 'रजत' भी सदैव श्रमण संघ और स्थानकवासी समाज की एकता के लिये प्रयासरत रहे। उन्हीं के दिये संस्कारों के आधार पर मैं न केवल श्रमण संघ बल्कि जैन कॉन्फ्रेंस की महत्ता को स्वीकार करते हुए यह याद दिलाना चाहता हूँ कि **यदि हम सम्मान, स्वाभिमान और जैन होने की गरिमा का गौरव बनाएं रखना चाहते हैं तो हम समन्वय की राह पर चलें, मिलनसारिता की राह पर चलें, संस्था के दो वर्ष में होने वाले चुनाव को लेकर हमारे बीच में कोई मतभेद न हो मनभेद न हो। इसलिए इसका एकमात्र रास्ता है समन्वय। इसीलिए मैं बार-बार कहता हूँ कि हमें जैन कॉन्फ्रेंस में विवाद नहीं समन्वय ही चाहिए।**

समाज में वैसे भी अनेक विवाद है और उन विवादों के कारण हमारे समाज की शक्ति कहीं न कहीं बिखरती अवश्य है। यदि हम चाहते है कि हम अपनी शक्ति, अपना वैभव, अपनी धन सम्पदा को अच्छे कार्यों में लगाए तो हमें मिल-बैठकर समन्वय से शांतिपूर्वक कार्य करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

मैं यहाँ याद दिलाना चाहता हूँ कि जब मैं राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया, उसके पहले पद्मश्री लाला नेमनाथ जी जैन और मेरे बीच कतिपय भ्रांतियों के कारण विवाद हुआ था, लेकिन जब पुनः हमारे ज़ोन का नम्बर आया तो मैंने और गुरुदेव श्री रूपचंदजी म.सा. 'रजत' ने जोरदार ढ़ंग से यह प्रयास किया कि **हमें लालाजी को इस पद पर लाते हुए सम्मानित करना है। इसमें हम जो भी सहयोग कर सकते हैं, वह अवश्य करें।** देव-गुरु-धर्म की कृपा से ऐसा ही हुआ और आदरणीय लाला नेमनाथजी जैन के नेतृत्व में इन्दौर में जो साधु-सम्मेलन हुआ वह सफलतापूर्वक हुआ और जैसी हमारी भावना थी लालाजी ने एक इतिहास रचकर समन्वय को सार्थकता प्रदान की।

मैंने इसी भावना से सादड़ी में प्रथम पहल की थी साथ ही दोनों पक्षों को एक साथ सादड़ी संघ के सौजन्य से आमंत्रित किया था। हमें खुशी है कि आज उसी भावना को मान्य करके दोनों ही पक्षों ने साथ बैठकर समझौते का निर्णय लिया। सर्वानुमति से भावी अध्यक्ष के रूप में भाई अतुल जैन का चयन कर लिया। यह निर्णय बधाई का पात्र है। ❖❖

अनेकांत दर्शन प्रिय है तो सम्प्रदाय गौण हों !

- **संजय बाफना जैन,** ज्ञान प्रकाश योजना-राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस-अहमदनगर (महाराष्ट्र)

मैत्री का मंगलमय व्यवहार किसे प्रिय नहीं है? क्योंकि जहाँ मैत्री है, वहाँ परोपकार है सरोकार है, वहां उन्नति है, शांति है। जैन धर्म दर्शन इस दिशा में प्रारंभ से ही सचेष्ट है, प्रयासरत है। यही कारण कि पंच महाव्रत में जहाँ सत्य, अहिंसा, अचोर्य की चर्चा है, वहाँ अनेकांत दर्शन का, स्यादवाद का भी प्रमुख स्थान है।

वस्तुतः आत्मा के समभाव का दर्शन है अनेकांतवाद जबकि सम्प्रदाय विचार विभेद और कहीं न कहीं वैयेक्तिक हठ का परिणाम है जो तनातनी को बढ़ाकर संवाद के अभय ऊभय पक्ष को दबा देता है। जब विद्वान विमर्श करने बैठते है तो निष्कर्ष से पूर्व समग्रता से चिन्तन चलता है और फलस्वरूप जो सत्य स्थापित होता है वो अनेकांतिक होता है, युग धर्म के अनुरूप लाभकारी होता है।

इसके विपरीत सम्प्रदायवाद में मेरा सत्य ही सत्य है बाकि सब व्यर्थ है, यह हठ ही सम्प्रदायवाद का आधार है। मेरे मत में जब सुसंस्कार स्थापित होते हैं, गहन विमर्श के पश्चात् जब मूल्यों की प्रतिष्ठा होती है तब ही संस्कृति जन्म लेती है। यह संस्कृति जब सामाजिक स्वीकृति बन जाती है, तब युगो-युगो का पुरुषार्थ सार्थक होता है।

सभ्य समाज को प्रिय नहीं सम्प्रदायवाद ! इतिहास गवाह है कि संघीय एकता, गुणधर्मी परम्परा ने ही संस्कार, संस्कृति और मानवीय मूल्यों का हित संवर्धन किया है। इसीलिए युवा पीढ़ियाँ कभी भी साम्प्रदायिक खींचतान से खुश नहीं होती। युवा समाज कभी भी मैत्री तोड़क घटनाओं का पिछलग्गु नहीं बनता। युवा तो आनंदप्रिय है उसके रक्त में पर्व और उल्लास थिरकते हैं। अतः सम्प्रदायवाद वाली संकीर्णता युवाओं को रास नहीं आती। युवा वर्ग तो चाहता है कि वो गरिमामय संगठना का अंग बनकर अपनी ऊर्जा का सही दिशा में उपयोग करे। **युवा जगत अपनी ऊर्जा को सदैव संगठन, धर्मादर्श और आपसी संवाद वाले समन्वयी मंच से जोड़े रखता है।**

मैंने एक बार नहीं अनेक बार देखा है कि जब भाई भाई विभक्त होते हैं। साधु-साध्वी सम्प्रदाय मोह में पड़कर धर्म ही नहीं सम्प्रदाय की जाहोजहाली में लगते है तो प्रत्येक की श्रद्धाभक्ति स्खलित हो जाती है। जबकि उसके कदम उस यश यात्रा में ही गति पाते हैं, जहाँ सम्प्रदाय गौण होता है, अनेकांत दर्शन की महत्ता-मान्यता पाती है।

विचारणीय है हमारे अतीत की घटनाएं : मित्रो एक समय था एक हम एक देव, एक धर्म परम्परा के विश्वासी भी इतने सम्प्रदाय प्रिय हो गए थे, कि साधक के बाने को व्यक्तित्व को भी वंदना, व्यवहार नहीं करते थे। परस्पर मिलन से दूर स्वयं को खरा और अन्यों को पासस्था, हल्का क्रिया हीन ज्ञान हीन कहकर मन ही मन खुश होते थे। ये सब सम्प्रदायवाद के विषैले प्रभाव से होता था। परिणाम सम्प्रदाय तो फलफूल गए मगर जिनवाणी का सत्य धुंधला हो गया। जबकि पूज्य त्यागी वर्ग का लक्ष्य तो ज्ञान ध्यान है, सिद्धालय की साधना है।

मेरा विनम्र मत है कि - "हम यदि सिर्फ आत्मार्थी होकर आत्मानुशासन, आज्ञा पालन, संगठन समर्पण, स्नेह भाव के साथ अनेकांतवाद को आदर्श मान कर आगे बढ़ेंगे तो सम्प्रदाय ध्यान में भी नहीं आएगा, केवल वीतराग भाव का स्मरण रहेगा।

हमने श्रमण संघ का निर्माण और संचालन इसी तरह से किया है। वहीं जैसे-जैसे समय बीत रहा है पुनः ऐसा हो रहा है जो नहीं होना चाहिये फिर भी मैं आश्वस्त हूँ कि पुरानी पीढ़ीयाँ जा चुकी है मगर उनका श्रम, पुरुषार्थ व्यर्थ नहीं जाएगा, उनकी पुण्याई का जोर पुनः बढ़ेगा और हम अपना लक्ष्य प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

स्मरण रहे क्रियागत कार्यकलाप हमारी बाहरी अभिरचना का अंग है। राग द्वेष से मुक्ति ही हमारा लक्ष्य है जो था और रहेगा ! समय फिर उर्ध्वगामी होगा हम फिर नित नवीन, नित प्राचीन होंगे यह तय है, यह होकर रहेगा !! जय जिनेन्द्र !

❖❖

सुपात्र दान से ही श्रावकाचार गौरव पाता है !

- डॉ. सुधीर जैन, राष्ट्रीय मंत्री-जैन कॉन्फ्रेंस, कोटा (राजस्थान)

अनादिकाल से जीवात्मा में चार संज्ञाएँ रही हुई हैं - **1. आहार 2. भय 3. मैथुन और 4. परिग्रह।** इन चार संज्ञाओं को तोड़ने के लिए जिनेश्वर भगवान ने चार प्रकार के धर्म बताये हैं - **दान, शील, तप और भाव।** आहार संज्ञा को तोड़ने हेतु तप धर्म, भय संज्ञा से मुक्त होने के लिए भाव धर्म, मैथुन संज्ञा से आसक्ति खत्म करने हेतु शील धर्म और परिग्रह संज्ञा को तोड़ने के लिए दान धर्म बतलाया गया है।

गृहस्थ का जीवन शील प्रधान और दान प्रधान है। जबकि साधु का जीवन संयम प्रधान और तप प्रधान है। इसका मतलब यह नहीं है कि साधु दान नहीं करते। साधु भी वस्त्र, पात्र, पुस्तक, अन्न-जल का संविभाग कर उन्हें अपने उपयोग में लेते हैं। यदि ऐसा मौका आ जाय कि कोई अन्न-जल के अभाव में क्लान्त हो रहा है तो साधु के पास भी एक रास्ता है। वे कह सकते है कि तुम हमारी तरह बन जाओ और समस्त सावद्य योग का त्याग कर दो तो हम तुम्हें भी हमारे हिस्से का भोजन दे देंगे। इस प्रकार साधु भी उसे अन्न-जल देने के अधिकारी हो जाएंगे, ज्ञान-दान एवं व्रतदान भी देंगे।

श्रावकाचार के इतिहास का एक पृष्ठ : आज से करीब 2270 साल पहले भगवान महावीर के दसवें पट्टधर आर्य सुहस्ती के समय की घटना है। उस समय भीषण अकाल के समय उन्होंने द्रमक नामक भिखारी को दीक्षा देकर अपने तथा अन्य साधुओं के हिस्से का भोजन दिया था। उसी रात्रि को द्रमक का देहान्त हो गया और वह मरकर सम्प्रति राजा बना। **कलान्तर में सम्प्रति ने जाति स्मरण ज्ञान से आर्य मुहस्ती को पहचान लिया। वह आर्य सुहस्ती के पास गया और श्रावक धर्म अंगीकार किया। उसने जैन धर्म के लिए खूब प्रचार-प्रसार किया। भोजनशालाएँ और दानशालाएँ खुलवाई। इस प्रकार साधु के लिए द्रव्यदान की मर्यादा है, परन्तु भावदान के द्वार सदा सभी के लिए खुले हैं।** ज्ञानदान, श्रद्धा (सम्यक्त्वदान), व्रतदान और विरति दान-ये सब भावदान हैं। साधु षड्काय के जीवों के प्रति करूणा एवं मैत्रीभाव रखते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट है कि दान एक पुण्य कार्य है और यह पदार्थों से एवं शरीर से आसक्ति (मूर्च्छाभाव) टूटने पर ही होता है। जब तक पर पदार्थों से आसक्ति भाव नहीं छूटता है तब तक व्यक्ति दान नहीं कर सकता। अतः दान प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में आसक्ति छूटने का कारण होने से कर्म बन्धन तोड़ने का साधन है। सभी प्रकार के कर्मों का नष्ट होना ही मुक्ति अर्थात् मोक्ष कहलाता है !

स्थानांगवृत्ति में कहा है कि **जिस दान से धर्म निष्पन्न हो अथवा जो दान धर्म कार्य में दिया जाए उसे धर्मदान कहते हैं।**

वैसे तो धर्मदान को ही सच्चे मायने में दान कहा गया है, किन्तु इस दान में कोई स्वार्थ, आकांक्षा, पदलिप्सा, प्रतिष्ठा और प्रसिद्धि की कामना, नामवरी की इच्छा आदि हो तो वह धर्मदान नहीं होकर गौरवदान में परिणत हो जाता है। इसलिए सच्चे मायने में धर्मदान वह है जो दाता के कर्मबन्ध को काट सके और मोक्ष फलदायक हो।

स्थानांगवृत्ति में टीकाकार ने धर्मदान का लक्षण इस प्रकार किया है-तिनके और मणि मोतियों पर जिनकी दृष्टि सम है उन सुपात्रों को जो दान दिया है वह अक्षय, अतुल और अनन्त एवं धर्म के लिए होता है। वहीं वास्तव में उच्चकोटि का घर्मदान है। ❖❖

प्रसन्नता वरदान है

हमने देखा है कि बगीचे में माली उन्हीं फूलों को तोड़ रहा है जो खिले हुए हैं। हमने देखा है कि फोटोग्राफर उन्हीं के फोटो ले रहा है जिनके चेहरे मुस्करा रहे हैं। हमने अनुभव किया है कि संसार में लोग उसी को चाहते हैं जो प्रसन्न रहते हैं । ❖❖

जैन होने का अर्थ

- **डॉ. श्वेता जैन,** पावटा, जोधपुर (राजस्थान)

भगवान् आदिनाथ से लेकर महावीर तक सभी तीर्थंकरों ने जगत् के सत्य को उद्घाटित किया। **यह सत्य था पुद्गल और चेतन का, बन्धन और मुक्ति का, जीवन और मरण का, चित्त की अशुद्धि और शुद्धि का।** सत्य के ये सभी अन्वेषक राग-द्वेषादि विकारों के विजेता होने से **'जिन'** कहलाए और उनका उपदेश जैन धर्म कहलाया। यह जैन-धर्म ज्ञान, दर्शन और चारित्र की त्रिवेणी के रूप में प्रवाहमान है। इस त्रिवेणी में जो अवगाहन करता है वही जैनत्व को अनुभव करता है और जैनत्व को जीता है। जैन संस्कृति मानवीय मूल्यों की संवाहक है। जैनों की **जीवनशैली** अहिंसा, दया, करुणा, समता, क्षमाशीलता, सौहार्द, मार्दव, आर्जव, अपरिग्रह एवं अनेकान्तवाद की भावनाओं से अनुप्राणित है। इस जीवन शैली की अनेक विशेषताएँ हैं -

❖ **ज्ञान सम्बन्धी वैशिष्ट्य : 1. नव तत्त्व का बोध प्राप्त करना 'ज्ञान' है। जीव के साथ अजीव का बन्ध को प्राप्त होना और उनसे मुक्त होना, यही नवतत्त्व का सार है।** नव तत्त्व हैं - जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, पाप, पुण्य, संवर, निर्जरा और मोक्ष। नव तत्त्व के ज्ञान को अनुभूति के साथ जीने पर जीवन में सरलता और समरसता आने लगती है, जो जैनों की पहचान है।

❖ **कर्म सिद्धान्त को समझना** भी : **जैनों की ज्ञानात्मक विशेषता है।** कर्म सिद्धान्त को क्रिया की प्रतिक्रिया के रूप में समझ सकते हैं। मन में क्रोध आते ही, उसके साथ जुड़कर प्रत्युत्तर दे देना, कर्म बन्धन के मार्ग पर चलना है। मन में क्रोध उत्पन्न होना **'उदय'** है और प्रत्युत्तर देना **'बंध'** है। **कर्म का उदय में आना, एक क्रिया है और 'बन्ध' हो जाना उसकी प्रतिक्रिया है। जो मुक्ति या शुद्धि के मार्ग पर चलना चाहता है वह प्रतिक्रिया करना छोड़ दे तो उसके कर्म उदय में आकर भी निर्जरित हो जाते हैं।** प्रतिक्रिया न करने पर जीवन में समता/समभाव प्रकट होता है। अतः कहा है - समभाव सामायिक है और सामायिक से पापकारी वृत्तियों का निरोध होता है।

❖ **दर्शन सम्बन्धी वैशिष्ट्य : 1.** जैन-धर्म सम्यक् दृष्टि पर बल देता है। **'यथार्थतत्त्वश्रद्धा सम्यक्त्वम्'** (जैन सिद्धान्त दीपिका, 5.3) **वस्तु या तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप को जानने एवं प्रस्तुत करने वाली दृष्टि सम्यक् है।** जिन वस्तु, व्यक्ति आदि को हम अपना मानकर राग कर रहे हैं, वे यथार्थ में अपने नहीं है तथा जिन्हें पराया मानकर द्वेष करते हैं, वे भी यथार्थ में दूसरे नहीं हैं। **अपने-पराये की राग-द्वेषात्मक दृष्टि यथार्थ से हमें दूर करती है। जबकि राग-द्वेष के अभाव रूप समता के धरातल पर सम्यक् दृष्टि पनपती है। ये ही मैत्री का आधारभूत सिद्धांत है।**

❖ **धर्म के दो पक्ष हैं :** एक उसका शाश्वत और सार्वभौम पक्ष है तथा दूसरा दैशिक और कालिक पक्ष **धर्म का शाश्वत और सार्वभौम पक्ष उसका सार तत्त्व है, जबकि दैशिक और कालिक पक्ष उसका बाह्य रूप है, जोकि समय-समय पर परिवर्तित होता रहता है। जैन धर्म को समझने की यह आधारभूत दृष्टि है। स्मरण रहे दृष्टि का व्यापक होना ही आवश्यक है।**

❖ **चारित्र सम्बन्धी वैशिष्ट्य : 1.** ज्ञान और दर्शन के सम्यक् होने पर आचरण/चारित्र स्वतः सम्यक् हो जाता है। अतः समता के जीवन में प्रवेश कर लेने पर उसकी इन बुराइयों में न्यूनता आने लगती है।

❖ **जैनों का व्यवहार, प्रेम, करुणा और सद्भावना से युक्त होता है। वह 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' के लक्ष्य के साथ जीता है और समाज में सहयोग और सेवा की भावना से सबको उपकृत करता है।**

सभी प्राणी जीना चाहते हैं, अतः किसी भी प्राणी की हिंसा मत करो ! भगवान् महावीर का यह उद्घोष प्राणिमात्र की रक्षा करने के लिए प्रेरित करता है। हिंसा और अहिंसा को सामाजिक संदर्भ में समझना जैन धर्म की महान शोध है। समन्वय, संगठन और मैत्री ही इसकी मंगल ध्वनि है।

अतः जैनों की जीवन शैली मानव मात्र की एवं सम्पूर्ण पर्यावरण की रक्षा करती है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र संबन्धी विशेषताओं की सुवास से प्रत्येक जिनानुयायी का जीवन सुगन्धित हो, इसका प्रयत्न करना चाहिए। यही जैन होने का अर्थ है। ❖❖

सामाजिक एकता समाज को 'अभयदान' से कम नहीं !!

- हुकमचंद जैन 'मेघ', रोहिणी, दिल्ली

शास्त्रों में कहा गया है कि :-

दानों में जो दान है उत्तम अभयदान कहलाता ।
जो भी भाई धर्म समझता, वो ही इसका होता ज्ञाता ।।

स्पष्ट है कि अभयदान उत्तम दान है। जब हम किसी जीव को अभय आश्वासन देते है तो उसके नयनों से स्नेह का नीर बहने लगता है। खुशी के आंसू इसी को कहा जाता है। **यदि ये सच है तो असंख्य जीवात्माओं से भरा समाज जिस बात से हर्षित होता है, प्रसन्नता अनुभव करता है तो क्यों न समाज की इस खुशी को हम अनुभव करें और वैर विरोध कषाय कटुता से दूर मंगल मैत्री स्वरूप अभयदान समाज को दें; सामाजिक एकता को हर हाल में बनाएं रखें।**

स्थानांगसूत्र के दसवें स्थान में दान-सूत्र की 97वीं गाथा में दान दस प्रकार का कहा गया है - **दसविहे दाणे पण्णत्ते, तं जहा-अणुकंपा संगहे चेव, भये कालूणिए ति य । लज्जाए गारवेणं च, अहम्मे उण सत्तमे।। धम्मे य अट्ठमे वुत्ते, काहीति य कतंति य।।**

अर्थात दान दस प्रकार का कहा गया है, जैसे - **1. अनुकम्पादान** - करूणाभाव से दान देना। **2. संग्रहदान** - सहायता के लिए दान देना। **3. भय दान** - भय से दान देना। **4. कारूण्यदान** - मृत व्यक्ति के पीछे दान देना। **5. लज्जादान** - लोक लाज से दान देना। **6. गौरवदान** - यश के लिए दान देना। **7. अधर्मदान** - अधार्मिक व्यक्ति को दान देना या जिससे हिंसा आदि का पोषण ना हो। **8. धर्मदान** - धार्मिक सदाचारी व्यक्ति को दान देना। **9. कृतमितिदान** - कृतज्ञता ज्ञापन के लिए दान देना। **10. करिण्यतिदान** - भविष्य में किसी का सहयोग प्राप्त करने की आशा से देना।

इसमें प्रथम दान है अनुकम्पादान करूणा भाव से मैत्री भाव से जो कार्य किया जाता है, उसकी प्रसन्नता को शब्दों में ढ़ाल पाना आसान नहीं है। दूसरा है संग्रह दान सहायता करने की दृष्टि से जो दान दिया जाता है इसकी भी अपनी महिमा है, इसे प्रायः समर्थ लोग करते है और आत्म-आनंद अनुभव करते है। तीसरा है **भयदान** जैसे लक्ष्यसिद्धि के लिए श्रीराम के भाई लक्ष्मण ने समुद्र को दिया था और कहा कि **'भय बिन होय न प्रीत'** जरा सा भय दिखाया तो समुद्र भी मार्ग दिखाने में सहायक हो गया था। **'कारूण्य दान'** जैसे जैन कॉन्फ्रेंस से जुड़े कई दयालु दान दाता **विधवा-पैंसन** देने का उपक्रम करते है। इसके आगे है **लज्जादान**, हमारा समाज लोक-लाज से चलता हैं। इसमें कभी-कभी प्रशंसक लोगों की दृष्टि में बड़ा मनवाने के भाव से भी दान दिया जाता है। इससे भी बड़ा है यश गौरव दिलाने वाला **गौरव दान। अधिकांशजन गौरव दान को प्रमुखता देते है और अपार यश पाते है।**

अधर्मदान दो कारणों से दिया जाता है, एक अधर्म को रोकने के लिए, दूसरा अंधविश्वास के कारण विवशता से किया जाने वाला दान । इसी प्रकार **धर्मदान** भी है जैसे गौशालाओं, विकलांग दिव्यांगजनों निराश्रित वृद्धों, विधवाओं और अभावग्रस्त परिवारों को दिया जाने वाला दान। एक और दान है **कृतमितिदान** जैसे किसी ने आप पर कोई महान उपकार किया और आप उस ऋण को उतारने के लिए कोई भेंट उपहार प्रदान करते है। ये दान नहीं भी माना जाएं तो सौजन्य संबंध तो माना ही जाना चाहिए।

अंतिम है **करिण्यनिदान अर्थात, आप चाहते है कि कोई सज्जन आपको भविष्य में बड़ा सहयोग कर सकता है और उस निमित्त आप उसे भेंट देकर सम्मान देकर लुभाना चाहते है, आकर्षित करना चाहते है और इसलिए जो भी प्रयास करते हैं वो करिण्यनिदान की श्रेणी में आता है। इस प्रकार दान सहयोग सौजन्य से आप समाज में स्नेह संबंधों का विस्तार कर समाज को मैत्री भाव से अभय आश्वासन देते है ये एक प्रकार से अभयदान हैं।** ❖❖

युवा शक्ति ही रचेगी हमारा सुन्दर भविष्य

- **गौतम दुग्गड़ जैन,** सह-सम्पादक, जैन कॉन्फ्रेंस, चेन्नई (तमिलनाडु)

पीढ़ियों का परिवर्तन ही संसार का स्थूल सत्य है। हर युग में युवा रक्त ही अपनी प्रतिभा, क्षमता और प्रज्ञा से परिवर्तन का वाहक बनकर **नया आदमी, नया समाज** स्थापित करता है और करता रहेगा, क्योंकि युवा यदि सही दिशा में लग जाएं तो उज्ज्वल भविष्य का निर्माता बन जाता है।

युवा शक्ति वह है, जो जोश, लगन एवं जय निनाद की हुंकार के साथ प्रत्येक कार्य में संलग्न होकर मन में निराशा अथवा हताशा का अंश मात्र भी न लाते हुए, प्रत्येक कार्य को प्राणप्रण से सम्पन्न करने की ताकत रखती है। युवा सोये हुए व्यक्ति को जगाने का शंखनाद है। सुषुप्त चेतना को झंकृत करने का निनाद है, उत्साह-उमंग का कलरव है, पुरुषार्थ का सूर्योदय आलस्य का अस्ताचल है; बशर्ते युवा शक्ति की सोच सम्यक् हो, मानस में कर्मठता का, कर्त्तव्य का प्रकाश विद्यमान हो।

प्राय यह भी देखा गया है कि युवा वर्ग के लिये यह धारणा मन-मस्तिष्क में बिठा दी जाती है कि उसमें सही दिशा एवं सम्यक् सोच का अभाव है, जोश तो है पर होश का अभाव है। बुद्धि तो है पर निर्मल नहीं है, पुरुषार्थ तो है पर दिशाहीन है। यह धारणा या सोच नितांत तर्क संगत् नहीं, वस्तुतः युवा कर्मठता एवं कर्मशीलता का प्रतीक है। एकाग्रता उसके चित्त में बसती है तभी तो अर्जुन पेड़-पत्तों या किसी अन्य पर निशाना न साधकर सीधा लक्ष्य को साधता है, बेधता है।

बदलनी होगी समाज को अपनी धारणा : कर्त्तव्य की बेदी पर अपने आचरण के साथ युवा पीढ़ी सदैव कर्त्तव्य की बेदी पर अपनी प्रतिभा, अपने संस्कार, अपनी क्षमता से 100% देने का काम करती है। मगर होता क्या है? युवाओं के काम का क्रेडिट महामहिम खा जाते है, वरना जैनागमों एवं चरित्रों में युवा अभयकुमार की बुद्धि के कई प्रसंग है। अभयकुमार ने अपने बुद्धि से राजा श्रेणिक के अनेक अनसुलझे प्रश्नों, जटिल से जटिल मामलों को तत्काल सुलझा दिया तो, राजा स्वयं उसकी मेधा के आगे नतमस्तक हो गया तथा उसे अपना मंत्री नियुक्त किया। इसका तात्पर्य यह है कि युवा बुद्धिनिधान है, तार्किक है, राजमार्ग पर चलने वाला पथिक है। थोड़ा-सा बोध मिलते ही अपनी भूल को स्वीकारने में हिचकिचाता नहीं है। राजकुमार मेघ प्रभु महावीर से बोध प्राप्त कर दीक्षित हुए, रात ठीक प्रकार से व्यतीत नहीं हुई, उन्हें राजमहल याद आने लगे। प्रभु महावीर के समीप पहुंचे, अनुमति मांगी पुनः घर जाने की। प्रभु महावीर ने पुनः सद्बोध देते हुए पिछले जन्म की कहानी सुनाई तो उन्हें जाति स्मरण ज्ञान हुआ, स्वयं ने अपने भव ज्ञात किये। पुनः सुदृढ़ महाव्रती अणगार बन गये। याद रखें युवा महत्वाकांक्षी होता है, उसमें कुछ कर गुजरने की हसरत होती है, जो इसे उपेक्षित करता है, इग्नोर करता है वही आलोचना पर उतर आता है। आज के युवा वर्ग पर भी यही आरोप है कि वह धर्म विमुख हो रहा है, कर्त्तव्यनिष्ठ नहीं है, जबकि मेरा मानना है कि युवाओं से काम लेने की कला आनी चाहिए। युवा सम्मान से ज्यादा स्नेह चाहता है।

सम्मान नहीं स्नेह चाहता है युवा : युवा शक्ति की ऊर्जा को जो पारखी पहचान लेता है, वो युवाओं की अपूर्व क्षमताओं का लाभ ले लेता है। **वास्तव में युवा रक्त दिखावटी सम्मान से ज्यादा स्नेह भरे स्पर्श की चाहत रखता है। आप यदि किसी कार्य को युवाओं से कराना चाहते है तो स्पष्ट संकेत करके अपने भावों को स्नेह सहित प्रस्तुत कर दें, युवा शक्ति उस काम को आसानी से सफल कर देगी। इसके विपरीत आलोचना, व्यंग, उपेक्षा, उपदेश देंगे तो युवा शक्ति निराश होकर आपके रास्ते से हट जाएगी। याद रहे हर आने वाला कल युवा शक्ति ही रचेगी, संवारेगी, सफल भविष्य निर्माण करके दिखा देगी। लेकिन यह तभी संभव होगा, जब युवाओं से परस्परता, स्नेह भरा संवाद, संगठन में अवसर तथा दायित्व के साथ अधिकार भी दिये जाएंगे।** ❖❖

जैन कॉन्फ्रेंस में एकता प्रयासों की सफलता पर वरिष्ठ समाजसेवियों की अनुमोदनाएं!

(माननीय अध्यक्ष महोदय को ये संदेश, ये अनुमोदनाएं फोन पर प्राप्त हुई हैं)

❖ जैन कॉन्फ्रेंस के वर्तमान राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्रीमान् **पदमचंदजी कांकरिया** जैन ने अध्यक्ष महोदय से अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए कहा कि "आनंद सा. आपने और विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन श्रीमान् रमणलालजी लुंकड़ जैन ने एकता प्रयासों के लिये जो कार्य किये है वह बधाई के योग्य है। ये एक जरुरी काम था, क्योंकि विवाद से विकास रूक जाता है, काम करने में अड़चन आती है। अतः यह कार्य अवश्य होना ही चाहिए था। श्रीमान् अतुलजी जैन को राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर चयनित किये जाने पर मैं बधाई देता हूँ। दोनों पक्ष ही इस विवेकशील कार्य के लिये बधाई के पात्र हैं।"

❖ श्री **धर्मीचंदजी कांकरिया** जैन ने प्रसन्न होते हुए कहा कि "आनंदजी के राज में आनंद न हो ये असंभव है। खुशियों का यह सदाबहार रमण अविनाशी हो भाई अतुलजी को अतुलनीय बधाई।"

❖ श्री **गौतमजी गुगलिया** जैन ने कहा कि - "जैन कॉन्फ्रेंस एकता का मंच है। यहाँ एकता धर्म ही शोभा पाता है। हमारे राष्ट्रीय नेतृत्व द्वारा किये गये प्रयासों से श्री अतुलजी जैन को अध्यक्ष पद पर चयनित किये जाने के लिये मैं हृदय से बधाई देता हूँ।"

❖ श्री **देवीचंदजी** जैन ने कहा कि 'जैन कॉन्फ्रेंस समन्वय का मंच है। यहाँ कभी-कभी विवाद भी होते हैं तो विवादों का समाधान भी होता है। हमारे समाज हितैषी राष्ट्रीय नेतृत्व ने समाज के हित में, समाज की एकता के हित में भरपूर प्रयास करके जो सफलता प्राप्त की है मैं इसका अभिनंदन करता हूँ।"

❖ श्री **जयप्रकाश जी ललवानी** जैन ने प्रत्यक्ष बधाई देते हुए कहा कि - "जैन कॉन्फ्रेंस हमारी मातृ संस्था है, हमारे समाज का गौरव है, यहाँ शांति, प्रगति, उन्नति के लिए जो प्रयास राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन और दानवीर भामाशाह श्री रमणलालजी लुंकड़ जैन ने किया है, उसके लिए ये दोनों ही महानुभाव लम्बे समय से लगे हुए थे, यह लक्ष्य प्राप्त हुआ। दोनों ही पक्षों ने सहमति बनाते हुए श्रीमान् अतुलजी जैन ने भावी अध्यक्ष के रूप में चयनित किया। इसलिए सारा समाज और जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण बधाई के हकदार है।"

❖ कर्नाटक से श्री **सुरेशचंदजी छल्लाणी** जैन ने कहा कि "काम को सलाम दुनिया करती है। आज जो एकता के संवाद सुने इससे बड़ी खुशी हुई। अध्यक्ष महोदय और अन्य राष्ट्रीय पदाधिकारीगण जिन्होंने ने भी यह प्रयास किया है उनको मैं हृदय से बधाई देता हूँ।"

❖ वर्तमान कार्याध्यक्ष श्री **अशोककुमार जी मेहता** जैन ने कहा कि "हम पहले ही दिन से इस प्रयास में थे कि जैन कॉन्फ्रेंस में अध्यक्ष के पद को लेकर कोई विवाद न हो, सभी लोग साथ मिलकर कार्य करें इससे जैन कॉन्फ्रेंस ही नहीं सारा श्रमण संघ भी मजबूत होता है।"

❖ श्री **गौतमचंद गुगलिया** जैन ने अध्यक्ष महोदय को बधाई देते हुए कहा कि "मेरा लम्बे समय से जैन कॉन्फ्रेंस से जुड़ाव है। जैन कॉन्फ्रेंस एक अखिल भारतीय परिवार है। इस परिवार की एकता बनी रहे, इसके लिए आपने जो प्रयास किया है मैं उसे सराहनीय मानते हुए सभी बन्धुओं को बधाई देता हूँ।"

❖ श्री **सुरेन्द्रजी कटारिया** जैन ने कहा कि "जैन कॉन्फ्रेंस की शक्ति और आपके द्वारा किये गये विगत् तीन वर्षों के विकासशील कार्यों के कारण ही सभी पक्षों पर यह दबाव रहा कि विवाद न हो और एकता से राष्ट्रीय अध्यक्ष पद का चयन हो। इसी कड़ी में भावी अध्यक्ष श्री अतुलजी जैन का चयन सर्वसम्मति से हुआ यह एक ऐतिहासिक घटना है। इस पर मैं सभी पक्षों को बधाई देता हूँ।"

❖ श्री **अशोकजी नाहर** जैन ने अपनी बात रखते हुए कहा कि "जैसे ही यह समाचार हमें प्राप्त हुआ हृदय प्रसन्नता

से भर गया। यह एकता, यह समन्वय आगे भी बना रहे और जैन कॉन्फ्रेंस संपूर्ण स्थानकवासी जैन समाज की सेवा करने में समर्थ बनें, इसी मंगलभावना के साथ सभी को शुभकामनाएं।"

❖ श्री **जयंतीलाल कूकड़ा जैन** ने कहा कि "अध्यक्ष महोदय आप और हम जैसे सभी सहयोगी आज इस एकता प्रयास की सफलता से हार्दिक रूप से प्रसन्न है। अगर जैन कॉन्फ्रेंस में किन्हीं भी कारणों से विवाद पैदा होता तो हमारा विकास का जो काम है, वह गलत दिशा में जाता है। आज प्रसन्नता का विषय है कि सभी ने समाजहित को महत्व देते हुए एकता प्रयासों में सहयोग किया और यह शुभ घड़ी सामने आयी।"

❖ जैन कॉन्फ्रेंस में अनेक पदों पर सेवाएं दे चुके वरिष्ठ समाजसेवी श्री **अशोककुमार बाबूसेठ बोरा** जैन ने "राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन और महाराष्ट्र गौरव, दानवीर सेठ श्री रमणलालजी लुंकड जैन को बधाई देते हुए कहा कि आपके प्रयासों से जो कार्य आज संभव हो पाया उसकी कल्पना कुछ दिन पहले तक नहीं के बराबर थी। इस कार्य में जिन्होंने ने भी अपना सहयोग दिया है उन सबको मेरी ओर से बधाई।"

❖ श्री **शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट** जैन ने अध्यक्ष महोदय को एवं पूर्व अध्यक्ष श्री अविनाशजी चोरड़िया जैन, श्री पारसजी मोदी जैन और श्री नेमीचंदजी चोपड़ा जैन जैसे अग्रणीय समाजसेवियों को "इस एकता प्रयास में सहयोग दिये जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की। वहीं यह भी कहा कि मैं पहले ही दिन से इस प्रयास में स्वयं लगा हुआ था। अतः मैं स्वयं को भी देव-गुरु-धर्म की कृपा से बधाई का पात्र मानता हूँ।"

❖ ज्ञान प्रकाश योजना के अध्यक्ष समाजसेवी श्री **संजयजी बाफना** जैन ने एकता प्रयासों की सफलता पर बधाई देते हुए अध्यक्ष महोदय एवं दानवीर श्री रमणलालजी लुंकड़ जैन आदि महानुभावों को बधाई देते हुए कहा कि हमारा प्रयास कभी भी समाज में विवाद पैदा करना था ही नहीं। आज जो एकता की एकता का बिगुल फूंका गया, उससे एक बात तो सहज रूप से सामने आई कि **'सभी लोग यह बात हृदय से जानते है कि विवाद नहीं विमर्श से ही जैन कॉन्फ्रेंस आगे बढ़ेगी। मेरे परम मित्र श्री अतुलजी जैन को अध्यक्ष चयनित किये जाने पर मेरी हार्दिक शुभेच्छा।**

❖ अध्यक्ष महोदय को संबोधित करते हुए औरंगाबाद से श्री **प्रकाशजी मुगदिया** जैन ने कहा कि "अध्यक्ष महोदय आगे भी हमको सबको साथ लेकर चलने का प्रयास करना है और जैन कॉन्फ्रेंस को मजबूत बनाना है। आज जो हुआ वह आगे भी जारी रहे, यही शुभकामना।"

❖ श्री **सुनीलजी बाफना** जैन ने कहा कि "जैन कॉन्फ्रेंस में पंचम ज़ोन से ही हमारे युवा प्रतिनिधि ने अध्यक्ष पद चुनाव का वातावरण बनाया था, लेकिन समय रहते सबकी समझाईश पर विशेषकर अध्यक्ष महोदय और अनेक वरिष्ठजनों के सुझावों पर ध्यान देते हुए पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अविनाश जी चोरड़िया जैन और उनकी टीम ने समन्वय का, एकता के प्रयासों का समर्थन करके सारे समाज को खुशी प्रदान की है। मैं अध्यक्ष पद पर आदरणीय बन्धु श्री अतुलजी जैन के चयन किये जाने पर हृदय से बधाई देता हूँ।"

❖ वैय्यावच्च योजना के चेयरमैन श्री **अशोकजी रांका** जैन ने अध्यक्ष महोदय श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन वयोवृद्ध समाजसेवी श्रीमान् रमणलालजी लुंकड़ जैन को एकता प्रयासों के लिये बधाई देते हुए कहा कि समाज की शक्ति, श्रमण संघ की सेवा में लगे इसीलिए जो एकता प्रयास आज सम्पन्न हुआ मैं उसकी हृदय से अनुमोदना करता हूँ।"

❖ वैय्यावच्च योजना के समर्पित समाजसेवी श्रीमान् **रतनचंदजी सिंघवी** जैन ने इन प्रयासों की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए दोनों ही पक्षों के वरिष्ठजनों को बधाई देते हुए कहा कि-**जिस प्रकार हमारे महापुरुष मैत्री की बात कहते हैं, संगठन और संवाद की बात कहते हैं, उसे आपने हृदय से स्वीकार करते हुए जो एकता का वातावरण बनाया है उसके लिए मैं हृदय से सभी को शुभकामनाएं देता हूँ। आगे भी हमारे प्रयास एकता**

की शक्ति को मजबूत करते हुए आगे बढ़ें, ऐसे ही होने चाहिए।

❖ श्री **आनंदीलालजी लोढ़ा** जैन **'राजा बाबू'** ने इन्दौर से अध्यक्ष महोदय को बधाई देते हुए कहा कि आपने विगत् कार्यकाल में जिस प्रकार से युवा दानवीर श्री अतुलजी जैन को आगे बढ़ाया, उसको परखने का अवसर दिया वो अब समाज के सामने हैं। वे हमारे भावी अध्यक्ष के रूप में ये एक इतिहास रचेंगे ऐसा मुझे विश्वास है, हृदय से बधाई।

❖ श्री **वीरेन्द्रजी बोढ़ाना** जैन ने कहा कि-**इन्दौर साधु-सम्मेलन में भाई अतुलजी जैन ने जिस प्रकार से अपनी सेवाएं दी हैं, उससे हम भलीभांति परिचित हैं। हमें उम्मीद है कि अध्यक्ष महोदय श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन और भावी अध्यक्ष श्री अतुलजी जैन वर्तमान से भविष्य तक ऐसा ही इतिहास फिर रचेंगे, आत्मीय शुभकामनाएं।"**

❖ श्री **ललितजी छल्लाणी** जैन ने **"अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के वर्तमान राष्ट्रीय नेतृत्व को एकता प्रयासों की सफलता के लिए बधाई देते हुए कहा कि भविष्य में भी ऐसा ही प्रयास जारी रहे। मेरी तो कामना यह भी है कि प्रांतीय इकाईयाँ भी राष्ट्रीय की ही तरह एकता के प्रयासों को महत्व दें और किसी भी प्रकार का विवाद आगे न बढ़कर सभी लोग समन्वय से जैन कॉन्फ्रेंस को मजबूत करें।"**

❖ श्री **शिखरचंदजी बाफना** जैन ने देश की हृदय स्थली इन्दौर से अध्यक्ष महोदय और विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन श्रीमान् रमणलालजी लुंकड़ को अध्यक्ष पद पर कराए गए सर्वसम्मत निर्णय के लिये बधाई देते हुए कहा कि जिस प्रकार आपका कार्यकाल नवीन विकासशील कार्यों के लिये याद किया जाएगा उसी प्रकार आदरणीय श्री अतुलजी जैन को भी ऐसी ही ऐतिहासिक सफलता प्राप्त हो यह मंगल कामना।

❖ श्री **हेमंतजी बोरा** जैन ने कहा कि मैं अतुलजी जैन को कई दिनों से जान रहा हूँ, समझ रहा हूँ और उनकी कार्यशैली को भी मैंने निकट से देखा है। आपने इन्हीं अपने पक्ष का उम्मीदवार बनाने के बाद भावी राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर लाने और एकता प्रयासों से इन्हें अवसर प्रदान करने के लिए मैं जितनी प्रशंसा करूं, उतनी कम है। मेरी बधाई स्वीकार करें।

❖ श्रीमान् **कंवरलालजी सूरिया** जैन ने अपने साथ सहयोगी समाजसेवी श्री मीठालालजी सिंघवी जैन, मनोहरलाल सूरिया जैन, श्री पंकज सूरिया जैन, श्री नवरतनमलजी बंब जैन, श्री राजेन्द्र सुराणा जैन, श्री महेन्द्रजी छाजेड़ जैन, श्री आनंदजी चपलोत जैन आदि सहयोगियों के साथ अध्यक्ष महोदय श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन और भावी अध्यक्ष श्री अतुलजी जैन को बधाई देते हुए कहा कि आपके साथ विगत् तीन वर्षों से हम लोग समाजसेवा के कार्यों में सहयोगी बने हुए हैं और हमें पूरा विश्वास है कि इस प्रकार से आगे भी संघ हित के, समाज हित के कार्यों को करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस का गौरव बढ़ाने में आप सफल होंगे। दोनों ही महानुभावों को हमारी ओर से हार्दिक बधाई।

❖ मेवाड़ संघ मुंबई के अध्यक्ष प्रसिद्ध समाजसेवी श्री भैरूलालजी लोढ़ा जैन, श्री चतरलालजी लोढ़ा जैन, श्री किशनलालजी परमार जैन, श्री नेमीचंदजी धाकड़ जैन, श्री रोशनलालजी वड़ाला, श्री महेन्द्रजी चोरड़िया जैन, श्री महावीरजी तातेड़ जैन एवं विशेष रूप से श्री नरेशजी लोढ़ा जैन ने इस एकता प्रयास की सफलता पर बधाई देते हुए संयुक्त रूप से कहा कि **"जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास में इस एकता प्रयास को निर्णायक रूप से ऐतिहासिक माना जाएगा, क्योंकि श्रमण संघ के साधु सम्मेलन इन्दौर में जिस प्रकार से भाई श्री अतुलजी जैन ने अपनी सेवाएं देते हुए इतिहास रचा था, उसी प्रकार के अनेक कार्य करने में ये सफल होंगे और श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन का, वयोवृद्ध समाजसेवी, दानवीर श्रीमान् रमणलालजी लुंकड़ जैन का साथ सहयोग, मार्गदर्शन इन्हें प्राप्त रहेगा, इस आशा के साथ समस्त टीम को हृदय से बधाई।"**

❖ पंजाब के वरिष्ठ समाजसेवी मानव रत्न श्री रामकुमार जी जैन 'श्रमण शॉल', श्री संजीव जी जैन, श्री राकेशजी जैन 'लक्की', श्री सुभाषजी जैन 'लिली', श्री सुनील जी जैन आदि ने **"जैन कॉन्फ्रेंस में वर्तमान में संभव हुए एकता प्रयासों**

के समाचार सुनकर दोनों ही पक्षों के वरिष्ठ समाजसेवियों को बधाई देते हुए कहा कि हम तो सदैव ही एकता और संगठन के पक्षधर हैं। इसलिए यह कार्य बधाई के योग्य है, ऐसा मानते हुए भावी अध्यक्ष युवा दानवीर श्री अतुलजी जैन का राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर चयन किये जाने की अनुमोदना करते हैं।"

❖ पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष वरिष्ठ समाजसेवी श्रीमान् जे. डी. जैन जी एवं श्री मनमोहनजी जैन, श्री पुष्कर जी जैन, श्री भास्कर जी जैन आदि ने दोनों ही पक्षों द्वारा जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में सहमति व्यक्त करते हुए एकता प्रयासों को जिस प्रकार बल दिया है, वह अनुमोदनीय है बधाई का पात्र है।

❖ श्री सत्यभूषण जी जैन, श्री एस. पी. जैन जी, श्री महावीर प्रसाद जी जैन, श्री प्रशांत जी जैन, श्री सुरेशकुमार जी जैन, श्री जगदीश प्रसाद जी जैन, श्री जयकुमार जी जैन श्री अशोक जी 'जयचंदा' आदि ने जैन कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन एवं विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन श्री रमणलालजी लुंकड जैन, चेयरमैन श्री सुभाष जी ओसवाल जैन आदि को बधाई देते हुए एकता प्रयासों पर अपनी हार्दिक प्रसन्नता जाहिर की। इस प्रकार संपूर्ण देश से स्थान-स्थान से संघ हितैषी समाजसेवियों ने एकता प्रयासों को बल देते हुए अपनी शुभकामनाएं प्रकट की है। कहा किसी कवि ने सही कि :-

इतिहास सदा जीवित रहता, फिर से खुद को दोहराता है ।
कोई संकल्प धनी फिर से, एक नव इतिहास रचाता है ।।
ये यात्रा चलती रहती है, पग-पग ले साथ समय अपने ।
जो आज हुआ ये फिर-फिर हो, ये मैत्री भाव मन भाता है ।।

कोई कितना भी बड़ा हो काली युक्ति से विजय नहीं मिलती !

एक बार जंगल में पशु-पक्षियों की भरी सभा में काली चिड़िया और बाज ने ऊंचा उड़ने की शर्त लगाई। बाज बोला - 'मुझे सभी पक्षियों का राजा इसीलिए ही कहते हैं क्योंकि मैं सबसे ऊँचा उड़ सकता हूँ।' काली चिड़िया को बाज की अहंकार भरी बातें सहन न हुईं। वो बोली - 'मैं उड़कर दिखाऊंगी तुझसे ऊँचा।' आखिर दोनों में शर्त लग गई और तय हुआ कि दोनों सिर पर कोई चीज उठाकर ऊँचा उड़ें। बाज बहुत चालाक था। उसने सिर पर रुई का गोला रखा, क्योंकि रुई देखने में ज्यादा किंतु वजन में हल्की होती है। लेकिन चिड़िया ने सिर पर नमक की डली रखी, क्योंकि नमक की डली देखने में छोटी होती है।

उस भोली चिड़िया को क्या पता था कि नमक की डली छोटी होने पर भी रुई से कहीं अधिक भारी होती है। दोनों ने उड़ना शुरू किया। बाज काली चिड़िया से काफी ऊँचा निकल गया। सबको निश्चय हो गया कि कुछ ही देर में काली चिड़िया हार मान लेगी और विजय की माला बाज के गले में शोभा बढ़ाएगी। दोनों ऊंचे उड़ते-उड़ते बादलों में पहुंच गए। सहसा बाजी ने पलटा खाया। बादल की बूंदों में रुई भीगने लगी और बाज का सिर भारी होने लगा, जबकि नमक घुलकर बहने लगा और काली चिड़िया का सिर हल्का होने लगा। दोनों उड़ते गए। ऊँचे और ऊँचे अैर फिर और भी ऊंचे।

सिर का बोझ हल्का होने से काली चिड़िया के पंखों में मानो नई ताकत आ गई। अब तो काली चिड़िया ने पंख और जोर से फड़फड़ाए और वह ऊँचे उड़कर बाज के बराबर आ गई। नीचे पशु-पक्षियों ने जब देखा कि दोनों एक-दूसरे के बराबर उड़ रहे हैं तो वे तालियां बजाने लगे। उनकी तालियों की गड़गड़ाहट और किलकारियों से सारा जंगल और आकाश गूंज उठा। दोनों और भी तेजी से पंख फड़फड़ाने लगे और एक-दूसरे से आगे निकलने की जी तोड़ कोशिशें करने लगे, परन्तु काली चिड़िया ने बाज को नीचे छोड़ दिया। वह उड़ती गई उड़ती गई बाज से ऊँचे और फिर और भी ऊँचे।

आखिर बाज ने हार मान ली और दोनों पक्षी नीचे धरती पर उतर आए। इस प्रसंग से शिक्षा यह मिलती है कि कोई भी कितना ही बड़ा क्यों न हो और उसकी युक्ति में कितना ही अहंकार हो, लेकिन उसे कोई छोटी काली चिड़िया भी चुनौती दे सकती है और पराजित भी कर सकती है। ❖❖

सामाजिक जवाबदेही है स्मरण कराना !

लोकतांत्रिक समाज की सबसे बड़ी खूबी है पारदर्शिता। जो लोग इस विचार से सहमत होते हैं वो 'जो किया है उसे भी बताते हैं और जो भविष्य में करना है उसे भी संकल्पित करते हैं। इसीलिए सभ्य समाज में संदर्भ, पुर्नपाठ और याददाश्त जैसे शब्द मान्य है। इसका कारण भी स्पष्ट है कि जो लोग पद पर रहकर अपना दायित्व निभाते हैं - वे बताएं कि क्या-क्या किया ? यह प्रश्न समाज द्वारा उठाया जाना भी वाजिब है तो क्या-क्या किया यह बताना भी एक जिम्मेदारी है।

प्रस्तुत रिपोर्ट के अंशों का मात्र दोहराव नहीं है यह उन कामों का स्मरण कराना है जो किये गये हैं। इसका दूसरा पक्ष यह है कि जो कहकर आए थे वो किया कि नहीं ? अतः पूर्व प्रकाशित स्मरणीय पलों और उपलब्धियों का यह ब्यौरा यहाँ सादर प्रस्तुत है।

जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय प्रबंध समिति व राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभाएं सम्पन्न

भामाशाह श्रेष्ठिवर्य श्री रसिकलाल जी एम.-सौ. कमलाबाई धारीवाल सांस्कृतिक हॉल का भव्य उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न

19 मार्च 2023 को जैन कॉन्फ्रेंस के मुख्यालय जैन भवन, नई दिल्ली परिसर में आयोजित राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा के प्रारंभ से पूर्व श्री रसिकलालजी एम. धारीवाल की धर्मपत्नी सौ. कमलाबाई जी धारीवाल जैन, जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री प्रकाशचंदजी धारीवाल - श्रीमती दिनाजी प्रकाशचंदजी धारीवाल जैन, सुपौत्र श्री आदित्य एवं सुपौत्री कुमारी साक्षी धारीवाल जी जैन द्वारा प्रदान की गई। रुपये 51,00,000/- (इक्यावन लाख रुपये) की राशि के परम सहयोग से तैयार **'भामाशाह श्रेष्ठिवर्य श्री रसिकलाल जी एम.-सौ. कमलाबाई धारीवाल सांस्कृतिक हॉल'** का उद्घाटन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमल जी छल्लाणी जैन सा. एवं अन्य शीर्ष पदाधिकारियों की उल्लासमयी उपस्थिति में सामूहिक नवकार महामंत्र उच्चारण एवं हर्षनाद के साथ किया गया। तत्पश्चात् पहले श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली की राष्ट्रीय प्रबंध समिति तथा इसके समापन के कुछ समय बाद राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की सभा का आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमल जी छल्लाणी जैन की अध्यक्षता में किया गया। राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा में उपस्थित सभी पदाधिकारी मंचस्थ रहे।

सभा को प्रारंभ करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमल जी छल्लाणी जैन सा. ने जहां श्री रसिकलाल जी एम. धारीवाल-सौ. कमलाबाई जी धारीवाल परिवार, घोड़नदी (महाराष्ट्र) द्वारा प्रदान की गई दानराशि हेतु जहां हार्दिक आभार प्रकट किया। इसके अलावा राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने उपस्थित बन्धुओं का शाब्दिक स्वागत-अभिनंदन करने के साथ ही उन्होंने राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुल जैन को सभा का संचालन करने हेतु सादर आमंत्रित किया। श्री अशोक मेहता जैन ने विगत् सभा की कार्यवाही प्रस्तुत की जिसे उपस्थित महानुभावों ने सर्वसम्मति से सहर्ष पारित कर दिया।

जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता प्राप्त करने हेतु कार्यालय में सभा की तारीख से सात दिवस पूर्व करीब 216 आवेदन पत्रों को पूर्ण सहमति देते हुए पास किया गया। सभा में वर्ष 2023-24 की अनुमानित आय-व्यय पत्रक (बजट) की प्रस्तुति राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री पदमचंद जी कांकरिया द्वारा दी गई, जिसे सुनने के बाद सभी उपस्थित सदस्यों ने इसे पारित कर दिया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा में सर्वप्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन ने उपस्थित पदाधिकारियों एवं सदस्यों का स्वागत अभिनंदन करते हुए सभा की कार्यवाही हेतु राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुल जैन को आमंत्रित किया। राष्ट्रीय महिला कार्यकारिणी समिति सदस्या श्रीमती ऋचा जी जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। स्वर्गस्थ साधु-साध्वी व श्रावक-श्राविकाओं को उपस्थित सदस्यों ने दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री अशोकजी

मेहता ने गत् कार्यकारिणी सभा की कार्यवाही पढ़ी जिसे सभी सदस्यों ने सुनकर सर्वसम्मति से पारित किया। राष्ट्रीय महमंत्री श्री अतुलजी जैन द्वारा सभा समापन से पूर्व सभी का धन्यवाद एवं आभार प्रकट किया गया। गौतम प्रसादी का लाभ श्री अतुल जी जैन के परिवार की ओर से किया गया।

संविधान संशोधन हेतु समिति गठित

संविधान संशोधन के विषय को देखने हेतु पाँच सदस्यीय नई समिति के गठन की घोषणा की गई, जिसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री सहित राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री अशोक कुमार जी मेहता जैन, राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री श्री दिलीप जी खिंवसरा जैन, निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन को शामिल किया गया।

जैन कॉन्फ्रेंस के संविधान के अनुसार लगातार तीन मीटिंग में उपस्थित न होने वाले सदस्यों को निष्कासित किए जाने पर सहमति बनी। राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुल जी जैन ने जैन भवन कार्यालय में पूर्व राष्ट्रीय चेयरमैन के रूप में मनोनीत समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों के चित्रों को उचित सम्मान दिया जाना चाहिए, जिसे सभी ने अनुमोदना प्रदान की। इसके साथ ही राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा की प्रारम्भ करने की घोषणा की गई। राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा की शुरुआत राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा के तुरन्त बाद की गई। जिसकी अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन ने सभी उपस्थित महानुभावों का शाब्दिक स्वागत अभिनन्दन किया तथा राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुल जी जैन से मीटिंग की कार्यवाही विधिवत् रूप से प्रारम्भ करने हेतु आग्रह किया। राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की मीटिंग प्रारम्भ करते हुए राष्ट्रीय महामंत्री जी के निमंत्रण पर राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्या श्रीमती ऋचा जैन ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। स्वर्गस्थ श्रमण-श्रमणी एवं श्रावक-श्राविका वर्ग की सूची श्री जसवन्त जी जैन द्वारा पढ़ी गई। उपस्थित महानुभावों द्वारा दो मिनट का मौन रखते हुए स्वर्गस्थ आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की गत् मीटिंग की कार्यवाही को सस्वर पारित किया गया। कोर्ट केसों की जानकारी को भी सभी सदस्यों ने सस्वर पारित किया। एल. एण्ड डी.ओ. के विषय को सदस्यों ने एक स्वर से पारित किया। जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा निर्धारित राशि का भुगतान न करने वाले मनोनीत सदस्यों एवं पदाधिकारियों की सदस्यता जारी रखने के विषय में प्रबन्ध समिति में हुए निर्णय को पास किया गया। तीन सभाओं में लगातार अनुपस्थित रहने वाले सदस्यों के विषय को भी प्रबन्ध समिति के लिए गए निर्णयानुसार अमल में लाने को सभी ने सहमति प्रदान की। सविधान की धारा 9 (घ) के नियम-उपनियम के अनुसार वर्तमान राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति/प्रबन्ध समिति के कार्यकाल को आगामी छः माह तक बढ़ाने के विषय को सभी उपस्थित सदस्यों द्वारा सहमति प्रदान की गई।

जैन भवन में जारी मरम्मत एवं नवीनीकरण कार्यों के सम्बन्ध में सदस्यों द्वारा संतोष प्रदान करते हुए इस विषय को सर्वसम्मति से पास किया गया। इसके अलावा अनेक सदस्यों द्वारा अपने विचार प्रस्तुत किए गए जिनमें श्री शशिकुमार 'पिन्टू' कर्नावट जैन ने जहां 17 अगस्त 2023 को आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा. के जन्म प्रसंग पर देशभर में 1,08,000 आयम्बिल करने का लक्ष्य समाज के समक्ष रखा वहीं राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष श्री पदमचंदजी आच्छा जैन द्वारा युवाओं की ओर से भावी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। मीटिंग के दौरान यह भी चर्चा हुई कि श्रमण संघीय संत-सतीवृन्द के चातुर्मास आडम्बर रहित, सादगीपूर्ण एवं जप-तप-स्वाध्याय-साधनायुक्त हो, इसमें पदाधिकारियों एवं सभी के सहयोग पर भी विशेष बल दिया गया। **'आत्म-आनन्द पुरस्कार'** की घोषणा की जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि इस वर्ष 2023 का यह प्रतिष्ठित सम्मान, राज्यसभा सांसद श्री लहरसिंहजी सिरोया जैन को दिये जाने पर सहमति बनी है। जिसे सुनकर समी उपस्थित महानुभावों ने हर्षपूर्वक जयनाद किया, तत्पश्चात् मीटिंग समाप्ति की घोषणा की गई। मीटिंग के पश्चात् स्वरूचिभोज के लाभार्थी राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुल जी जैन परिवार, नई दिल्ली रहे।

जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा

एवं वार्षिक साधारण सभा का दो दिवसीय आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न

तीनों ही सभाओं में 'संविधान संशोधन समिति' द्वारा प्रस्तावित संविधान पूर्ण बहुमत से पारित हुआ

जो भी महानुभाव पूर्व में राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं ! वे महानुभाव दोबारा राष्ट्रीय अध्यक्ष पद की नामांकन प्रक्रिया का हिस्सा नहीं होंगे !

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस की राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं का आयोजन सोमवार दिनांक 30 अक्टूबर एवं साधारण सभा का आयोजन मंगलवार 31 अक्टूबर 2023 को जैन भवन, गोल मार्किट, नई दिल्ली में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन की अध्यक्षता तथा माननीय हाईकोर्ट द्वारा तीनों सभाओं के लिए नियुक्त किये गये 'ऑब्जर्वर पूर्व हाईकोर्ट जज श्रीमान् अजितजी भरिहोक' के निरीक्षण में सफलतापूर्वक किया गया।

तीनों सभाओं का सफल संचालन जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुलजी जैन द्वारा प्रभावशाली रूप से किया गया। तीनों सभाओं की शुरुआत मंगलाचरण के द्वारा राष्ट्रीय महिला शाखा की सदस्याओं द्वारा नवकार महामंत्र की प्रस्तुति के साथ की गयी।

सभा के सबसे महत्वपूर्ण बिन्दु **'संविधान संशोधन समिति'** द्वारा प्रस्तावित संविधान को राष्ट्रीय प्रबंध समिति सभा, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा एवं साधारण सभा द्वारा पूर्ण बहुमत के साथ पारित किया गया। प्रस्तावित सभी दस संशोधनों को बहुमत के साथ पारित कर जैन कॉन्फ्रेंस के संविधान में शामिल किया गया। **सबसे महत्वपूर्ण प्रस्तावित संविधान संशोधन के प्वाइंट नंबर एक के अनुसार "जो भी महानुभाव पूर्व में राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं, वे महानुभाव दोबारा राष्ट्रीय अध्यक्ष पद की नामांकन प्रक्रिया का हिस्सा नहीं होंगे।"** इस चर्चा में भाग लेते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा 'जैन कॉन्फ्रेंस एक आत्मीय परिवार है, यहाँ किसी भी व्यक्ति विशेष को ध्यान में रखकर कोई निर्णय नहीं लिया जा सकता।

यहाँ हम समाज की सेवा का लक्ष्य लेकर अपना-अपना दायित्व संभाले हुए है। बिना किसी भय या पक्षपात के हमारी सभा सबके हित, सबके अधिकार के लिए निर्णय लेती है। सबको समान अधिकार और कर्त्तव्य के लिए जैन कॉन्फ्रेंस काम करती है। जो निर्णय हम पर लागू है, वही निर्णय सभी पर समान रूप से लागू होगा।

उपस्थित सभी सदस्यों ने राष्ट्रीय प्रबंध समिति व राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सभा में, उनकी **कुल सदस्य संख्या की 2/3 सदस्यों के लिखित बहुमत से पारित किया एवं साधारण सभा में उपस्थित सदस्यों के 3/4 सदस्यों से भी अधिक सदस्यों की सहमति के साथ पूर्ण बहुमत से पारित कर दिया गया।**

प्रस्तावित संविधान संशोधन के पूर्ण बहुमत से पारित होने पर सभी ने हर्ष-हर्ष, जय-जय के साथ अपनी सहमति प्रदान की। इसके अलावा सभा के सभी मुख्य बिन्दुओं को सदन के सम्मुख प्रस्तुत कर चर्चा की गई, जिन पर वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सभी विषयों को सर्वसम्मति से पारित किया। तीनों ही सभाओं में जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारियों, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्यों, कार्यकर्ताओं एवं आजीवन सदस्यों की उपस्थिति बहुत सराहनीय रही।

जैन कॉन्फ्रेंस का विधान संशोधन : कब-कब और क्यों ?

1. मौरवी में स्थापना के समय ही प्रथम बार संस्था का विधान बना, लेकिन कतिपय धाराओं, सभासदों की असहमति पर मात्र तीन वर्ष बाद कुछ धाराएं बदल की गई, पुराने रिकॉर्ड में दर्ज ये विवरण अब उपलब्ध नहीं है।
2. रतलाम में दूसरा सम्मेलन 1908 में हुआ। इसके अध्यक्ष थे अहमदाबाद निवासी श्रीमान् केवलचंद त्रिभुवनदास जी, इस सम्मेलन में रोकड़ प्रबंध पर विवादास्पद धाराएं बदल दी गई और नए नियम लागू हुए।
3. जैन कॉन्फ्रेंस का लक्ष्य संगठन, समन्वय और संवाद है अतः विधान संबंधी कट्टरता कभी भी मान्य नहीं रही। सन् 1941 में घाटकोपर अधिवेशन के समय स्वयं अध्यक्ष श्री वीरचंद भाई ने कई धाराओं में बदलाव का प्रस्ताव रखा, जो मान्य होकर भी अनेदखा रहा कि 'कोई दूसरी बार अध्यक्ष नहीं होगा।
4. श्रीमान् कुंदनमल जी फिरोदिया एक स्थापित विधानविद थे, आपको महाराष्ट्र विधान सभा की अध्यक्षता का भी अनुभव था, इनके कार्यकाल 1949 में विधान में परिवर्तन किया गया, जो मद्रास अधिवेशन में पास हुआ था।
5. अधिकांश सभासदों को ज्ञान नहीं होगा कि मुंबई से दिल्ली, चांदनी चौक में कार्यालय लाने और कार्य विभाजन करते समय प्रसिद्ध साहित्यकार एवं बेरिस्टर श्रीमान् लक्ष्मीलाल जी सिंघवी ने पुनः जैन कॉन्फ्रेंस के विधान का संचयन किया जो आज भी परिवर्तित रूप में मान्य है।
6. सेठ अचलसिंह जी जो कि एक प्रभावी सांसद और राजनेता थे, उनके समय भी सन् 1958 से 1970 तक ही सभा में सभासदों की राय पर तीन बार विधान की धाराएं बदली गई।
7. इसके बाद सन् 1997 में श्रीमान् हस्तीमल जी मुणोत के समय विधान में संशोधन हुआ।
8. एक संशोधन सन् 2008 में हुआ।
9. फिर एक और संशोधन 2010 में हुआ।
10. सन् 2018 में भी संशोधन किया गया।
11. सन् 2023 में संशोधन होकर पहली बार एक पक्ष कोर्ट में पहुँचा मगर तीनों सभाओं में बहुमत से संशोधन पास हुआ, इस प्रकार जैन कॉन्फ्रेंस में अंतिम संशोधन के पूर्व 10 बार संशोधन सम्पन्न हुए है।

व्यवस्था - अर्हता और बदलाव

ये विषय चुनाव कार्यप्रणाली में जोड़ा गया

संस्था के चुनाव में यदि राष्ट्रीय अध्यक्ष पद का प्रत्याशी अपना नामांकन पत्र वापिस लेता है तो उसके द्वारा जमा कराई गई 7,51,000/- रुपये की नामांकन शुल्क राशि में से 25 प्रतिशत राशि काट कर ही उन महानुभाव को वापिस की जाएगी।

प्रांतीय अध्यक्ष पद हेतु नामांकन पत्र के साथ 1,01,000/- रुपये की नामांकन शुल्क राशि जमा कराने हेतु प्रस्तावित है तथा उनके द्वारा नामांकन पत्र वापिस लेने की स्थिति में उन्हें 25 प्रतिशत राशि काट कर ही उन महानुभाव को वापिस की जाएगी।

राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य हेतु नामांकन पत्र के साथ 21,000/- रुपये की नामांकन शुल्क राशि जमा कराने हेतु प्रस्तावित है तथा उनके द्वारा नामांकन पत्र वापिस लेने की स्थिति में उन्हें 25% राशि काट कर ही उन महानुभाव को वापिस की जाएगी।

जिसके जीवन में गुरु नहीं, उसका जीवन शुरु नहीं !

अन्य कार्यप्रणाली को व्यवहारिकता के सन्दर्भ में जोड़ने वाले विषय निम्मान्नुसार है :-

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार मंत्री एवं राष्ट्रीय संगठन मंत्री के दायित्वों एवं कर्त्तव्यों को आवश्यक रूप से आवधिक रिपोर्ट के रूप में भेजने हेतु एक मानक संचालक प्रक्रिया बनाई जाए।

जैन कॉन्फ्रेंस के अंतर्गत चलाई जा रही सभी राष्ट्रीय योजनाओं में पदाधिरियों की वर्तमान संख्या को कम से कम 45 प्रतिशत तक सीमित किया जाए।

नए राष्ट्रीय अध्यक्ष के चुनाव के बाद जैन कॉन्फ्रेंस के कार्यकाल में प्रांतीय पदाधिकारियों की सूचियाँ यदि 45 दिन के अंदर प्राप्त नहीं होती है, तो उस सम्बन्धित प्रांत/ज़ोन से कार्यालय में सूची प्राप्त न होने के कारण सदस्यों की योग्यता सिद्ध नहीं हो पाएगी।

राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा जैन भवन को नवीन स्वरूप प्रदान करने का सर्वसम्मत संकल्प

नव-निर्माण की दिशा में चमकदार पहल

जहाँ-जहाँ भी नव-निर्माण की चाहत जागती है वहाँ संकल्प की दृढ़ता, आत्मबल और सहयोगियों का साथ बड़ा जरूरी होता है। वर्तमान अध्यक्ष श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन को यह सब सौभाग्य से प्राप्त रहा। सितम्बर माह में शपथ के बाद जैन भवन के नव-निर्माण का निश्चय प्रथम जूम मीटिंग में ही घोषित कर दिया गया। फरवरी आते-आते तक तो भूमि पूजन भी हो गया और तेज गति से कार्य होने लगा।

❖ पहली मीटिंग के बाद जैन कॉन्फ्रेंस के केन्द्रीय कार्यालय के अतिथिगृह में पधारने वाले महानुभावों के लिए वर्तमन में 32 कमरे यहाँ रूकने के लिये उपलब्ध है।

❖ जैन भवन के सौन्दर्यीकरण का कार्य तेजी से चलकर पूर्ण हो गया। सम्पूर्ण भवन का जहाँ नवीनीकरण किया गया है। वहीं इसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष कार्यालय / राष्ट्रीय महामंत्री कार्यालय / राष्ट्रीय महिला शाखा, राष्ट्रीय युवा शाखा, स्वागत-कक्ष, प्रशासनिक कार्यालय के अतिरिक्त अन्य सुविधाओं को आधुनिक स्वरूप प्रदान किये जाने का कार्य पूर्णता को प्राप्त हो चुका हैं।

❖ **जैन समाज रत्न, दानवीर भामाशाह एवं वर्तमान में विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन श्रीमान् रमनलालजी कपूरचंदजी लुंकड़ का योगदान भी अत्यंत उत्कृष्ठ रहा है।** आपके सौजन्य से सभा मण्डपम् हेतु रुपये 31 लाख की दानराशि प्राप्त हुई तो वहीं जैन अतिथि गृह के लिये 1 करोड़ 11 लाख रुपये की दानराशि जैन कॉन्फ्रेंस की अभिवृद्धि में प्राप्त हुई। आपके इस उदारमना सहयोग के लिये जैन कॉन्फ्रेंस परिवार सदैव आपका आभारी रहेगा। आप, अपने इस दान और खुले मन से सहयोग करने के लिये आपका आभार व्यक्त करते हुये आपको धन्यवाद ज्ञापित करते हैं। ऐसा सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया गया।

❖ **भामाशाह श्रेष्ठिवर्य श्री रसिकलालजी एम.-कमलाबाई धारीवाल जैन** सांस्कृतिक हॉल जोकि पूरी तरह से वातानुकूलित है, उसका नवीनीकरण किया गया है। यह हॉल 200 से 250 लोगों की उपस्थिति के लिए सुविधाजनक है तथा इसमें सामाजिक कार्यक्रमों, सभाओं, पारिवारिक कार्यक्रमों, पार्टी आदि का आयोजन सहजतापूर्वक किया जा सकता है। पार्किंग की पर्याप्त सुविधा भी यहाँ उपलब्ध है।

❖ जैन भवन में पधारने वाले महानुभावों के लिए कन्दमूल रहित शुद्ध व सात्विक **'जैन भोजनशाला'** के नवीनीकरण के उपरांत **भामाशाह श्रेष्ठिवर्य श्री सुनीलजी खेतपालिया सा.** द्वारा जहाँ जैन कॉन्फ्रेंस को आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ। उन्होंने अपने कर-कमलों द्वारा इस भोजनशाला का उद्घाटन किया। यहाँ उचित दरों पर सुबह का नाश्ता, दोपहर एवं संध्याकालीन भोजन के अलावा नमकीन चाय-कॉफी आदि उपलब्ध है।

❖ जैन भवन कार्यालय की कार्यप्रणाली को आधुनिक टैक्नोलॉजी से जोड़ने का कार्य भी तेजी से हुआ है। भविष्य में संस्था के आजीवन सदस्यों को किसी प्रकार की सूचना की जानकारी प्राप्त करने के संबंध में असुविधा न हो यह प्रबंध किया गया है।

❖ जो भी महानुभाव संस्था को दान देने की भावना रखते हैं, वे अपना पैन नंबर रसीद पर लिखवाकर आयकर की धारा 80G के अंतर्गत छूट प्राप्त कर सकते हैं। जैन कॉन्फ्रेंस के अंतर्गत चल रही योजनाओं के पदाधिकारियों द्वारा अपनी क्षमता से अधिक कार्य किये गये हैं, जिसमें सभी योजनाओं के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय मंत्री महोदयों का योगदान प्रशंसनीय व अनुमोदनीय है। परिणाम स्वरूप जैन कॉन्फ्रेंस की सामाजिक योगदान में प्रतिष्ठित छवि बनी है।

❖ हमारे इस कार्यकाल में हम आर्थिक प्रबंधों को, दान सहयोग को व्यापक करने की दिशा में गंभीर रूप से प्रयास कर रहे है। हमारा मानना है कि संस्था के खाते में एक ऐसा विशाल फण्ड संग्रहित हो जिसके इंट्रेस्ट से प्रति वर्ष इतनी आय अवश्य हो कि जैन कॉन्फ्रेंस श्रमण संघ के पूज्य साधु-साध्वी जी महाराज साहब की संयम यात्रा को सुखद बना सके। ये कैसे संभव होगा इस पर हमारे विद्वान, प्रतिभावान, अर्थ तंत्र के ज्ञाता लगातार चिन्तन कर रहे हैं कि सुक्रत दान के सहयोग से हम जैन कॉन्फ्रेंस का संचालन करने में समर्थ बन पाये, वो भी मान्य कानून के अनुसार। अतः पहले ही **जैन कॉन्फ्रेंस 80G सम्प्राप्त ऐसी संस्था है जो दानदाताओं के सहयोग को, उनके अर्थ प्रबंध में अड़चन न आये ऐसा प्रयास प्रबंध करती रही है। वर्तमान सत्र में तो हम CRS लाईसेन्स भी प्राप्त कर चुके है, जिसके अंतर्गत लगभग 100 करोड़ रुपये एकत्र करने का हमारा लक्ष्य है।**

❖ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन सा जहाँ सम्पूर्ण विकासोन्मुखी कार्यों की रोजाना जानकारी लेते रहे हैं। वहीं जैन भवन के प्रगतिसूचक कार्यों में राष्ट्रीय महामंत्री श्री अतुल जी जैन-दिल्ली, राष्ट्रीय सह-कोषाध्यक्ष श्री जसवंत जी जैन-दिल्ली, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री जय प्रकाश जी ललवानी जैन-चेन्नई भी अपना बहुमूल्य समय संस्था के लिये निरंतर समर्पित किया है, सबका हृदय से आभार !

जैन कॉन्फ्रेंस में इस कार्यकाल में किए गए नवीन कार्यों की प्रगति रिपोर्ट

नवीन सत्र सन् 2021 से 2024 कई अपेक्षाओं के साथ प्रारंभ होकर पूर्णता की ओर है। इस कार्यकाल में जैन कॉन्फ्रेंस एवं समस्त स्थानकवासी समाज की प्रतिष्ठा को ध्यान में रखते हुए धार्मिक, साधर्मिक एवं सामाजिक दिशा में सद्कार्य सम्पन्न हों और विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत समाज को प्रेरित करने हेतु उन्हें जैन कॉन्फ्रेंस से एवं जैन कॉन्फ्रेंस के कार्यों के साथ जोड़ा जाए ये प्रयास निरंतर चला। श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली का सर्वप्रथम दायित्व यह रहा है कि हम सभी प्रांतों में स्थानकवासी समाज की संस्थाओं और श्रीसंघों के भावी समाजसेवी युवाओं को एक मंच पर लाए और सभी कार्यों में उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ें। इस प्रयास में अपेक्षित सफलता भी मिली और अनेक रचनचात्मक सुझाव प्राप्त हुए। इनमें प्रमुख रहा :-

जैन कॉन्फ्रेंस सदस्यता अभियान : राष्ट्रीय स्तर पर जैन कॉन्फ्रेंस के नए सदस्य बनाना, प्रांतीय शाखाओं के सहयोग से युवाओं को जैन कॉन्फ्रेंस से जोड़ना। जैन कॉन्फ्रेंस की गतिविधियों को प्रचार द्वारा संस्था के कार्यों की जानकारी हर संघ व समाज तक पहुंचाना। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार वर्तमान में सदस्य संख्या 77 हजार पार कर गई है मगर आने वाले वर्षों में यह संख्या एक लाख पहुँचाने का लक्ष्य है। इसका अगला चरण होगा।

जैन कॉन्फ्रेंस कनैक्ट मोबाईल ऐप : जैन कॉन्फ्रेंस के सदस्यों की पूर्ण सूची। इस मोबाईल ऐप द्वारा सभी आजीवन सदस्य अपने सामाजिक, व्यापारिक और अन्य विषयों के संदर्भ में जोड़े जाएंगे। आप इसका उपयोग व्यक्तिगत रूप से विवाह योग्य युवा-युवतियों की जानकारी हेतु भी अपने प्रयासों से कर सकेंगे। समस्त समाज को जोड़ने की उत्तम व्यवस्था इस ऐप

द्वारा की जाएगी।

आधुनिक तकनीक का प्रयोग करते हुए जैन भवन से संचालित होगा :-

जैन कॉन्फ्रेंस मोबाईल ऐप : साधु-साध्वी जी महाराज की विहार में अनुकूलता एवं सूचना हेतु राष्ट्रीय स्तर पर विहार संबंधित जानकारी उपलब्ध कराना तथा विहार मार्ग, ठहरने की सुविधाएं, विहार सैनिकों की सूचना इत्यादि। आज इसकी नितांत आवश्यकता है। क्योंकि मार्ग में सूचना ना होने से ना तो त्वरित सहायता मिल पाती है ना प्रासुक आहार-पानी। रोग ग्रस्त साधु-साध्वी का दवा, औषधी उपलब्ध करा पाना भी कठिन होता है। अतः जितनी जल्दी विहार ऐप एवं विहार धाम की लिंक बनाना हमारी प्राथमिकता है।

धार्मिक संस्कार एवं जैन संस्कृति : आज हमारी युवा पीढ़ी धर्म से विमुख होती जा रही है। युवाओं के लिए राष्ट्रीय स्तर पर संस्कार व ज्ञान शिविर का आयोजन किया जाने का निश्चय है। गुरुजनों को नित्य-वंदन, आहार बहराना, उनकी विहार सेवा आदि कर्त्तव्यों से अवगत कराना जरूरी है। जैन कॉन्फ्रेंस को सभी युवाओं से यह अपेक्षा है। इन संकल्पों को साकार करने में युवाओं का साथ अति आवश्यक है। जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय एवं प्रांतीय शाखा के सभी युवाओं को जोड़कर इस दिशा में कार्य योजना प्रारंभ तो हुई मगर कतिपय कारणों से यह अभियान लक्ष्य प्राप्त करने में सफल नहीं हो पाया, लेकिन इस कार्य को किया अवश्य जाएगा। संस्कृति संवर्धन एवं धर्म ज्ञान वृद्धि के लिए ही श्रुत संवर्धन और ज्ञान प्रकाश योजनाओं को सशक्त करना हमारा लक्ष्य है।

जैन कॉन्फ्रेंस द्वारा श्रमण संघ निष्ठा पत्र प्रकाशन : जैन कॉन्फ्रेंस ने युग प्रधान आचार्य ध्यान योगी पूज्य डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. के मार्गदर्शन एवं परम पूज्य युवाचार्य श्री महेन्द्रऋषिजी म.सा. की सद्प्रेरणा से श्रमण संघ निष्ठा पत्र का प्रकाशन किया। आगामी कार्यकाल में यह प्रपत्र हर प्रांत एवं नगर-नगर में प्रतिज्ञा पत्र की तरह वितरित होगा और जन जाग्रति का सहायक बनेगा।

विधिवत तीनों ही सभाओं का संचालन सम्पन्न हुआ : ये लगभग सभी सभाएं भारी उपस्थिति और सहयोग समर्थन के साथ सम्पन्न हुई। इनमें से कुछ मीटिंग जूम ऐव से हुई तो एक जैन भवन, नई दिल्ली के बाहर जालना नगर में हुई। इनमें संविधान संशोधन हो या नव निर्माण की मंजूरी, विधिवत ऑडिट या योजनाओं के माध्यम से किए गए सेवा कार्य सभी में अच्छा सहयोग प्राप्त हुआ। जिन-जिन योजनाओं में जो-जो आय-व्यय हुआ उसका ब्यौरा आय-व्यय निम्न प्रकार से है -

जीवन प्रकाश योजना - दानराशि

मैडिकल	:	रुपये **15,42,066 / -**
शिक्षा	:	रुपये **98,81,285 / -**
कुल	:	रुपये **1,14,23,351 / -**

जीवदया योजना - दानराशि

गौशालाओं को सीधे दान

कुल खर्च	:	रुपये **29,73,264 / -**

मानव सेवा योजना - दानराशि

सिलाई मशीन एवं विधवा पेंशन में खर्च

कुल	:	रुपये **36,34,889 / -**

विहारधाम योजना - दानराशि

कुल खर्च	:	रुपये **16,885 / -**

वैय्यावच्च योजना - दानराशि

म.सा. सेवक पगार खर्च	: रुपये	**1,25,67,235 / -**
व्हील चेयर हेतु खर्च	: रुपये	**6,04,100 / -**
दवाई हेतु खर्च	: रुपये	**15,56,030 / -**
शिक्षा हेतु खर्च	: रुपये	**36,000 / -**
कुल	: रुपये	**1,47,63,365 / -**

ज्ञान प्रकाश योजना - दानराशि

कुल खर्च : रुपये 79,646 / -

दानदाताओं का सम्मान : जिनका प्रमुख योगदान रहा है उनमें भामाशाह श्रीमान् रमणलालजी लुंकड़ जैन, दानवीर श्रीमान् प्रकाशजी रसिकलालजी धारीवाल जैन, श्रीमान् सुनीलजी खेतपालिया, श्रीमान् अशोकजी रांका जैन, श्रीमान् रतनचंदजी सिंघवी जैन सहित सभी दानदाता श्रीमंतों का भावभीना सत्कार हुआ।

❖ लोंकाशाह सम्मान की स्थापना ।
❖ अमृत महोत्सव के अवसर पर राष्ट्र ध्वज फहराना ।
❖ ध्यान शिविर का आयोजन ।
❖ चातुर्मास का आयोजन ।
❖ भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव पर सामूहिक जाप ।
❖ साहित्य प्रकाशन, संयम साधना सहयोगी उपकरण एवं पुस्तकों का विक्रय आदि अनेक कार्य हुए ।
❖ जैन भवन की रजिस्ट्री के प्रामाणिक कागजात की प्राप्ति एवं रिकार्ड रूम की स्थापना ।

इस प्रकार विविध दिशा में जो-जो अनुष्ठान उपलब्धियाँ प्राप्त हुई उनका संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत है।

जैन भवन की आय में कई गुणा अभिवृद्धि भी महत्वपूर्ण बिन्दु है।

❖ हमें संतोष है कि जिस भावना से दायित्व संभाला था, जो स्वप्न देखा था उसे काफी हद तक साकार करने में सफलता प्राप्त हुई।

सतत् सेवा धर्म पालन में सज्ज होती जैन कॉन्फ्रेंस

जैन कॉन्फ्रेंस चतुर्विद संघ को समर्थ-सशक्त बनाने, संसाधन और संचालन का संतुलन बना कर चलाने का अभियान है। 118 वर्ष पुरानी यह संस्था इस प्रयास को करने वाली एकमात्र ऐसी संस्था है जो सकल संघ के सम्मान, स्वाभिमान को बनाये रखने का पुरुषार्थ कर रही है।

हमारे इस कार्यकाल में हम इस दिशा में गंभीर रूप से प्रयत्न कर रहे है कि संस्था के खाते में एक ऐसा विशाल फण्ड संग्रहित हो जिसके इंट्रेस्ट से प्रति वर्ष इतनी आय अवश्य हो कि जैन कॉन्फ्रेंस श्रमण संघ के पूज्य साधु-साध्वी जी महाराज साहब की संयम यात्रा को सुखद बना सके। ये कैसे संभव होगा इस पर हमारे विद्वान, प्रतिभावान, अर्थ तंत्र के ज्ञाता लगातार चिन्तन कर रहे हैं कि सुक्रत दान के सहयोग से हम जैन कॉन्फ्रेंस का संचालन करने में समर्थ बन पाये, वो भी मान्य कानून के अनुसार। अतः पहले ही जैन कॉन्फ्रेंस 80G सम्प्राप्त ऐसी संस्था है जो दानदाताओं के सहयोग को, उनके अर्थ प्रबंध में अड़चन न आये ऐसा प्रयास प्रबंध करती रही है। वर्तमान सत्र में तो हम CRS लाईसेन्स भी प्राप्त कर चुके है, जिसके अंतर्गत लगभग 100 करोड़ रुपये एकत्र करने का हमारा लक्ष्य है।

इस प्रकार एक वैध अर्थ संग्रह और इसके इंट्रेस्ट से प्रतिवर्ष 10 करोड़ रुपये प्राप्त करना हमारा लक्ष्य है ताकि 2025-2027 के आगामी कार्यकाल में पूज्य साधु-साध्वीजी के वैय्यावच्च में और अधिक व्यापक कार्य किया जा सके।

इस संग्रह से मान्य आय से हम क्या करेंगे ? : इस प्रश्न का उत्तर यह है कि हम चाहते है कि हमारे स्थानकवासी जैन धर्म परम्परा के प्रभावक-प्रसारक, ज्ञान-ध्यानी, संयमी पूज्य साधु-साध्वी जी म.सा. की शिक्षा, स्वास्थ्य, सेवकों के वेतन, व्हील चेयर, वैरागी बालक-बालिकाओं के समग्र उन्नयन में सहयोग कर सकें। इस कार्य में धन की कमीं न आ पाये। हमारे आराध्य आत्माओं को अभावग्रस्त होकर असंतोष और आत्म ग्लानी न हो। उनकी संयम यात्रा सुखद व साताकारी बनें,

लाचारी से मुक्त हो सके।

ऐसा करना क्यों आवश्यक है ? : क्योंकि हमारा यह संयमी वर्ग जब किसी समर्थ व्यक्ति से कुछ सहायता की अपेक्षा करता है तो वो कई बार अपनी श्रद्धा से विचलित होकर आलोचक, निन्दक भी बन जाता है, अपवादिक आरोप लगाने से भी नहीं चूकता। इससे न केवल श्रमण संघ के संबंध में वातावरण दूषित बनता है, वहीं समाज में हमारे संयमी आत्माओं को तिरस्कार भी झेलना पड़ता है। इस कटु सत्य को जैन कॉन्फ्रेंस के प्रबुद्धजन दयावान समाजसेवी गहराई से अनुभव कर चुके हैं। इसीलिए यह प्रयास करना आवश्यक हो गया है।

यदि यह प्रयास सफल हो जाता है तो जैन कॉन्फ्रेंस के इतिहास में यह बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। इसके साथ ही वैय्यावच्च योजना तो समर्थ बनेगी ही जीवन प्रकाश योजना, मानव सेवा योजना को भी संघ सहायक योजनाओं के रूप में विकसित किया जा सकेगा। क्योंकि हमारे समाज में सभी लोग समान रूप से समर्थ नहीं है। अनेक भाई-बहन बहुत ही अवसरहीन, अभावग्रस्त जीवन जी रहे हैं। उनके जीवन में जो मानवीय आनंद होना चाहिए वह नहीं है। इसीलिए हम यह भी चाहते हैं कि समाज के अति सामान्य व्यक्ति के जीवन में जैन कॉन्फ्रेंस अपने स्नेह स्पर्श से आशा दीप जलाने में समर्थ बनें।

हम जैन कॉन्फ्रेंस के मंच से एक आशावाद प्रवाहित करना चाहते हैं जो लाचार की लाचारी को दूर करके अभाव से मुक्त करके सहायता का संदेश दे सकें। हम एक व्यक्ति एक परिवार को मदद करते हैं तो चार अन्य भी आशावादी होते है, उनकी आस्था जैन धर्म के प्रति मजबूत होती है। हमें विश्वास है कि हम और हमारी टीम यह करने में अवश्य सफल होगी।

प्रथम बार जैन कॉन्फ्रेंस का WhatsApp Number एवं QR Code

एक समय एक नारा बड़ा लोकप्रिय हुआ था कि "दुनिया कर लो मुट्ठी में"। आज ये नारा नहीं रहा हकीकत बन गया है, व्हाट्सऐप, फेसबुक, इंटरनेट, मेल ने संसार भर को मुट्ठी में कर दिया है, लेन-देन हो या बातचीत, संवाद, विचार-परामर्श आज के सम-सामयिक संचार में महत्वपूर्ण भूमिका में आ गए हैं।

आज बदलती तकनीक के इस युग में जैन कॉन्फ्रेंस को तकनीकी तौर पर समय के साथ चलने के लिए बहुत से बदलावों की आवश्यकता थी और हमने इस कार्यकाल में इन बदलावों की शुरुआत की है। हमने जैन कॉन्फ्रेंस का व्हाट्सऐप नम्बर प्रारंभ किया है। जैन कॉन्फ्रेंस का व्हाट्सऐप नम्बर है 90197 31906, यह नम्बर जैन कॉन्फ्रेंस के प्रत्येक सदस्य के लिये हमेशा उपलब्ध रहेगा। जैन कॉन्फ्रेंस से आपको किसी भी प्रकार की सूचना प्राप्त करनी हो, किसी भी बात के लिये सम्पर्क करना हो, आप इस नम्बर पर व्हाट्सऐप भेजकर या कॉल द्वारा जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

इसके अतिरिक्त आपको इस नम्बर पर जैन कॉन्फ्रेंस की ई-मेल आई.डी., जैन कॉन्फ्रेंस कार्यालय की लोकेशन, पता, जैन कॉन्फ्रेंस का धार्मिक साहित्य एवं उपकरण जो हमारे पास उपलब्ध हैं। उसकी जानकारी भी इस नम्बर के द्वारा प्राप्त हो जायेगी।

पारदर्शी लेन-देन की पहल : जैन कॉन्फ्रेंस में इंटरनेट से पेमेंट का लेन-देन करने के लिए बहुत बदलाव किया है। पूर्व में जैन कॉन्फ्रेंस में Payment & RTGS और NEFT के माध्यम से तो स्वीकार की जाती थी, लेकिन अगर कोई Paytm या Google Pay से Payment करना चाहे तो उसको सुलभ बनाने के लिये, अब हमने QR Code ले लिया है। अब यदि किसी को कोई दान देना हो या जैन कॉन्फ्रेंस में किसी भी प्रकार की कोई Payment करनी हो, तो आप तुरंत इस QR Code का उपयोग करके, हमारे बैंक अकाउंट में पैसे जमा करा सकते हैं और साथ ही जो हमारा अधिकारिक व्हाट्सऐप नम्बर है उस पर अपनी Payment की सूचना अपना नाम, पता एवं पेन नम्बर भेज सकते हैं,

आपको Payment की रसीद मेल कर दी जायेगी।

हमारा निवेदन है कि आप सभी के साथ हम जैन कॉन्फ्रेंस का व्हाट्सऐस नम्बर (Whatsapp Number) की जानकारी साझा कर रहे हैं। आप अपने मोबाइल में इस नम्बर को सुरक्षित कर लें। साथ ही अपने नाम और आजीवन सदस्यता नम्बर (Life Membership Number) को जैन कॉन्फ्रेंस के इस नम्बर पर व्हाट्सऐप (WhatsApp) कर दें ताकि भविष्य में आप जैन कॉन्फ्रेंस के साथ लगातार सम्पर्क में रहें।

इंटरनेट के बढ़ते उपयोग को देखते हुये जैन कॉन्फ्रेंस ने QR Code के जरिये Payment / Donation स्वीकार करना शुरु कर दिया है। भविष्य में यदि आपको किसी भी प्रकार की Payment या दान राशि जैन कॉन्फ्रेंस को देनी है तो आप इस QR Code को बंद करके Paytm / Google Pay / Phone Pay / Bhim / UPI करके Payment कर सकते हैं। Payment होने के बाद आप उसका Screen Shot लेकर अपने नाम, पता एवं पेन नम्बर जैन कॉन्फ्रेंस के व्हाट्सऐप नम्बर पर भेज दें ताकि हम उसकी रसीद आपको भेज सकें।

श्रुत संवर्धन समिति का लक्ष्य

श्रुत संवर्धन समिति का लक्ष्य और और कार्य सतत् करने का भाव था कि जैन कॉन्फ्रेंस साहित्य प्रकाशन करें। प्राचीन पांडुलिपियाँ और साहित्य का संग्रह वितरा, प्रचार-प्रसार किया जाए। इस दिशा में काम प्रारंभ भी हुआ। जैन भवन कार्यालय में पुस्तकों और 32 आगमों सहित विविध साहित्य, चरित्र, काव्य अभिनंदन ग्रंथ स्मृति ग्रंथ, प्रवचन साहित्य आदि का संग्रह किया गया। विश्व पुस्तक मेले में प्रथम बार भागीदारी की गई। परिस्थिति विशेष से कार्य अपेक्षित लक्ष्य को नहीं पा सका, मगर एक किरण तो इस दिशा में चमकी ये संतोष जन्य अनुभव है। मनोनीत सदस्यगण :-

श्री रमेश जी भंडारी जैन, इन्दौर - चेयरमैन
श्री अमितराय जी जैन, बड़ौत - संयोजक
श्री दिनेश जी जैन, दिल्ली - सदस्य
श्री अतुल जी जैन, दिल्ली - सदस्य
श्री प्रशांत जी जैन, दिल्ली - सदस्य

नवंबर 2024 माह में सम्पन्न कार्यों की प्रगति रिपोर्ट ...

जैन कॉन्फ्रेंस की साधु-साध्वीवृन्द की सेवार्थ गठित राष्ट्रीय वैय्यावच्च योजना द्वारा समर्पण भावों के साथ जारी सेवा कार्यों का प्रेरणात्मक विवरण

बैंगलुरु (कर्नाटक) : जैन कॉन्फ्रेंस की अति महत्वपूर्ण वैय्यावच्च योजना द्वारा सेवा कार्यों को पूर्व की भांति नवंबर माह में सेवा प्रदान की है। हर प्रांत की वैय्यावच्च समितियों ने स्थानीय श्रीसंघ और उनके पदाधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर सम्पूर्ण देश में वैय्यावच्च गतिविधियों के माध्यम से पूज्य गुरु भगवंतों के लिए सेवा कार्यों को आगे बढ़ाया जा रहा है। वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, राष्ट्रीय योजना अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन के सामूहिक सद्प्रयासों से गुरु भगवंतों की वैय्यावच्च संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए नवंबर माह में विभिन्न सिंघाड़ों के सेवादारों को 1,74,000 रुपये की धनराशि मासिक वेतन के रूप में प्रदान की है। संत-सतीवृंद के स्वास्थ्य हेतु दवाइयों के रूप में 93,400 रुपये की धनराशि योजना के माध्यम से खर्च की है। इस प्रकार कुल 2,67,400 रुपये की धनराशि वैय्यावच्च गतिविधियों में नवंबर माह में सेवार्थ खर्च की गई। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री आनंदमलजी छल्लाणी जैन, वैय्यावच्च योजना के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री अशोकजी रांका जैन, योजना के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. रतनचंदजी सिंघवी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री मनोहरलालजी लोढ़ा जैन आदि की टीम की ओर से तहेदिल से आभार। ❖❖

समाचार प्रकाश

साधना में ध्यान सबसे महत्त्वपूर्ण

सूरत (गुजरात) : मनुष्य के शरीर में सबसे महत्त्वपूर्ण अंग उसका मस्तिष्क है। मस्तिष्क के बिना शरीर का कोई मूल्य नहीं है, क्योंकि मस्तिष्क से ही सारे शरीर का संचालन होता है, जिस तरह से वृक्ष में सबसे महत्त्वपूर्ण उसकी जड़े हैं। पत्ते काट देंगे, फल फूल तोड़ लोगे, डालियां तना काट दोगे वृक्ष को अधिक फर्क नहीं पड़ेगा, यदि जड़ को ही काट दिया तो वृक्ष का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। वृक्ष में जड़ महत्त्वपूर्ण उसी तरह साधना के जितने भी आयाम हैं उनमें ध्यान सबसे महत्त्वपूर्ण हैं। दुनिया के जितने भी श्रेयस्कर साधना है उनमें सबसे श्रेयस्कर मार्ग ध्यान हैं। ध्यान के माध्यम से ही व्यक्ति देहाध्यास से, जड़ता के व्यामोह से दूर हटकर, अपनी चेतना में लौटकर आता है। संसार के दलदल में रहकर भी उससे अलग रहता है।

भगवान् महावीर स्वामीजी की अन्तिम देशना श्रीमद् उत्तराध्ययन की आगम वाचना युवा मनीषी मधुर गायक श्री शुभम मुनिजी म.सा. ने अपनी मधुर मन मोहक आवाज में श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं के मध्य सात दिन में पूर्ण की।

23 अक्टूबर को बैंगलोर से श्रीरामपुरम संघ एवं अमरोली से चंदन बाला महिला मण्डल गुरु दर्शन हेतु उपस्थित हुआ। 27 अक्टूबर को इन्दौर से महावीर जी नाबेड़िया परिवार सहित गुरु दर्शन हेतु उपस्थित हुए। 28 अक्टूबर पूना से बालासाहब धोका अपने संघ के साथ गुरु दर्शन हेतु उपस्थित हुए। 29 आत्मज्ञानी सद्गुरुदेव आचार्य सम्राट डॉ. शिवमुनिजी म.सा. दिनांक 29 अक्टूबर से 1 नवम्बर तक चार दिवसीय मौन आत्म-ध्यान साधना में रहे। 2 को श्रमण संघीय सहमंत्री श्री शुभममुनिजी म.सा. ने भगवान महावीर की अंतिम वाणी 36वें अध्याय के साथ श्री उत्तराध्ययन की वांचना सम्पन्न की। सम्पूर्ण जगत के जीवों के कल्याण हेतु आचार्य भगवन चार दिवस मौन ध्यान तप-जप साधना में लीन थे। चार दिवसीय साधना के पश्चात् भवी जीवों के कल्याण के लिए मंगल पाठ प्रदान किया। 4 को युवाचार्यश्रीजी के सान्निध्य में अध्ययनरत मुमुक्षु श्री शिवम बाफना के दीक्षा प्रदान करने की स्वीकृति हेतु वडगांव मांवळ श्रीसंघ उपस्थित हुआ। मुमुक्षु के पिता श्री संदीपजी बाफना का श्रीसंघ के पदाधिकारियों एवं शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन ने सम्मान किया।

12 नवंबर को आचार्य भगवन के सान्निध्य में श्री ऑल इंडिया जैन कॉन्फ्रेंस महिला विभाग नई दिल्ली की प्रो. सुरेखा कटारिया एवं डॉ. श्वेता राठोड की 'प्रभावी प्रवचन कला साधना और आविष्कार' पुस्तक का विमोचन हुआ। 15 नवंबर को श्री नवकार महामंत्र के एक घण्टे के अखण्ड जाप के साथ चातुर्मासिक पूर्णाहुति हुई। चातुर्मासिक पूर्णाहुति पर अवध संगरीला के श्रावक-श्राविकाओं व शिवाचार्य आत्म-ध्यान फाउण्डेशन के पदाधिकारियों ने सफल चातुर्मासिक सम्पन्नता पर चारित्रात्माओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की एवं चातुर्मास प्रवास के दौरान प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सहयोग देने वालों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। 16 नवंबर चातुर्मास पूर्णता पर स्थान परिवर्तन हेतु आत्म भवन से प्रातः 8:15 बजे विहार कर श्री रमेश भाई रोहित कुमार बोकड़िया के निवास स्थान बंगला नं. 114-115 पधारे। जहां पर बोकड़िया परिवार द्वारा चारित्रात्माओं के पदार्पण पर कृतज्ञता ज्ञापित की। आचार्य भगवन् ने मंगल आशीर्वचन में फरमाया कि चार माह का चातुर्मास सम्पन्न हुआ। हमारी मर्यादा होती है चातुर्मास पूर्ण होने पर स्थान परिवर्तन करना। हमारी इस साधना में अवध संगरीला के श्रावक-श्राविकाओं की सेवा भावना सराहनीय हैं। भगवान महावीर की एकत्व की साधना थी, अरिहंतों की अनंत कृपा से हमें यह साधना प्राप्त हुई है।

17 नवम्बर को रतलाम से परम गुरुभक्त श्री महेन्द्र बोथरा, श्री इन्द्रमल पटवा गुरु दर्शन हेतु उपस्थित हुए एवं रतलाम में संचालित जैन दिवाकर विद्यालय, अस्पताल आदि गतिविधियों के बारे में विस्तृत चर्चा की। मध्याह्न में इन्दौर से सुश्रावक श्री रमेश भण्डारी, डॉ. राजीव चौधरी, वकील श्री मनोहरलाल दलाल, डॉ. विनीता कोठारी सपरिवार आदि विशिष्ट व्यक्ति

दर्शनार्थ उपस्थित हुए। 18 नवम्बर को आचार्य भगवन के दर्शनार्थ मुंबई से परम पूज्य महासाध्वी श्री प्रफुल्लाजी के चरणों में अध्ययनरत मुमुक्ष जिनेशा बाफना आचार्य भगवन् से दीक्षा की आज्ञा लेने हेतु उपस्थित हुई। जिनकी दीक्षा 24 मार्च 2025 को भायन्दर, मुंबई में निश्चित है। मेवाड़ संघ के सदस्य श्री हिम्मत कंठालिया आदि मुमुक्षु बहन को लेकर पधारे। उधना श्रीसंघ भी महासाध्वी श्री प्रफुल्लाजी म.सा. के चातुर्मास की विनती पत्र लेकर उपस्थित था। 19 नवम्बर को श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा कुछ दिन के लिए सूरत शहर में उपचार हेतु अवध संगरीला से विहार करके डिंडोली पधारे। आचार्य भगवन् आदि ठाणा श्री रमेश भाई, रोहित भाई बोकड़िया के निवास स्थान से विहार कर अवध संगरीला के समस्त श्रद्धालुओं के निवास स्थान पर पगलिया करते हुए पुनः आत्म भवन पधारे। शांति भवन, भटार रोड, वेसु, पुष्कर भवन, महावीर भवन, पाण्डेसरा आदि संघों के पदाधिकारियों ने आचार्य भगवन को अपने-अपने क्षेत्रों में परसरने की विनती की। 20 नवम्बर को राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं विश्व हिन्दू परिशद् मार्गदर्शक मण्डल के अध्यक्ष दिनेश जी एवं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रान्त संयोजक व एडवोकेट फॉरम के सेक्रेटरी हितेशजी जैन, प्रतापजी आदि आचार्य भगवन से दर्शन लाभ हेतु उपस्थित हुए। 21 नवम्बर को गोडादरा चातुर्मास सम्पन्न कर महासाध्वी श्री इन्दुप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा - 5 आचार्य भगवन् के दर्शनाथ पहुंचे। इस अवसर पर श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ गोडादरा के अध्यक्ष श्री शांतिलाल नाहर, गोडादरा युवक मण्डल, कन्या मण्डल आदि गुरु दर्शनार्थ उपस्थित हुए। आचार्य भगवन ने प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आत्मा के बिना शरीर का कोई अस्तित्व नहीं है। आत्मा है तो शरीर का महत्त्व है, उन्होंने आत्मा के आठ गुणों की चर्चा करते हुए फरमाया कि जीव को जीव में स्थित कर अपनी आत्मा के कल्याण के लिए जड़ और जीव का भेद करते हुए आत्मा का ध्यान करना चाहिए।

जैन धर्म के दो आचार्यों का आध्यात्मिक मिलन

"निर्ग्रंथ, सरल, ऋजु है वही साधु होता है - आचार्य सम्राट शिव मुनि जी"

"अहिंसा, संयम, तप की आराधना से ही मंगल की प्राप्ति - आचार्य श्री महाश्रमण जी"

सिटी लाईट, सूरत (गुजरात) : श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर आचार्य सम्राट अध्यात्म ज्योति डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. एवं ज्योतिपूंज तेरापंथ के आचार्य श्री महाश्रमणजी का आध्यात्मिक मिलन सिटी लाईट स्थित तेरापंथ भवन सूरत में हुआ। दोनों आचार्यों के इस मंगल मिलन के ऐतिहासिक दृश्य को निहारने के लिए जैसे पूरा सूरत शहर उमड़ पड़ा। आध्यात्मिक मंगल मिलन पर आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनिजी म.सा. ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि आचार्य महाश्रमणजी की सरलता, ऋजुता, आत्मीयता प्रेम व अंतःकरण की भावना हमें यहां खींच लाई इसलिए हम यहां आए और मिलन हुआ। हम एक वृक्ष की दो शाखा के समान हैं।

उन्होंने आगे फरमाया कि साधु कौन होता है? जो निर्ग्रंथ, सरल, ऋजु है वही साधु होता है। हम सभी धर्म से जुड़े हुए हैं। साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका ये चारों तीर्थ है जो तीर्थंकरों ने बनाया जो तिरने योग्य है, तारने योग्य है। चार गति चौरासी लाख जीव योनि में हम सभी अनेक बार भटके इससे पार जाने के लिए हमें वही मार्ग लेना है जो केवलियों ने तीर्थंकरों ने लिया। उन्होंने आगे फरमाया कि भगवान महावीर की साधना आत्मा की साधना है। जो जड़ जीव का भेद किये बिना संभव नहीं हो सकती। बारह प्रकार के तपों में सबसे बड़ा तप आत्मा से जुड़ना है। जैसे किसी व्यक्ति को नींद आती है वह कमरे की लाईट बंद करता, बिस्तर लगाता है वह एक सोने के लिए उपक्रम किया। सोना अलग है नींद की तैयारी अलग है इसी प्रकार जब ध्यान करते समय 'श्वास' 'सोऽह्म' का सहारा लिया जाता है जब सोऽह्म में डूबते हो तो जीव में स्थित हो जाते हो वह ध्यान है, नींद मूर्च्छा है, ध्यान जागरूकता है।

इससे पूर्व आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि हर व्यक्ति मंगल की प्राप्ति के लिए अनेक रूपों में प्रयास करता है। चातुर्मास की सम्पन्नता के बाद प्रस्थान भी मुहूर्त के आधार पर होता है। दीक्षा के बाद अनुशासन का

ओज आहार दिया जाता है ये सारे छोटे प्रयास हैं, किन्तु मंगल के लिए सबसे बड़ा प्रयास है धर्म की आराधना। धर्म ही उत्कृष्ट मंगल है। धर्म वह है जिसमें अहिंसा, संयम, तप है। व्यक्ति चाहे किसी जाति सम्प्रदाय का हो जो अहिंसा, संयम, तप की आराधना करता है वह मंगल को प्राप्त करता है। जिसका मन सदा धर्म में रमा रहता है उसे देव भी नमस्कार करते हैं।

आचार्य श्री महाश्रमण जी ने पूर्व संस्मरणों की चर्चा करते हुए फरमाया कि आचार्य श्री शिवमुनिजी म.सा. में मिलनसारिता है वात्सल्य भाव है। आचार्य श्री शिवमुनिजी से मिलने के लिए चातुर्मास के बीच में जाना संभव नहीं था। चातुर्मास संपन्नता पर आज हमारा मिलन हो रहा है। श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री श्री शिरीषमुनिजी म.सा. ने मिथ्यात्व और मोह को त्यागने की प्रेरणा प्रदान की। श्रमण संघीय सहमंत्री श्री शुभममुनिजी म.सा. ने "शिवाचार्य महाश्रमणाचार्य का मिलन सुधा बरसाएं नव इतिहास बनाएं" सुमधुर भजन की प्रस्तुति दी। मुख्य मुनि महावीर कुमार जी ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि आचार्य स्वयं तरते हैं और दूसरों को भी तारने वाले होते हैं। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमार श्रमणजी ने किया।

शोक समाचार

जैन समाज के प्रसिद्ध समाजसेवी एवं जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् मोहनलालजी लालचंदजी चोपड़ा जैन का संथारा सहित देवलोक गमन

नाशिक (महाराष्ट्र) : 23 नवम्बर 2024 की प्रातःकाल 7:00 बजे श्रमण संघीय उपाध्याय पूज्य श्री गौतममुनिजी म. सा. 'प्रथम' के मुखारविंद से प्रसिद्ध समाजसेवी, सहकारिता के क्षेत्र में जिनकी सेवाएं उल्लेखनीय रही वहीं जैन कॉन्फ्रेंस परिवार से भी उनका गहरा जुड़ा रहा, ऐसे श्रावक रत्न श्री मोहनलालजी लालचंदजी चोपड़ा जैन ने 91 वर्ष की अवस्था में 11 बजे सुबह अपना अंतिम श्वांस लिया। जैसे ही यह समाचार सारे देश के जैन समाज को प्राप्त हुआ सभी लोगों ने वयोवृद्ध समाजसेवी श्रीमान् मोहनलालजी चोपड़ा जैन की स्मृति में अनेक स्थानों पर मौन रहकर सामूहिक श्रद्धांजलियाँ प्रस्तुत की। अनेक पूज्य साधु-साध्वियों ने भी, समाजसेवियों ने भी चोपड़ा जी के निधन पर संवेदना व्यक्त करते हुए चोपड़ा परिवार को सांत्वनाएं प्रदान की। जैन कॉन्फ्रेंस के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् आनंदमलजी छल्लाणी जैन ने अपने शोक संदेश में चोपड़ा परिवार को ढ़ाढ़स बंध ााया। वहीं जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद प्रत्याशी, युवा दानवीर श्री अतुलजी जैन ने चोपड़ा निवास पर जाकर अपनी संवेदनाएं प्रत्यक्ष प्रस्तुत की एवं सभी लोगों को उनके गुण और योगदान को प्रस्तुत करते हुए उनके उपकारों की प्रशंसा की।

स्मरण रहे परम गुरु भक्त श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन ने जीवन भर पूज्य साधु-संतों की सेवा में रहते हुए अनेक ऐसे कार्य किये है, जो उनके स्मरण और योगदान को कभी भी भुला नहीं सकेंगे।

जैन कॉन्फ्रेंस परिवार अपने अभिन्न साथी के समकक्ष समाजसेवी के देवलोक पर संवेदना, श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हुए संपूर्ण चोपड़ा परिवार के प्रति अपनी आत्मीय संवेदना व्यक्त करता है। साथ ही जिनशासन देव से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को यथा स्थान उच्च गति प्रदान करें।

विनम्र निवेदन

समाज हितैषी जन भ्रमित न हों! अपना विश्वास बनाए रखें!

सम्माननीय समाज हितैषी महानुभावों और मेरी सम्माननीया मातृशक्ति

सादर जय जिनेन्द्र!

आप सबके आशीर्वाद से मुझे जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर मनोनीत करते हुए सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ है। लेकिन कतिपय विघ्न संतोषियों को मेरा चयन पसन्द नहीं आ रहा है। वे लोग अपने स्वभाव अनुसार उन्हीं गतिविधियों को जारी रखे हुए हैं, जो समाज की एकता और समन्वय को तोड़ने का कुचक्र रचती है।

मुझे विश्वस्त सूत्रों से यह सूचना प्राप्त हुई है कि अभी भी लोग गुमनाम चिट्ठियों के द्वारा असत्य और तथ्यहीन बातों का प्रचार-प्रसार करने में लगे हुए हैं। वे नहीं चाहते कि समाज में आत्मीयता का वातावरण बना रहे। समाज की एकता मजबूत रहे! ऐसे लोग जो झूठ बोलने और जन-विश्वास को तोड़ने का काम कर रहे हैं, मैं उन्हें स्पष्ट कर दूँ कि उनकी हर झूठी बात का मुंहतोड़ उत्तर दिया जाएगा! कानूनी कार्यवाही हो या वे जिस भाषा में समझते हैं, उस भाषा में उत्तर दिया जाएगा। मेरी शानीलता को कोई भी ऐसा व्यक्ति जो भी विभ्रम फैलाना चाहता है, मेरी कमजोरी न समझे। मेरे धैर्य की परीक्षा ना लें।

क्योंकि जिस किसी को भी अपनी बात कहनी है वो खुलकर कहे, अपने नाम से कहे। तभी उस पर चर्चा की जा सकती है। वरना इस प्रकार गुमनाम ढ़ंग से दुष्प्रचार किए जाने का कोई अर्थ नहीं है।

इसी निवेदन के साथ मैं यह अपील भी करना चाहूंगा कि समाज हितैषी जन भ्रमित न हों! अपना विश्वास और स्नेह मुझ पर सदैव बनाए रखें।

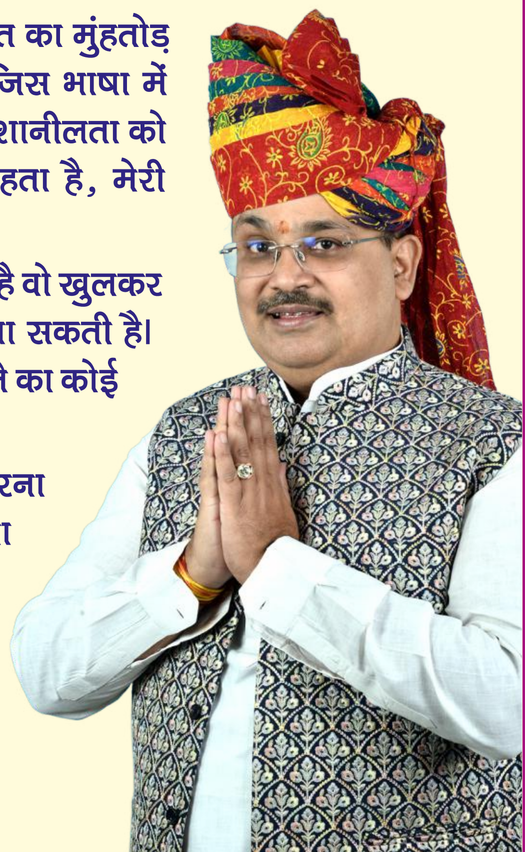

आपका अपना

अतुल जैन

मनोनीत राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

Advt.

मैं, आपका प्रिय!

अतुल जैन!

जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर

सर्वसम्मति से चयन

किए जाने पर जैन कॉन्फ्रेंस से जुड़े
समस्त वरिष्ठ समाजसेवियों
स्नेही सहयोगियों, मित्रों,
प्रशंसकों का एवं
मेरी ममतामयी मातृशक्ति
का
हृदय से आभार
मानकर सदैव इसी प्रकार
आपका स्नेह समर्थन
चाहता हूँ।

सादर धन्यवाद!

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12 शहीद भगत सिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

आनंदमल छल्लाणी जैन	अशोक मेहता जैन	अतुल जैन	पदमचंद कांकरिया जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

Advt.

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक अतुल जैन द्वारा
जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526 वेस्ट रोहताश नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12 शहीद भगत सिंह मार्ग नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित